Class:	**M.A.**	**Subject:**	**Music (Vocal/Instrumental)**
Semester:	**1**	**Course:**	**III**
Course Type:	**Core Course**	**Course Code:**	**MUSI-103-PR**
Course Name:	**Stage Performance**	**Paper Type:**	**Practical**

MUSIC
(Stage Performance)

Lesson : 1 - 16

Dr. Mritunjay Sharma

Centre for Distance & Online Education (CDOE)
Himachal Pradesh University
Gyan Path, Summer Hill, Shimla-171005

विषय सूची

क्रम		विषय	पृ. सं.
1		विषय सूची	ii
2		प्राक्कथन	iii
3		पाठ्यक्रम	iv
4	इकाई 1	राग पूरिया कल्याण का बड़ा ख्याल (गायन के संदर्भ में)	1
5	इकाई 2	राग पूरिया कल्याण का छोटा ख्याल (गायन के संदर्भ में)	15
6	इकाई 3	राग पूरिया कल्याण की विलंबित गत (वादन के संदर्भ में)	27
7	इकाई 4	राग पूरिया कल्याण की द्रुत गत (वादन के संदर्भ में)	39
8	इकाई 5	राग अहीर भैरव का बड़ा ख्याल (गायन के संदर्भ में)	51
9	इकाई 6	राग अहीर भैरव का छोटा ख्याल (गायन के संदर्भ में)	63
10	इकाई 7	राग अहीर भैरव की विलंबित गत (वादन के संदर्भ में)	74
11	इकाई 8	राग अहीर भैरव की द्रुत गत (वादन के संदर्भ में)	84
12	इकाई 9	राग भीमपलासी की विलंबित गत (वादन के संदर्भ में)	94
13	इकाई 10	राग भीमपलासी की द्रुत गत (वादन के संदर्भ में)	107
14	इकाई 11	राग भीमपलासी का बड़ा ख्याल (गायन के संदर्भ में)	121
15	इकाई 12	राग भीमपलासी का छोटा ख्याल (गायन के संदर्भ में)	136
16	इकाई 13	लोक गीत 'शिव कैलासो के वासी'	151
17	इकाई 14	हिमाचली लोक गीत पर आधारित लोक धुन, 'शिव कैलाशों के वासी'	159
18	इकाई 15	हिमाचली लोक गीत प्यारी भोटलिए' व 'कपडेयां धोंआ'	169
19	इकाई 16	हिमाचली लोक गीतों पर आधारित लोक धुनें, 'कुंजु' तथा 'भोटलिए'	183
20		महत्वपूर्ण प्रश्न - कार्यभार	196

प्राक्कथन

संगीत स्नात्कोत्तर के नवीन पाठ्यक्रम में संगीत से सम्बन्धित उपयोगी सामग्री का समावेश किया गया है। संगीत में प्रायोगिक तथा सैद्धान्तिक दोनों पक्षों का योगदान रहता है। गायन तथा वादन में भी इन्हीं दोनों पक्षों का महत्वपूर्ण स्थान रहता है। संगीत में क्रियात्मक पक्ष के अंतर्गत मंच प्रदर्शन का भी महत्वपूर्ण स्थान रहता है। प्रस्तुत पाठ्यक्रम में संगीत की मंच प्रदर्शन परीक्षा को ध्यान में रखकर पाठ्य सामग्री दी गई है। इस पुस्तक के

इकाई 1 में गायन के संदर्भ में राग पूरिया कल्याण का परिचय, आलाप, बड़ा ख्याल, तानें आदि का वर्णन किया गया है।
इकाई 2 में गायन के संदर्भ में राग पूरिया कल्याण का परिचय, आलाप, छोटा ख्याल, तानों का वर्णन किया गया है।
इकाई 3 में वादन संदर्भ में राग पूरिया कल्याण का परिचय, आलाप, विलंबित गत, तोड़े आदि का वर्णन किया गया है।
इकाई 4 में वादन संदर्भ में राग पूरिया कल्याण का परिचय, आलाप, द्रुत गत, तोड़े आदि का वर्णन किया गया है।
इकाई 5 में गायन के संदर्भ में राग अहीर भैरव का परिचय, आलाप, बड़ा ख्याल, तानें आदि का वर्णन किया गया है।
इकाई 6 में गायन के संदर्भ में राग अहीर भैरव का परिचय, आलाप, छोटा ख्याल, तानें आदि का वर्णन किया गया है।
इकाई 7 में वादन के संदर्भ में राग अहीर भैरव का परिचय, आलाप, विलंबित गत, तोड़े आदि का वर्णन किया गया है।
इकाई 8 में वादन के संदर्भ में राग अहीर भैरव का परिचय, आलाप, द्रुत गत, तोड़े आदि का वर्णन किया गया है।
इकाई 9 में वादन के संदर्भ में राग भीमपलासी का परिचय, आलाप, विलंबित गत, तोड़े आदि का वर्णन किया गया है।
इकाई 10 में वादन के संदर्भ में राग भीमपलासी का परिचय, आलाप, द्रुत गत, तोड़े आदि का वर्णन किया गया है।
इकाई 11 में गायन के संदर्भ में राग भीमपलासी का परिचय, आलाप, बड़ा ख्याल, तानें आदि का वर्णन किया गया है।
इकाई 12 में गायन के संदर्भ में राग भीमपलासी का परिचय, आलाप, छोटा ख्याल, तानें आदि का वर्णन किया गया है।
इकाई 13 में लोक गीत 'शिव कैलासो के वासी' का वर्णन किया गया है।
इकाई 14 में हिमाचली लोक गीत पर आधारित लोक धुन का वर्णन किया गया है।
इकाई 15 में लोक गीत प्यारी भोटलिए' व 'कपडेयां धोंआ' का वर्णन किया गया है।
इकाई 16 में हिमाचली लोक गीतों पर आधारित लोक धुनों का वर्णन किया गया है।

प्रत्येक इकाई में शब्दावली, महत्वपूर्ण प्रश्न, स्वयं जांच अभ्यास, संदर्भ, अनुशंसित पठन आदि दी गई है। अंत में कार्यभार (असाइनमेंन्ट) दिया गया है।

प्रस्तुत पाठ्यक्रम को लिखने के लिए स्वयं के अनुभव से तथा संगीत से सम्बन्धित पुस्तकों द्वारा शिक्षण सामग्री एकत्रित की गई है। मैं उन सभी लेखकों का आभारी हूॅ जिनकी संगीत संबंधी पुस्तकों द्वारा शिक्षण सामग्री को यहां दिया गया है। आशा है कि विद्यार्थियों के लिए यह पुस्तक लाभप्रद होगी।

डॉ. मृत्युंजय शर्मा

Syllabus

M.A. in Performing Arts (Music)
(Hindustani Vocal/Instrumental)

SEMESTER 1

Course Code	Course Type	Course Name	Paper Type	Max. Marks	ESE	CCA	Min. Pass %age ESE+CCA	Credit
MUSI-103PR	Core Course	Stage Performance	Practical	150	100	50	40+20	6

Course Objective

- To learn to perform different compositions in prescribed ragas, gaining an invaluable stage experience.
- To learn to perform different compositions in Folk Song/Dhun, gaining an invaluable stage experience.

Course Outcome

- The students will learn various prescribed ragas practically.
- The students learn to perform and present ragas on stage, in proper format before the audience.
- The students learn to perform and present Folk Song/Dhun on stage before the audience.

Course of Study

1. Stage Performance 80 Marks

(a) For Vocal

Student has to prepare one Vilambit & Drut Khyal, in any one Raga of his/her choice, out of the Ragas given below, with proper elaboration & all technicalities of Vocal music, and perform it (for not less than 30 minutes) before the panel of examiners.

(b) For Instrumental

Student has to prepare one Vilambit & Drut Gat, in any one Raga of his/her choice, out of the Ragas given below, with proper elaboration & all technicalities of Instrumental music, and perform it (for not less than 30 minutes) before the panel of examiners.

- Puriya Kalyan
- Ahir Bhairav
- Bhimplasi

2. Student is required to perform one Folk Song/Dhun during Stage Performance. 20 Marks

इकाई-1
राग पूरिया कल्याण - बड़ा ख्याल

इकाई की रूपरेखा

1.1 भूमिका

1.2 उद्देश्य तथा परिणाम

1.3 पूरिया कल्याण राग का परिचय, आलाप, बड़ा ख्याल, तानें

1.3.1 पूरिया कल्याण राग का परिचय

1.3.2 पूरिया कल्याण राग का आलाप

1.3.3 पूरिया कल्याण राग का बड़ा ख्याल

1.3.4 पूरिया कल्याण राग की तानें

स्वयं जांच अभ्यास 1

1.4 सारांश

1.5 शब्दावली

1.6 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

1.7 संदर्भ

1.8 अनुशंसित पठन

1.9 पाठगत प्रश्न

1.1 भूमिका

संगीत (गायन तथा वादन) स्नात्कोत्तर के क्रियात्मक पाठ्यक्रम की इस इकाई में गायन संगीत के संदर्भ में, राग पूरिया कल्याण का परिचय, आलाप, बड़ा ख्याल तथा तानों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति के माध्यम से विस्तार पूर्वक प्रस्तुत किया गया है। उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में रागों का प्रस्तुतिकरण विशेष रूप से होता है, जो सुनने में मधुरता से युक्त, कर्णप्रिय, वैचित्रतापूर्ण तथा आनंददायक होता है। आज के समय में शास्त्रीय संगीत के कलाकार रागों को अपने मंच प्रदर्शन के समय प्रस्तुत करते हैं। प्रस्तुत राग का, शास्त्रीय संगीत के अतिरिक्त, सुगम संगीत व फिल्मी संगीत में भी प्रयुक्त होता है, जिसके आधार पर कई मधुर गीतों, भजनों, गजलों इत्यादि का निर्माण हुआ है तथा हो रहा है। इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी राग पूरिया कल्याण के स्वरूप के साथ-साथ उसके आलाप, बड़ा ख्याल तथा तानों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति में लिख सकने का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे। साथ ही क्रियात्मक रूप से राग पूरिया कल्याण का आलाप, बड़ा ख्याल तथा तानों को गा सकेंगे।

1.2 उद्देश्य तथा परिणाम

सीखने के उद्देश्य

- पूरिया कल्याण राग के स्वरूप की संक्षिप्त जानकारी प्रदान करना।
- पूरिया कल्याण राग के आलाप, बड़ा ख्याल तथा तानों को भातखंडे स्वरलिपि में लिखने की क्षमता विकसित करना।
- पूरिया कल्याण राग के आलाप, बड़ा ख्याल तथा तानों को गाने की क्षमता विकसित करना।
- विद्यार्थी को गायन के दौरान सुधार करने का प्रयास करने के लिए प्रोत्साहित करना।

सीखने के परिणाम

- विद्यार्थी गायन के तकनीकी पहलुओं से अच्छी तरह परिचित हो जाएगा
- पूरिया कल्याण राग का परिचय, आलाप, बड़ा ख्याल, तानों को लिखने की निपुणता प्राप्त करने में सक्षम होंगे।

- पूरिया कल्याण राग के आलाप, बड़ा ख्याल, तानों को गाने में सक्षम होंगे।
- राग पूरिया कल्याण के विभिन्न रचनात्मक पहलुओं को क्रियात्मक रूप से प्रदर्शित करने की क्षमता विकसित होगी और अनुभव भी प्राप्त होगा।

1.3 पूरिया कल्याण राग का परिचय, आलाप, बड़ा ख्याल, तानें

1.3.1 पूरिया कल्याण राग का परिचय

राग - पूरिया कल्याण

थाट – मारवा

जाति - संपूर्ण

वादी - गांधार

संवादी - निषाद

स्वर - रिषभ कोमल, मध्यम तीव्र तथा अन्य स्वर शुद्ध

न्यास के स्वर – गांधार, पंचम, निषाद

समय - सांयकाल

समप्रकृतिक राग – पूरिया धनाश्री

आरोह:- ऩी सा, ऩी रे॒ ग म॑ प, म॑ ध नी रें॒ सां।

अवरोह:- सां नी ध प, म॑ ग, रे॒ सा।

पकड़:- ऩी रे॒ ग म॑ प, म॑ ग, रे॒ म॑ ग, रे॒ ऩी रे॒ सा

मधुर व लोकप्रिय, पूरिया कल्याण राग का थाट मारवा है। इस राग की जाति संपूर्ण है। पूरिया कल्याण राग का वादी स्वर गांधार तथा संवादी स्वर निषाद है। प्रस्तुत राग में कोमल रिषभ तथा तीव्र मध्यम का प्रयोग होता है व अन्य स्वर शुद्ध हैं। इस राग का गायन समय सायंकाल माना जाता है। इस राग को मंद्र सप्तक के निषाद से आरम्भ किया जाता है। (ऩी रे॒ ग मॅ प)। इस राग में गांधार, पंचम, निषाद पर न्यास किया जाता है। यह राग पूरिया तथा कल्याण रागों का मिश्रण है। इसमें रे॒ मॅ ग स्वरों की संगति विशेष है। आरोह में धैवत का लंघन किया जाता है (ऩी रे॒ ग मॅ प, मॅ ध नी रें सां)। इस राग में रिषभ स्वर का अल्प प्रयोग होता है (ऩी रे॒ ग मॅ प, मॅ ग, रेसा)। मंद्र तथा मध्य सप्तक में इस राग को गाने में अधिक सौंदर्य बोध होता है। इसका समप्रकृतिक राग पूरिया धनाश्री है।

1.3.2 आलाप

- सा, ऩी सा, ऩी रे॒ सा, ऩी सा ऩी ऩी रे॒ सा, ऩी ध़ ऩी ऩी सा।
- सा़ ऩी ध़ प़, ऩी ध़ ऩी ऩी सा, ऩी रे॒ सा, रे॒ ऩी ध़ प़, मॅ़ ध़ प़,

  मॅ़ ध़ ऩी रे॒ सा सा।
- ऩी रे॒ ग, रे॒ ग, रे॒ सा ऩी रे॒ सा, मॅ़ ध़ ऩी रे॒ ग, रे॒ ग, रे॒ सा
- ऩी रे॒, ग मॅ मॅ प, प, मॅ ग, रे॒ मॅ ग, मॅ ग रे॒ सा
- ग मॅ प, प, मॅ ध प, प, मॅ ध नी नी ध प, प,

  मॅ ध नी नी रें॒ सां, सां
- नी रें॒ गं, रें॒ गं, रें॒ सां नी रें॒ सां, नी रें॒, गं मॅं मॅं पं,

  पं, मॅं गं, रें॒ मॅं गं, मॅं गं रें॒ सां
- रें॒ नी ध प, प, मॅ ध प मॅ ग, रे॒ मॅ ग रे॒ ऩी रे॒ सा

1.3.3 पूरिया कल्याण का बड़ा ख्याल

विलम्बित लय   एक ताल

स्थायी

आज सुबना बन आया री लाड लडावन दे री माई।

4								
				12				
				प	पर्मधर्मपर्म	-ग	ग	
				आ	ऽऽ ऽऽ	ज	सु	
x								
1				2				
रे॒	-	-	-	ग	-	-	-	
ब	ऽ	ऽ	ऽ	ना	ऽ	ऽ	ऽ	
0								
3				4				
र्म	ग	रे॒	सा	ऩी	रे॒ग	ग	गर्मप	
ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ब	न	ऽ	आ	
2								
5				6				
प	-	-	(प)	र्म	ग	र्मग	रे॒सा	
या	ऽ	ऽ	ऽ	री	ऽ	ऽ	ऽ	
0								
7				8				
ऩीध़	ऩीरे॒	ऩी	र्म	ग	ग	(र्म)	(ध)	
ऽऽ	ऽऽ	ला	ऽ	ड	लडा	ऽ	ऽ	

3

9					10		
(नी)	-	रे॒	नीध	नी	धप	प	पम॑धप
ऽ	ऽ	ऽ	वन	दे	ऽ	ऽ	रीऽऽऽ

0

11			
म॑	ग	रे॒	सा
मा	ऽ	ऽ	ई

अन्तरा

हे वन री के सर सेरा

मोतियन बांधे डोर

4

12			
प	म॑धपम॑	गम॑	म॑ध
हे	ऽऽ ऽऽ	ब	न

x

1				2			
म॑धनीसां	-	-	नीधनीरें॒	सां	-	-	-
री	ऽ	ऽ	ऽ	के	ऽ	ऽ	ऽ

0

3				4			
नीरें	गरें॒	म॑गं	रें॒	सां	ऽ	सां	ऽ
सा	ऽ	ऽ	ऽ	र	ऽ	ऽ	ऽ

2							
5				6			
नीध	नीध	नी	ध	पम॑	धप	म॑म॑	प
से	ऽ	ऽ	ऽ	र	ऽ	ऽ	ऽ
0							
7				8			
ऩी	रे॒	गम॑	-	ग	-	-	-
मो	ति	य	ऽ	न	ऽ	ऽ	ऽ
3							
9				10			
म॑ध	नी	सां	नी	नी	(नी)ध	प	-
बां	ऽ	धे	ऽ	डो	ऽ	र	ऽ
0							
11							
म॑	ग	रे॒	सा				
ऽ	ऽ	ऽ	ऽ				

1.3.4 पूरिया कल्याण राग की तानें

- ऩीरेगमं पमंगरे गगरेसा ऩीरेगमं पमं गरेसाऽ
- ऩीरेगमं धनीनीध पमंगरे गगरेसा गगरेसा ऩीसाऽऽ
- ऩीरेगग रेसा,ऩीरे गगरेग गरेगग रेसारेग रेसाऩीसा
- ऩीरे गमं पमंगरे गमंपमं गरेगरे गगरेसा ऩीसाऩीऽ
- ऩीरे रेग रेगगमं गमंमंप पमंगरे गगरेसा ऩीसाऩीऽ
- नी रे ऽ रे ग ऽ ग मं ऽ मं ध ऽ ध नी ऽ नी
  सां ऽ नी ध ऽ ध मं ऽ ग रे सा ऽ ऽ प ऽ प
  ग ऽ ऽ ऽ ऽ प ऽ प ग ऽ ऽ ऽ
- नीनीधप मंपधप मंपगमं गरेसाऽ
  गमंपग मंपगमं
- मंधनीध रेंसांनीसां गंगंरेंसां रेंसांनीसां
- मंधधनी धनीनीसां रेंसांनीसां नीधनीसां
- गगरेसा ऩीसारेसा ऩीऩीध़प़ म़ंप़ध़प़

म़॑ध़ऩीरे॒	सासाऩीसा	नीरे॒गम॑	पम॑गम॑
गम॑धनी	सांनीधप	म॑धनीरें	गरेंसांसां
नीरेंसांनी	धपम॑प	म॑धपम॑	गरे॒सासा
ऩीरे॒गम॑	पम॑गरे॒	साऽपम॑	गरे॒साऽ
पम॑गरे॒	साऽऩीरे॒	गम॑पम॑	गरे॒साऽ
पम॑गरे॒	साऽपम॑	गरे॒साऽ	ऩीरे॒गम॑
पम॑गरे॒	साऽपम॑	गरे॒साऽ	पम॑गरे॒

• म़म़म़॑,ध़	ध़ध़,ऩीऩी,	ध़ध़ध़,ऩी	ऩीऩी,सासा,
ऩीऩीऩी,सा	सासा,रे॒रे॒,	सासासा,रे॒	रे॒रे॒,गग,
रे॒रे॒रे॒,ग	गग,म॑म॑,	गगग,म॑	म॑म॑,पप,
म॑म॑म॑,प	पप,धध,	म॑म॑म॑,ध	धध,नीनी,
धधध,नी	नीनी,सांसां,	नीनीनी,सां	सांसा,रेंरें,
सांसांसां,नी	नीनी,धध	ध,पपप,	म॑म,म॑ग
गग,रे॒रे॒	रे॒,सासासा,	ऩीरे॒गम॑	पऽऽऽ
ऽऽऩीरे॒	गम॑पऽ	ऽऽऽऽ	ऩीरे॒गम॑

• सा ऩिऩि ध़ध़ प़प़	म़॑ध़ध़ ऩि सा	ऩि रे॒रे॒ गग म॑म॑	गऽ गरे॒ ऽरे॒ साऽ
ऩि रे॒रे॒ ग म॑	रे॒ गग म॑ ध	प म॑म॑ गग म॑म॑	गऽ गरे॒ ऽरे॒ साऽ
ऩि रे॒ सा ऽ	ऩि रे॒ सा ऽ	ऩि रे॒ सा ऽ	

• ऩी रे॒रे॒ ग म॑	रे॒ गग म॑ ध	ग म॑म॑ ध नी	म॑ धध नी सां
ध नीनी रें सां	नीऽ नीध ऽध पऽ	म॑ धध पप म॑म॑	गऽ गरे॒ ऽरे॒ साऽ
ग म॑म॑ ग रे॒	सा ऽ ऽ ऽ	ग म॑म॑ ग रे॒	सा ऽ ऽ ऽ

ग मंमं ग रे

- गगरेसाऩीसारेसा | ऩीऩीध़प़मं़प़ध़प़ | मं़ध़ऩीरेसासाऩीसा
  नीरेगमंपमंगमं | गमंधनीसांनीधप | मंधनींरेंगंरेंसांसां
  नीरेंसांनीधपमंप | मंधपमंगरेसासा | ऩीरेगमंपमंगरे
  साऽपमंगरेसाऽ | पमंगरेसाऽऩीरे | गमंपमंगरेसाऽ
  पमंगरेसाऽपमं | गरेसाऽऩीरेगमं | पमंगरेसाऽपमं
  गरेसाऽ पमंगरे

- ऽसाऩीसा | ऽरेसारे | ऽगरेग | ऽमंगमं
  ऽपमंप | ऽधपध | ऽपमंग | ऽमंगरे
  ऽगरेसा | ऽगरेसा | ऽगरेसा

- पमंगरे | साऽऽऽ | पमंगरे | साऽऽऽ
  पमंगरे

- पमंगरे | साऽपमं | गरेसाऽ | पमंगरे
  पमंगरे | साऽपमं | गरेसाऽ | पमंगरे

स्वयं जांच अभ्यास 1

1.1 राग पूरिया कल्याण का संवादी स्वर कौन सा है?

(क) मं

(ख) नी

(ग) ग

(घ) सा

1.2 राग पूरिया कल्याण का वादी स्वर कौन सा है?

(क) म॑

(ख) प

(ग) ग

(घ) सा

1.3 राग पूरिया कल्याण को अधिकतर किस स्वर से आरम्भ किया जाता है?

(क) म॑

(ख) प़

(ग) सा

(घ) ऩी

1.4 राग पूरिया कल्याण की मुख्य स्वरसंगति कौन सी है?

(क) म॑गम॑

(ख) रे॒म॑ग

(ग) म॑धग

(घ) साऩीसा

1.5 राग पूरिया कल्याण का समप्रकृतिक राग कौन सा है?

(क) भीमपलासी

(ख) पूरिया धनश्री

(ग) सोहनी

(घ) हंसध्वनि

1.6 राग पूरिया कल्याण किन रागों का मिश्रण है?

(क) पूरिया तथा यमन

(ख) पूरिया तथा धनश्री

(ग) सोहनी तथा पूरिया

(घ) पूरिया तथा मारवा

1.4 सारांश

पूरिया कल्याण राग भारतीय शास्त्रीय संगीत का प्रचलित राग है। शास्त्रीय संगीत गायन के अंतर्गत इस राग को गाया जाता है। पूरिया कल्याण राग का थाट मारवा है। इस राग की जाति संपूर्ण है तथा वादी स्वर गांधार, संवादी स्वर निषाद है। राग में कोमल रिषभ तथा तीव्र मध्यम का प्रयोग होता है व अन्य स्वर शुद्ध हैं। यह राग पूरिया तथा कल्याण रागों का मिश्रण है। इसमें रे॒ म॑ ग स्वरों की संगति विशेष है। इसका समप्रकृतिक राग पूरिया धनाश्री है। विभिन्न प्रकार की तानों को इसमें लयकारियों के साथ गाया जाता है।

1.5 शब्दावली

बड़ा ख्याल: उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में गायन के अंतर्गत विलंबित लय में गाई जाने वाली गायन शैली।

आलाप: उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में गायन के अंतर्गत सर्वप्रथम अनीबद्ध रुप में राग के स्वरों का गायन।

- विलंबित ख्याल/बड़ा ख्याल: गायन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, ऐसी गीत रचना, जो स्वरबद्ध, तालबद्ध व लयबद्ध हो तथा विलंबित लय में गाई जाती हो उसे बड़ा ख्याल कहते हैं।

- तान: साधारण रूप से राग के स्वरों का विस्तार जब विभिन्न प्रकार की लयों तथा लयकारियों में बांधकर, गाया जाता है तो उसे तान कहते हैं।

- आलाप: वादन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, अनिबद्ध (ताल रहित) रूप सें राग के स्वरों का विस्तार धीमी लय में करना, आलाप कहलाता है।

- विलंबित लय: वादन/गायन के अंतर्गत जब लय बहुत धीमी गति मे चलती है तो उसे विलंबित लय कहते हैं।

- लय: गायन/वादन में बीत रहे समय की समान गति को 'लय' कहा जाता है।

1.6 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

स्वयं जांच अभ्यास 1

1.1 (ख)

1.2 (ग)

1.3 (घ)

1.4 (ख)

1.5 (ख)

1.6 (क)

1.7 संदर्भ

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2015). राग परिचय (भाग 1-4), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

भातखंडे, विष्णुनारायण. (1970). कर्मिक पुस्तक मलिका. खंड 1-6, संगीत कार्यालय हाथरस

मिश्र, शंकर लाल (1998).नवीन ख्याल रचनावली, अभिषेक पब्लिकेशन, चंडीगढ

मृत्युंजय, डॉ. शर्मा. (2000). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

1.8 अनुशंसित पठन

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2015). राग परिचय (भाग 1-4), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (1998). मधुर स्वरलिपि संग्रह. संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

अत्रे, डॉ. प्रभा. (2007). स्वरंजनी रात्रिकालीन रागों की बंदिशों का संकलन, बी. आर. रिदम्स, दिल्ली।

मिश्र, शंकर लाल (1998).नवीन ख्याल रचनावली, अभिषेक पब्लिकेशन, चंडीगढ

झा, पं. रामाश्रय. (2040). अभिनव गीतांजलि (भाग 1-5), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

1.9 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. राग पूरिया कल्याण का परिचय लिखिए।

प्रश्न 2. राग पूरिया कल्याण के आलाप को लिखिए।

प्रश्न 3. राग पूरिया कल्याण में विलम्बित ख्याल को तानों सहित लिखिए।

प्रश्न 4 राग पूरिया कल्याण के आलाप को गा कर सुनाइए।

प्रश्न 5. राग पूरिया कल्याण के विलम्बित ख्याल को तानों सहित गा कर सुनाइए।

इकाई-2
राग पूरिया कल्याण - छोटा ख्याल

इकाई की रूपरेखा

2.1 भूमिका

2.2 उद्देश्य तथा परिणाम

2.3 पूरिया कल्याण राग का परिचय, आलाप, छोटा ख्याल, तानें

2.3.1 पूरिया कल्याण राग का परिचय

2.3.2 पूरिया कल्याण राग का आलाप

2.3.3 पूरिया कल्याण राग का छोटा ख्याल

2.3.4 पूरिया कल्याण राग की तानें

स्वयं जांच अभ्यास 1

2.4 सारांश

2.5 शब्दावली

2.6 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

2.7 संदर्भ

2.8 अनुशंसित पठन

2.9 पाठगत प्रश्न

2.1 भूमिका

संगीत (गायन तथा वादन) स्नातकोत्तर के क्रियात्मक पाठ्यक्रम की इस इकाई में गायन संगीत के संदर्भ में, राग पूरिया कल्याण का परिचय, आलाप, छोटा ख्याल तथा तानों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति के माध्यम से विस्तार पूर्वक प्रस्तुत किया गया है। उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में रागों का प्रस्तुतिकरण विशेष रूप से होता है, जो सुनने में मधुरता से युक्त, कर्णप्रिय, वैचित्रतापूर्ण तथा आनंददायक होता है। आज के समय में शास्त्रीय संगीत के कलाकार रागों को अपने मंच प्रदर्शन के समय प्रस्तुत करते हैं। प्रस्तुत राग का, शास्त्रीय संगीत के अतिरिक्त, सुगम संगीत व फिल्मी संगीत में भी प्रयुक्त होता है, जिसके आधार पर कई मधुर गीतों, भजनों, गजलों इत्यादि का निर्माण हुआ है तथा हो रहा है। इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी राग पूरिया कल्याण के स्वरूप के साथ-साथ उसके आलाप, छोटा ख्याल तथा तानों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति में लिख सकने का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे। साथ ही क्रियात्मक रूप से राग पूरिया कल्याण का आलाप, छोटा ख्याल तथा तानों को गा सकेंगे।

2.2 उद्देश्य तथा परिणाम

सीखने के उद्देश्य

- पूरिया कल्याण राग के स्वरूप की संक्षिप्त जानकारी प्रदान करना।
- पूरिया कल्याण राग के आलाप, छोटा ख्याल तथा तानों को भातखंडे स्वरलिपि में लिखने की क्षमता विकसित करना।
- पूरिया कल्याण राग के आलाप, छोटा ख्याल तथा तानों को गाने की क्षमता विकसित करना।
- विद्यार्थी को गायन के दौरान सुधार करने का प्रयास करने के लिए प्रोत्साहित करना।

सीखने के परिणाम

- विद्यार्थी गायन के तकनीकी पहलुओं से अच्छी तरह परिचित हो जाएगा
- पूरिया कल्याण राग का परिचय, आलाप, छोटा, तानों को लिखने की निपुणता प्राप्त करने में सक्षम होंगे।

- पूरिया कल्याण राग के आलाप, छोटा ख्याल, तानों को गाने में सक्षम होंगे।
- राग पूरिया कल्याण के विभिन्न रचनात्मक पहलुओं को क्रियात्मक रूप से प्रदर्शित करने की क्षमता विकसित होगी और अनुभव भी प्राप्त होगा।

2.3 पूरिया कल्याण राग का परिचय, आलाप, छोटा ख्याल, तानें

2.3.1 पूरिया कल्याण राग का परिचय

राग - पूरिया कल्याण

थाट – मारवा

जाति - संपूर्ण

वादी - गांधार

संवादी - निषाद

स्वर - रिषभ कोमल, मध्यम तीव्र तथा अन्य स्वर शुद्ध

न्यास के स्वर – गांधार, पंचम, निषाद

समय - सांयकाल

समप्रकृतिक राग – पूरिया धनाश्री

आरोहः- ऩी सा, ऩी रे॒ ग म॑ प, म॑ ध नी रें॒ सां।

अवरोहः- सां नी ध प, म॑ ग, रे॒ सा।

पकड़ः- ऩी रे॒ ग म॑ प, म॑ ग, रे॒ म॑ ग, रे॒ ऩी रे॒ सा

मधुर व लोकप्रिय, पूरिया कल्याण राग का थाट मारवा है। इस राग की जाति संपूर्ण है। पूरिया कल्याण राग का वादी स्वर गांधार तथा संवादी स्वर निषाद है। प्रस्तुत राग में कोमल रिषभ तथा तीव्र मध्यम का प्रयोग होता है व अन्य स्वर शुद्ध हैं। इस राग का गायन समय सांयकाल माना जाता है। इस राग को मंद्र सप्तक के निषाद से आरम्भ किया जाता है। (ऩी रे॒ ग मे॑ प)। इस राग में गांधार, पंचम, निषाद पर न्यास किया जाता है। यह राग पूरिया तथा कल्याण रागों का मिश्रण है। इसमें रे॒ मे॑ ग स्वरों की संगति विशेष है। आरोह में धैवत का लंघन किया जाता है (ऩी रे॒ ग मे॑ प, मे॑ ध नी रें सां)। इस राग में रिषभ स्वर का अल्प प्रयोग होता है (ऩी रे॒ ग मे॑ प, मे॑ ग, रेसा)। मंद्र तथा मध्य सप्तक में इस राग को गाने में अधिक सौंदर्य बोध होता है। इसका समप्रकृतिक राग पूरिया धनाश्री है।

2.3.2 आलाप

- सा, सा, ऩी सा, ऩी रे॒ सा, ऩी सा ऩी ऩी रे॒ सा, ऩी ध़ ऩी ऩी सा।
- सा ऩी ध़ प़, ऩी ध़ ऩी ऩी सा, ऩी रे॒ सा,
  रे॒ ऩी ध़ प़, मे़॑ ध़ प़, मे़॑ ध़ ऩी रे॒ सा सा।
- ऩी रे॒ ग, रे॒ ग, रे॒ सा ऩी रे॒ सा, मे़॑ ध़ ऩी रे॒ ग, रे॒ ग, रे॒ सा
- ऩी रे॒, ग मे॑ मे॑ प, प, मे॑ ग, रे॒ मे॑ ग, मे॑ ग रे॒ सा
- ग ग मे॑ प, प, मे॑ ध प, प, मे॑ ध नी नी ध प, प, मे॑ ध नी नी रें॒ सां, सां
- नी रें॒ गं, रें॒ गं, रें॒ सां नी रें॒ सां, नी रें॒, गं मे॑ं मे॑ं पं, पं, मे॑ं गं,
  रें॒ मे॑ं गं, मे॑ं गं रें॒ सां
- रें॒ नी ध प, प, मे॑ ध प मे॑ ग, रे॒ मे॑ ग रे॒ ऩी रे॒ सा

2.3.3 पूरिया कल्याण का छोटा ख्याल

द्रुत लय **तीन ताल**

x				2				0				3			
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
स्थायी															
								प	-	ध	ग	म॑	ध	रें॒	नी
								आ	ऽ	ज	पि	या	ऽ	घ	र
ध	-	प	प	-	प	-	प								
आ	ऽ	ऽ	ए	ऽ	मो	ऽ	रे॒								
								म॑	म॑ध	म॑	ग	म॑	रे॒	ग	-
								त	नऽ	म	न	ध	न	बा	ऽ
म॑	रे॒	ग	म॑	ग	रे॒	सा	-								
रूं	ऽ	सा	रा	सा	ऽ	रा	ऽ								
अन्तरा															
								म॑	म॑	ग	ग	म॑	ध	-	सां
								पि	या	स	ग	ला	ऽ	ड	ऽ
सां	सां	सां	रें॒-	सां	-	-	-								
ल	डा	सांव	त	जा	ऽ	त	ऽ								
								नीरें	गं	रें॒	नी	रें॒	सां	-	नी
								म	ऽ	त	स	ख	मो	ऽ	री
ध	नी	रें॒	नी	नी	ध	प	-								
ऽ	जा	ऽ	व	न	ऽ	दे	ऽ								

2.3.4 पूरिया कल्याण राग की तानें

- गमं धनी सांऽ सांऽ सांऽ ऽऽ
- सांनी धप मंग रेसा ऩीरे गमं
- गंगं रेंगं गरें गंगं रेंसां नीसां रेंसां नीसां
- मंध नीसां रेंसां नीसां नीनी धप नीध नीसां
- मंध नीध रेंसां नीसां गंगं रेंसां रेंसां नीसां
- मंध धनी धनी नीसां रेंसां नीसां नीध नीसां
- ऩीरे गमं धनी नीध पमं गरे गग रेसा
  गग रेसा ऩीसा
- ऩीरे गमं पमं गरे गग रेसा ऩीरे गमं
  पमं गरे साऽ
- ऩीरे रेग रेग गमं गमं मंप पमं गरे
  गग रेसा ऩीसा

- ऩीरे॒ गग रे॒सा गग रे॒ग गरे॒ ग रे॒सा रे॒ग रे॒सा ऩीसा

- ऩीरे॒ गम॑ पम॑ गरे॒ गम॑ पम॑ गरे॒ गरे॒ गग रे॒सा ऩीसा

- नी रे॒ ऽ रे॒ ग ऽ ग म॑ ऽ म॑ ध ऽ ध नी ऽ नी सां ऽ नी ध
- ऽ ध म॑ ऽ ग रे॒ सा ऽ ऽ प ऽ प ग ऽ ऽ ऽ ऽ प ऽ प ग ऽ ऽ ऽ

- नीनी धप म॑प धप म॑प गम॑ गरे॒ साऽ गम॑ पग म॑प गम॑

- ऩीऽ रे॒ऽ गऽ म॑ऽ पऽ ऽऽ

- ऩीरे॒ ग,रे॒ गम॑, गम॑ प,म॑ पध

- गंगं रे॒ंगं गरे॒ं गंगं रे॒ंसां नीसां रे॒ंसां नीसां

- म॑ध नीसां रे॒ंसां नीसां नीनी धप नीध नीसां

- म॑ध नीध रे॒ंसां नीसां गंगं रे॒ंसां रे॒ंसां नीसां

• म॑ध	धनी	धनी	नीसां	रें॒सां	नीसां	नीध	नीसां

• गग	रे॒सा	ऩीसा	रे॒सा	ऩीऩी	ध़प़	म़॑प़	ध़प़
म़॑ध़	ऩीरे॒	सासा	ऩीसा	नीरे॒	गम॑	पम॑	गम॑
गम॑	धनी	सांनी	धप	म॑ध	नीरें	गरें	सांसां
नीरें	सांनी	धप	म॑प	म॑ध	पम॑	गरे॒	सासा
ऩीरे॒	गम॑	पम॑	गरे॒	साऽ	पम॑	गरे॒	साऽ
पम॑	गरे॒	साऽ	ऩीरे॒	गम॑	पम॑	गरे॒	साऽ
पम॑	गरे॒	साऽ	पम॑	गरे॒	साऽ	ऩीरे॒	गम॑
पम॑	गरे॒	साऽ	पम॑	गरे॒	साऽ	पम॑	गरे॒

• म़म़	म़॑,ध़	ध़ध़,	ऩीऩी,	ध़ध़	ध़,ऩी	ऩीऩी,	सासा,
ऩीऩी	ऩी,सा	सासा,	रे॒रे॒,				

• सासा	सा,रे॒	रे॒रे॒,	गग,	रे॒रे॒	रे॒,ग	गग,	म॑म॑,
गग	ग,म॑	म॑म॑,	पप,				

• म॑म॑	म॑,प	पप,	धध,	म॑म॑	म॑,ध	धध,	नीनी,
धध	ध,नी	नीनी,	सांसां,				

• नीनी	नी,सां	सांसा,	रेंरें,	सांसां	सां,नी	नीनी,	धध
ध,प	पप,	म॑म,	म॑ग				

• गग, रेरे रे,सा सासा, ऩीरे गमं पऽ ऽऽ ऽऽ ऩीरे गमं पऽ ऽऽ ऽऽ ऩीरे गमं

स्वयं जांच अभ्यास 1

2.1 राग पूरिया कल्याण का संवादी स्वर कौन सा है?

(क) मं

(ख) नी

(ग) ग

(घ) सा

2.2 राग पूरिया कल्याण का वादी स्वर कौन सा है?

(क) मं

(ख) प

(ग) ग

(घ) सा

2.3 राग पूरिया कल्याण को अधिकतर किस स्वर से आरम्भ किया जाता है?

(क) मं

(ख) प़

(ग) सा

(घ) ऩी

2.4 राग पूरिया कल्याण की मुख्य स्वरसंगति कौन सी है?

(क) म॑गम॑

(ख) रे॒म॑ग

(ग) म॑धग

(घ) साऩीसा

2.5 राग पूरिया कल्याण का समप्रकृतिक राग कौन सा है?

(क) भीमपलासी

(ख) पूरिया धनश्री

(ग) सोहनी

(घ) हंसध्वनि

2.6 राग पूरिया कल्याण किन रागों का मिश्रण है?

(क) पूरिया तथा यमन

(ख) पूरिया तथा धनश्री

(ग) सोहनी तथा पूरिया

(घ) पूरिया तथा मारवा

2.4 सारांश

पूरिया कल्याण राग भारतीय शास्त्रीय संगीत का प्रचलित राग है। शास्त्रीय संगीत गायन के अंतर्गत इस राग को गाया जाता है। पूरिया कल्याण राग का थाट मारवा है। इस राग की जाति संपूर्ण है तथा वादी स्वर गांधार, संवादी स्वर निषाद है। राग में कोमल रिषभ तथा तीव्र मध्यम का प्रयोग होता है व अन्य स्वर शुद्ध हैं। यह राग पूरिया तथा कल्याण रागों का

मिश्रण है। इसमें रे॒ मं ग स्वरों की संगति विशेष है। इसका समप्रकृतिक राग पूरिया धनाश्री है। विभिन्न प्रकार की तानों को इसमें लयकारियों के साथ गाया जाता है।

2.5 शब्दावली

- छोटा ख्याल: गायन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, ऐसी गीत रचना, जो स्वरबद्ध, लयबद्ध व तालबद्ध हो तथा मध्य या द्रुत लय में गाई जाती हो उसे छोटा ख्याल कहते हैं।

- तान: साधारण रूप से राग के स्वरों का विस्तार जब विभिन्न प्रकार की लयों तथा लयकारियों में बांधकर, गाया जाता है तो उसे तान कहते हैं।

- आलाप: वादन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, अनिबद्ध (ताल रहित) रूप सें राग के स्वरों का विस्तार धीमी लय में करना, आलाप कहलाता है।

- लय: गायन/वादन में बीत रहे समय की समान गति को 'लय' कहा जाता है।

- द्रुत लय: वादन/गायन के अंतर्गत जब लय बहुत तेज गति मे चलती है तो उसे द्रुत लय कहते हैं।

2.6 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

स्वयं जांच अभ्यास 1

2.1 (ख)

2.2 (ग)

2.3 (घ)

2.4 (ख)

2.5 (ख)

2.6 (क)

2.7 संदर्भ

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2015). राग परिचय (भाग 1-4), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

मिश्र, शंकर लाल (1998).नवीन ख्याल रचनावली, अभिषेक पब्लिकेशन, चंडीगढ

भातखंडे, विष्णुनारायण. (1970). कर्मिक पुस्तक मलिका. खंड 1-6, संगीत कार्यालय हाथरस

मृत्युंजय, डॉ. शर्मा. (2000). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

2.8 अनुशंसित पठन

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2015). राग परिचय (भाग 1-4), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (1998). मधुर स्वरलिपि संग्रह. संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

अत्रे, डॉ. प्रभा. (2007). स्वरंजनी रात्रिकालीन रागों की बंदिशों का संकलन, बी. आर. रिदम्स, दिल्ली।

मिश्र, शंकर लाल (1998).नवीन ख्याल रचनावली, अभिषेक पब्लिकेशन, चंडीगढ

झा, पं. रामाश्रय. (2040). अभिनव गीतांजलि (भाग 1-5), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

2.9 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. राग पूरिया कल्याण का परिचय लिखिए।

प्रश्न 2. राग पूरिया कल्याण के आलाप को लिखिए।

प्रश्न 3. राग पूरिया कल्याण में छोटा ख्याल को तानों सहित लिखिए।

प्रश्न 4 राग पूरिया कल्याण के आलाप को गा कर सुनाइए।

प्रश्न 5. राग पूरिया कल्याण के छोटा ख्याल को तानों सहित गा कर सुनाइए।

इकाई-3
राग पूरिया कल्याण - विलम्बित गत

इकाई की रूपरेखा

3.1 भूमिका

3.2 उद्देश्य तथा परिणाम

3.3 पूरिया कल्याण राग का परिचय, आलाप, विलम्बित गत, तोड़े

3.3.1 पूरिया कल्याण राग का परिचय

3.3.2 पूरिया कल्याण राग का आलाप

3.3.3 पूरिया कल्याण राग का विलम्बित गत

3.3.4 पूरिया कल्याण राग की तोड़े

स्वयं जांच अभ्यास 1

3.4 सारांश

3.5 शब्दावली

3.6 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

3.7 संदर्भ

3.8 अनुशंसित पठन

3.9 पाठगत प्रश्न

3.1 भूमिका

संगीत (गायन तथा वादन) स्नात्कोत्तर के क्रियात्मक पाठ्यक्रम की इस इकाई में वादन संगीत के संदर्भ में, राग पूरिया कल्याण का परिचय, आलाप, विलंबित गत तथा तोड़ों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति के माध्यम से विस्तार पूर्वक प्रस्तुत किया गया है। उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में रागों का प्रस्तुतिकरण विशेष रूप से होता है, जो सुनने में मधुरता से युक्त, कर्णप्रिय, वैचित्रतापूर्ण तथा आनंददायक होता है। आज के समय में शास्त्रीय संगीत के कलाकार रागों को अपने मंच प्रदर्शन के समय प्रस्तुत करते हैं। प्रस्तुत राग का, शास्त्रीय संगीत के अतिरिक्त, सुगम संगीत व फिल्मी संगीत में भी प्रयुक्त होता है, जिसके आधार पर कई मधुर गीतों, भजनों, गजलों इत्यादि का निर्माण हुआ है तथा हो रहा है। इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी राग पूरिया कल्याण के स्वरूप के साथ-साथ उसके आलाप, विलंबित गत तथा तोड़ों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति में लिख सकने का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे। साथ ही क्रियात्मक रूप से राग पूरिया कल्याण का आलाप, विलंबित गत तथा तोड़ों को बजा सकेंगे।

3.2 उद्देश्य तथा परिणाम

सीखने के उद्देश्य

- पूरिया कल्याण राग के स्वरूप की संक्षिप्त जानकारी प्रदान करना।
- पूरिया कल्याण के आलाप, विलंबित गत, तोड़ों को भातखंडे स्वरलिपि में लिखने की क्षमता विकसित करना।
- पूरिया कल्याण राग के आलाप, विलंबित गत तथा तोड़ों को बजाने की क्षमता विकसित करना।
- विद्यार्थी को गायन के दौरान सुधार करने का प्रयास करने के लिए प्रोत्साहित करना।

सीखने के परिणाम

- विद्यार्थी गायन के तकनीकी पहलुओं से अच्छी तरह परिचित हो जाएगा
- पूरिया कल्याण राग का परिचय, आलाप, विलंबित गत तथा तोड़ों को लिखने की निपुणता प्राप्त करने में सक्षम होंगे।

- पूरिया कल्याण राग के आलाप, विलंबित गत तथा तोड़ों को बजाने में सक्षम होंगे।
- राग पूरिया कल्याण के विभिन्न रचनात्मक पहलुओं को क्रियात्मक रूप से प्रदर्शित करने की क्षमता विकसित होगी और अनुभव भी प्राप्त होगा।

3.3 पूरिया कल्याण राग का परिचय, आलाप, विलंबित गत, तोड़े

3.3.1 पूरिया कल्याण राग का परिचय

राग - पूरिया कल्याण

थाट – मारवा

जाति - संपूर्ण

वादी - गांधार

संवादी - निषाद

स्वर - रिषभ कोमल, मध्यम तीव्र तथा अन्य स्वर शुद्ध

न्यास के स्वर – गांधार, पंचम, निषाद

समय - सांयकाल

समप्रकृतिक राग – पूरिया धनाश्री

आरोहः- ऩी सा, ऩी रे॒ ग मे॑ प, मे॑ ध नी रें॒ सां।

अवरोहः- सां नी ध प, मे॑ ग, रे॒ सा।

पकड़:- ऩी रे॒ ग मे॑ प, मे॑ ग, रे॒ मे॑ ग, रे॒ ऩी रे॒ सा

मधुर व लोकप्रिय, पूरिया कल्याण राग का थाट मारवा है। इस राग की जाति संपूर्ण है। पूरिया कल्याण राग का वादी स्वर गांधार तथा संवादी स्वर निषाद है। प्रस्तुत राग में कोमल रिषभ तथा तीव्र मध्यम का प्रयोग होता है व अन्य स्वर शुद्ध हैं। इस राग का गायन समय सांयकाल माना जाता है। इस राग को मंद्र सप्तक के निषाद से आरम्भ किया जाता है। (ऩी रे॒ ग मॅ प)। इस राग में गांधार, पंचम, निषाद पर न्यास किया जाता है। यह राग पूरिया तथा कल्याण रागों का मिश्रण है। इसमें रे॒ मॅ ग स्वरों की संगति विशेष है। आरोह में धैवत का लंघन किया जाता है (ऩी रे॒ ग मॅ प, मॅ ध नी रें सां)। इस राग में रिषभ स्वर का अल्प प्रयोग होता है (ऩी रे॒ ग मॅ प, मॅ ग, रेसा)। मंद्र तथा मध्य सप्तक में इस राग को गाने में अधिक सौंदर्य बोध होता है। इसका समप्रकृतिक राग पूरिया धनाश्री है।

3.3.2 आलाप

- सा, सा, सा, ऩी ऩी सा, ऩी रे॒ सा, ऩी सा ऩी ऩी रे॒ सा, ऩी ध़ ऩी ऩी सा।
- सा़ ऩी ध़ प़, ऩी ध़ ऩी ऩी सा, ऩी रे॒ सा, रे॒ ऩी ध़ प़, मॅ़ ध़ प़,
  मॅ़ ध़ ऩी रे॒ सा सा।
- ऩी रे॒ ग, रे॒ ग, रे॒ सा ऩी रे॒ सा, मॅ़ ध़ ऩी रे॒ ग, रे॒ ग, रे॒ सा
- ऩी रे॒, ग मॅ मॅ प, प, मॅ ग, रे॒ मॅ ग, मॅ ग रे॒ सा
- ग मॅ प, प, मॅ ध प, प, मॅ ध नी नी ध प, प,
  मॅ ध नी नी रें॒ सां, सां
- नी रें॒ गं, रें॒ गं, रें॒ सां नी रें॒ सां, नी रें॒, गं मॅं मॅं पं,
  पं, मॅं गं, रें॒ मॅं गं, मॅं गं रें॒ सां
- रें॒ नी ध प, प, मॅ ध प मॅ ग, रे॒ मॅ ग रे॒ ऩी रे॒ सा

3.5 पूरिया कल्याण विलंबित गत तीन ताल

x				2				0				3			
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
स्थाई															
											पप	म॑	गग	ऽम॑ग	रे॒रे॒
											दिर	दा	दिर	ऽदिर	दिर
सा	सा	सा	ऩीरे॒	ऩी	रे॒रे॒	ग	म॑धनीरें॒	नीऽधप	म॑ग	रे॒सा					
दा	दा	रा	दिर	दा	दिर	दा	दिरदिर	दाऽदिर	दिर	दिर					
अन्तरा															
											पप	म॑	गग	ऽम॑ध	नीरें॒
											दिर	दा	दिर	ऽदिर	दिर
सां	सां	सां	नीरें॒	गं	म॑ंम॑ं	गं	रें॒सां	नीऽधप	म॑ग	रे॒सा					
दा	दा	रा	दिर	दा	दिर	दा	दिर	दाऽदिर	दिर	दिर					

3.3.4 पूरिया कल्याण राग के तोड़े

- ऩीरे रेग रेगगमं गमंमंप पमंगरे गगरेसा ऩीसाऩीऽ
- मंधनीध रेंसांनीसां गंगंरेंसां रेंसांनीसां
- ऩीरेगमं पमंगरे गगरेसा ऩीरेगमं पमंगरे साऽऽऽ
- ऩीरेगमं धनीनीध पमंगरे गगरेसा गगरेसा ऩीसाऽऽ
- ऩीरेगग रेसा,ऩीरे गगरेग गरेगग रेसारेग रेसाऩीसा
- ऩीरे गमं पमंगरे गमंपमं गरेगरे गगरेसा ऩीसाऩीऽ
- नी रे ऽ रे ग ऽ ग मं ऽ मं ध ऽ ध नी ऽ नी
  सां ऽ नी ध ऽ ध मं ऽ ग रे सा ऽ ऽ प ऽ प
  ग ऽ ऽ ऽ ऽ प ऽ प ग ऽ ऽ ऽ
- नीनीधप मंपधप मंपगमं गरेसाऽ
  गमंपग मंपगमं
- मंधधनी धनीनीसां रेंसांनीसां नीधनीसां
- गगरेसा ऩीसारेसा ऩीऩीध़प़ मं़प़ध़प़

म़॑ध़ऩीरे॒	सासाऩीसा	नीरे॒गम॑	पम॑गम॑
गम॑धनी	सांनीधप	म॑धनीरें	गरेंसांसां
नीरेंसांनी	धपम॑प	म॑धपम॑	गरे॒सासा
ऩीरे॒गम॑	पम॑गरे॒	साऽपम॑	गरे॒साऽ
पम॑गरे॒	साऽऩीरे॒	गम॑पम॑	गरे॒साऽ
पम॑गरे॒	साऽपम॑	गरे॒साऽ	ऩीरे॒गम॑
पम॑गरे॒	साऽपम॑	गरे॒साऽ	पम॑गरे॒

• म़म़म़॑,ध़	ध़ध़,ऩीऩी,	ध़ध़ध़,ऩी	ऩीऩी,सासा,
ऩीऩीऩी,सा	सासा,रे॒रे॒,	सासासा,रे॒	रे॒रे॒,गग,
रे॒रे॒रे॒,ग	गग,म॑म॑,	गगग,म॑	म॑म॑,पप,
म॑म॑म॑,प	पप,धध,	म॑म॑म॑,ध	धध,नीनी,
धधध,नी	नीनी,सांसां,	नीनीनी,सां	सांसा,रेंरें,
सांसांसां,नी	नीनी,धध	ध,पपप,	म॑म,म॑ग
गग,रे॒रे॒	रे॒,सासासा,	ऩीरे॒गम॑	पऽऽऽ
ऽऽऩीरे॒	गम॑पऽ	ऽऽऽऽ	ऩीरे॒गम॑

• सा ऩिऩि ध़ध़ प़प़	म़॑ध़ध़ ऩि सा	ऩि रे॒रे॒ गग म॑म॑	गऽ गरे॒ ऽरे॒ साऽ
ऩि रे॒रे॒ ग म॑	रे॒ गग म॑ ध	प म॑म॑ गग म॑म॑	गऽ गरे॒ ऽरे॒ साऽ
ऩि रे॒ सा ऽ	ऩि रे॒ सा ऽ	ऩि रे॒ सा ऽ	

• ऩी रे॒रे॒ ग म॑	रे॒ गग म॑ ध	ग म॑म॑ ध नी	म॑ धध नी सां
ध नीनी रें सां	नीऽ नीध ऽध पऽ	म॑ धध पप म॑म॑	गऽ गरे॒ ऽरे॒ साऽ
ग म॑म॑ ग रे॒	सा ऽ ऽ ऽ	ग म॑म॑ ग रे॒	सा ऽ ऽ ऽ

ग मंमं ग रे

- गगरेसाऩीसारेसा
  ऩीऩीधपमंपधप
  मंधऩीरेसासाऩीसा
  नीरेगमंपमंगमं
  गमंधनीसांनीधप
  मंधनीरेंगरेंसांसां
  नीरेंसांनीधपमंप
  मंधपमंगरेसासा
  ऩीरेगमंपमंगरे
  साऽपमंगरेसाऽ
  पमंगरेसाऽऩीरे
  गमंपमंगरेसाऽ
  पमंगरेसाऽपमं
  गरेसाऽऩीरेगमं
  पमंगरेसाऽपमं
  गरेसाऽ पमंगरे

- ऽसाऩीसा
  ऽरेसारे
  ऽगरेग
  ऽमंगमं
  ऽपमंप
  ऽधपध
  ऽपमंग
  ऽमंगरे
  ऽगरेसा
  ऽगरेसा
  ऽगरेसा

- पमंगरे
  साऽऽऽ
  पमंगरे
  साऽऽऽ
  पमंगरे

- पमंगरे
  साऽपमं
  गरेसाऽ
  पमंगरे
  पमंगरे
  साऽपमं
  गरेसाऽ
  पमंगरे

स्वयं जांच अभ्यास 1

3.1 राग पूरिया कल्याण का संवादी स्वर कौन सा है?

(क) मं

(ख) नी

(ग) ग

(घ) सा

3.2 राग पूरिया कल्याण का वादी स्वर कौन सा है?

(क) म॑

(ख) प

(ग) ग

(घ) सा

3.3 राग पूरिया कल्याण को अधिकतर किस स्वर से आरम्भ किया जाता है?

(क) म॑

(ख) प़

(ग) सा

(घ) ऩी

3.4 राग पूरिया कल्याण की मुख्य स्वरसंगति कौन सी है?

(क) म॑गम॑

(ख) रे॒म॑ग

(ग) म॑धग

(घ) साऩीसा

3.5 राग पूरिया कल्याण का समप्रकृतिक राग कौन सा है?

(क) भीमपलासी

(ख) पूरिया धनश्री

(ग) सोहनी

(घ) हंसध्वनि

3.6 राग पूरिया कल्याण किन रागों का मिश्रण है?

(क) पूरिया तथा यमन

(ख) पूरिया तथा धनश्री

(ग) सोहनी तथा पूरिया

(घ) पूरिया तथा मारवा

3.4 सारांश

पूरिया कल्याण राग भारतीय शास्त्रीय संगीत का प्रचलित राग है। शास्त्रीय संगीत गायन के अंतर्गत इस राग को बजाया जाता है। पूरिया कल्याण राग का थाट मारवा है। इस राग की जाति संपूर्ण है तथा वादी स्वर गांधार, संवादी स्वर निषाद है। राग में कोमल रिषभ तथा तीव्र मध्यम का प्रयोग होता है व अन्य स्वर शुद्ध हैं। यह राग पूरिया तथा कल्याण रागों का मिश्रण है। इसमें रे मं ग स्वरों की संगति विशेष है। इसका समप्रकृतिक राग पूरिया धनाश्री है। विभिन्न प्रकार के तोड़ों को इसमें लयकारियों के साथ बजाया जाता है।

3.5 शब्दावली

- विलंबित गत: उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में वादन के अंतर्गत विलंबित लय में बजाए जाने वाली गत।
- आलाप: वादन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, अनिबद्ध (ताल रहित) रूप से राग के स्वरों का विस्तार धीमी लय में करना, आलाप कहलाता है।

- विलंबित लय: वादन/गायन के अंतर्गत जब लय बहुत धीमी गति मे चलती है तो उसे विलंबित लय कहते हैं।

- लय: गायन/वादन में बीत रहे समय की समान गति को ‘लय’ कहा जाता है।

3.6 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

स्वयं जांच अभ्यास 1

3.1 (ख)

3.2 (ग)

3.3 (घ)

3.4 (ख)

3.5 (ख)

3.6 (क)

3.7 संदर्भ

मिश्रा, लालमणि. (1979). तंत्रीनाद. साहित्य रत्नालय, कानपुर।

मृत्युंजय, डॉ. शर्मा. (2005). तांत्रिक विज्ञान, प्रतिभा स्पंदन प्रकाशन शिमला।

चौधरी, देबू. (1981). सितार और इसकी तकनीकें. एवन बुक कंपनी, दिल्ली।

बंधोपाध्याय, श्रीपद. (1977). सितार मार्ग (भाग 2). भारतीय संगीत साहित्य प्रकाशन, दिल्ली।

मृत्युंजय, डॉ. शर्मा. (2000). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

3.8 अनुशंसित पठन

बंधोपाध्याय, श्रीपद. (1977). सितार मार्ग (भाग 1). भारतीय संगीत साहित्य प्रकाशन, दिल्ली।

भीकन खान, यू.अनवर खान. (1972). सितार दर्पण. भारतीय संगीत नृत्य महाविद्यालय, बड़ौदा।

बंधोपाध्याय, श्रीपद. (1977). सितार मार्ग (भाग 3). भारतीय संगीत साहित्य प्रकाशन, दिल्ली।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2008). तंत्रिका विज्ञान, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2005). स्वर सरिता, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

झा, पं. रामाश्रय. (2040). अभिनव गीतांजलि (भाग 1-5), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

3.9 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. राग पूरिया कल्याण का परिचय लिखिए।

प्रश्न 2. राग पूरिया कल्याण के आलाप को लिखिए।

प्रश्न 3. राग पूरिया कल्याण की विलम्बित गत को तोड़ों सहित लिखिए।

प्रश्न 4 राग पूरिया कल्याण के आलाप को बजा कर सुनाइए।

प्रश्न 5. राग पूरिया कल्याण की विलम्बित गत को तोड़ों सहित बजा कर सुनाइए।

इकाई-4
राग पूरिया कल्याण - द्रुत गत

इकाई की रूपरेखा

4.1 भूमिका

4.2 उद्देश्य तथा परिणाम

4.3 पूरिया कल्याण राग का परिचय, आलाप, द्रुत गत, तोड़े

4.3.1 पूरिया कल्याण राग का परिचय

4.3.2 पूरिया कल्याण राग का आलाप

4.3.3 पूरिया कल्याण राग का द्रुत गत

4.3.4 पूरिया कल्याण राग की तोड़े

स्वयं जांच अभ्यास 1

4.4 सारांश

4.5 शब्दावली

4.6 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

4.7 संदर्भ

4.8 अनुशंसित पठन

4.9 पाठगत प्रश्न

4.1 भूमिका

संगीत (गायन तथा वादन) स्नात्कोत्तर के क्रियात्मक पाठ्यक्रम की इस इकाई में वादन संगीत के संदर्भ में, राग पूरिया कल्याण का परिचय, आलाप, द्रुत गत तथा तोड़ों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति के माध्यम से विस्तार पूर्वक प्रस्तुत किया गया है। उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में रागों का प्रस्तुतिकरण विशेष रूप से होता है, जो सुनने में मधुरता से युक्त, कर्णप्रिय, वैचित्रतापूर्ण तथा आनंददायक होता है। आज के समय में शास्त्रीय संगीत के कलाकार रागों को अपने मंच प्रदर्शन के समय प्रस्तुत करते हैं। प्रस्तुत राग का, शास्त्रीय संगीत के अतिरिक्त, सुगम संगीत व फिल्मी संगीत में भी प्रयुक्त होता है, जिसके आधार पर कई मधुर गीतों, भजनों, गजलों इत्यादि का निर्माण हुआ है तथा हो रहा है। इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी राग पूरिया कल्याण के स्वरूप के साथ-साथ उसके आलाप, द्रुत गत तथा तोड़ों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति में लिख सकने का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे। साथ ही क्रियात्मक रूप से राग पूरिया कल्याण का आलाप, द्रुत गत तथा तोड़ों को बजा सकेंगे।

4.2 उद्देश्य तथा परिणाम

सीखने के उद्देश्य

- पूरिया कल्याण राग के स्वरूप की संक्षिप्त जानकारी प्रदान करना।
- पूरिया कल्याण राग के आलाप, द्रुत गत तथा तोड़ों को भातखंडे स्वरलिपि में लिखने की क्षमता विकसित करना।
- पूरिया कल्याण राग के आलाप, द्रुत गत तथा तोड़ों को बजाने की क्षमता विकसित करना।
- विद्यार्थी को गायन के दौरान सुधार करने का प्रयास करने के लिए प्रोत्साहित करना।

सीखने के परिणाम

- विद्यार्थी गायन के तकनीकी पहलुओं से अच्छी तरह परिचित हो जाएगा
- पूरिया कल्याण राग का परिचय, आलाप, द्रुत गत तथा तोड़ों को लिखने की निपुणता प्राप्त करने में सक्षम होंगे।

- पूरिया कल्याण राग के आलाप, द्रुत गत तथा तोड़ों को बजाने में सक्षम होंगे।
- राग पूरिया कल्याण के विभिन्न रचनात्मक पहलुओं को क्रियात्मक रूप से प्रदर्शित करने की क्षमता विकसित होगी और अनुभव भी प्राप्त होगा।

4.3 पूरिया कल्याण राग का परिचय, आलाप, द्रुत गत, तोड़े

4.3.1 पूरिया कल्याण राग का परिचय

राग - पूरिया कल्याण

थाट – मारवा

जाति - संपूर्ण

वादी - गांधार

संवादी - निषाद

स्वर - रिषभ कोमल, मध्यम तीव्र तथा अन्य स्वर शुद्ध

न्यास के स्वर – गांधार, पंचम, निषाद

समय - सांयकाल

समप्रकृतिक राग – पूरिया धनाश्री

आरोह:- ऩी सा, ऩी रे॒ ग म॑ प, म॑ ध नी रें॒ सां।

अवरोह:- सां नी ध प, म॑ ग, रे॒ सा।

पकड़:- ऩी रे॒ ग म॑ प, म॑ ग, रे॒ म॑ ग, रे॒ ऩी रे॒ सा

मधुर व लोकप्रिय, पूरिया कल्याण राग का थाट मारवा है। इस राग की जाति संपूर्ण है। पूरिया कल्याण राग का वादी स्वर गांधार तथा संवादी स्वर निषाद है। प्रस्तुत राग में कोमल रिषभ तथा तीव्र मध्यम का प्रयोग होता है व अन्य स्वर शुद्ध हैं। इस राग का गायन समय सांयकाल माना जाता है। इस राग को मंद्र सप्तक के निषाद से आरम्भ किया जाता है। (ऩी रे॒ ग मे॑ प)। इस राग में गांधार, पंचम, निषाद पर न्यास किया जाता है। यह राग पूरिया तथा कल्याण रागों का मिश्रण है। इसमें रे॒ मे॑ ग स्वरों की संगति विशेष है। आरोह में धैवत का लंघन किया जाता है (ऩी रे॒ ग मे॑ प, मे॑ ध नी रें सां)। इस राग में रिषभ स्वर का अल्प प्रयोग होता है (ऩी रे॒ ग मे॑ प, मे॑ ग, रे सा)। मंद्र तथा मध्य सप्तक में इस राग को गाने में अधिक सौंदर्य बोध होता है। इसका समप्रकृतिक राग पूरिया धनाश्री है।

4.3.2 आलाप

- सा, सा, सा, ऩी ऩी सा, ऩी रे॒ सा, ऩी सा ऩी ऩी रे॒ सा, ऩी ध़ ऩी ऩी सा।
- सा ऩी ध़ प़, ऩी ध़ ऩी ऩी सा, ऩी रे॒ सा, रे॒ ऩी ध़ प़, मे॑ ध़ प़,

  मे॑ ध़ ऩी रे॒ सा सा।
- ऩी रे॒ ग, रे॒ ग, रे॒ सा ऩी रे॒ सा, मे॑ ध़ ऩी रे॒ ग, रे॒ ग, रे॒ सा
- ऩी रे॒, ग मे॑ मे॑ प, प, मे॑ ग, रे॒ मे॑ ग, मे॑ ग रे॒ सा
- ग मे॑ प, प, मे॑ ध प, प, मे॑ ध नी नी ध प, प,

  मे॑ ध नी नी रें॒ सां, सां
- नी रें॒ गं, रें॒ गं, रें॒ सां नी रें॒ सां, नी रें॒, गं में॑ में॑ पं,

  पं, में॑ गं, रें॒ में॑ गं, में॑ गं रें॒ सां
- रें॒ नी ध प, प, मे॑ ध प मे॑ ग, रे॒ मे॑ ग रे॒ ऩी रे॒ सा

4.3.3 पूरिया कल्याण द्रुत गत तीन ताल

x				2				0				3			
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
स्थाई															
						गग	म॑म॑	गऽ	गरे॒	ऽरे॒	साऽ	ऩी	रे॒रे॒	ग	म॑
						दिर	दिर	दाऽ	रदा	ऽर	दाऽ	दा	दिर	दा	रा
प	ऽ	म॑	ग	रे॒	सा										
दा	ऽ	दा	रा	दा	रा										
						गग	म॑म॑	गऽ	गरे॒	ऽरे॒	साऽ	ऩी	रे॒रे॒	ग	म॑
						दिर	दिर	दाऽ	रदा	ऽर	दाऽ	दा	दिर	दा	रा
प	ऽ	म॑	ग	रे॒	सा										
दा	ऽ	दा	रा	दा	रा										
अन्तरा															
								गऽ	ऽग	गऽ	म॑ऽ	ऽम॑	म॑	ध	नी
								दाऽ	ऽरा	दाऽ	दाऽ	ऽरा	दाऽ	दा	रा
सांऽ	ऽसां	सांऽ	सांऽ	नी	रें	सां	ऽ								
दाऽ	ऽरा	दाऽ	राऽ	दा	रा	दा	ऽ								
								नी	रेंरें	गग	म॑म॑	गंऽ	गरें	ऽरें	सांऽ
								दा	दिर	दिर	दिर	दाऽ	रदा	ऽर	दाऽ
नीऽ	नीध	धऽ	पऽ	म॑ग	रे॒सा										
दाऽ	रदा	ऽर	दाऽ	दिर	दिर										

4.3.4 पूरिया कल्याण राग के तोड़े

• गंगं	रेंगं	गरें	गंगं	रेंसां	नीसां	रेंसां	नीसां
• मंध	नीसां	रेंसां	नीसां	नीनी	धप	नीध	नीसां
• मंध	नीध	रेंसां	नीसां	गंगं	रेंसां	रेंसां	नीसां
• गमं	धनी	सांऽ	सांऽ	सांऽ	ऽऽ		
• सांनी	धप	मंग	रेसा	ऩीरे	गमं		
• गंगं	रेंगं	गरें	गंगं	रेंसां	नीसां	रेंसां	नीसां
• मंध	नीसां	रेंसां	नीसां	नीनी	धप	नीध	नीसां
• मंध	नीध	रेंसां	नीसां	गंगं	रेंसां	रेंसां	नीसां
• मंध	धनी	धनी	नीसां	रेंसां	नीसां	नीध	नीसां
• ऩीरे	गमं	धनी	नीध	पमं	गरे	गग	रेसा
गग	रेसा	ऩीसा					
• ऩीरे	गमं	पमं	गरे	गग	रेसा	ऩीरे	गमं
पमं	गरे	साऽ					

- ऩीरे॒ रे॒ग रे॒ग गम॑ गम॑ म॑प पम॑ गरे॒
  गग रे॒सा ऩीसा

- ऩीरे॒ गग रे॒सा गग रे॒ग गरे॒ ग रे॒सा
  रे॒ग रे॒सा ऩीसा

- ऩीरे॒ गम॑ पम॑ गरे॒ गम॑ पम॑ गरे॒ गरे॒
  गग रे॒सा ऩीसा

- नी रे॒ ऽ रे॒ ग ऽ ग म॑ ऽ म॑ ध ऽ ध नी ऽ नी
  सां ऽ नी ध

- ऽ ध म॑ ऽ ग रे॒ सा ऽ ऽ प ऽ प ग ऽ ऽ ऽ
  ऽ प ऽ प ग ऽ ऽ ऽ

- नीनी धप म॑प धप म॑प गम॑ गरे॒ साऽ
  गम॑ पग म॑प गम॑

- ऩीऽ रे॒ऽ गऽ म॑ऽ पऽ ऽऽ

- ऩीरे॒ ग,रे॒ गम॑, गम॑ प,म॑ पध

- म॑ध धनी धनी नीसां रे॒सां नीसां नीध नीसां

- गग रे॒सा ऩीसा रे॒सा ऩीऩी ध़प़ म़॑प़ ध़प़
  म़॑ध़ ऩीरे॒ सासा ऩीसा नीरे॒ गम॑ पम॑ गम॑
  गम॑ धनी सांनी धप म॑ध नीरें गरें सांसां
  नीरें सांनी धप म॑प म॑ध पम॑ गरे॒ सासा
  ऩीरे॒ गम॑ पम॑ गरे॒ साऽ पम॑ गरे॒ साऽ
  पम॑ गरे॒ साऽ ऩीरे॒ गम॑ पम॑ गरे॒ साऽ
  पम॑ गरे॒ साऽ पम॑ गरे॒ साऽ ऩीरे॒ गम॑
  पम॑ गरे॒ साऽ पम॑ गरे॒ साऽ पम॑ गरे॒

- म़म़ म़॑,ध़ ध़ध़, ऩीऩी, ध़ध़ ध़,ऩी ऩीऩी, सासा,
  ऩीऩी ऩी,सा सासा, रे॒रे॒,

- सासा सा,रे॒ रे॒रे॒, गग, रे॒रे॒ रे॒,ग गग, म॑म॑,
  गग ग,म॑ म॑म॑, पप,

- म॑म॑ म॑,प पप, धध, म॑म॑ म॑,ध धध, नीनी,
  धध ध,नी नीनी, सांसां,

- नीनी नी,सां सांसा, रेंरें, सांसां सां,नी नीनी, धध
  ध,प पप, म॑म, म॑ग

- गग, रे॒रे॒ रे॒,सा सासा, ऩीरे॒ गम॑ पऽ ऽऽ
  ऽऽ ऩीरे॒ गम॑ पऽ ऽऽ ऽऽ ऩीरे॒ गम॑

स्वयं जांच अभ्यास 1

4.1 राग पूरिया कल्याण का संवादी स्वर कौन सा है?

(क) मं

(ख) नी

(ग) ग

(घ) सा

4.2 राग पूरिया कल्याण का वादी स्वर कौन सा है?

(क) मं

(ख) प

(ग) ग

(घ) सा

4.3 राग पूरिया कल्याण को अधिकतर किस स्वर से आरम्भ किया जाता है?

(क) मं

(ख) प़

(ग) सा

(घ) ऩी

4.4 राग पूरिया कल्याण की मुख्य स्वरसंगति कौन सी है?

(क) मंगमं

(ख) रे॒मॆग

(ग) मॆधग

(घ) साऩीसा

4.5 राग पूरिया कल्याण का समप्रकृतिक राग कौन सा है?

(क) भीमपलासी

(ख) पूरिया धनश्री

(ग) सोहनी

(घ) हंसध्वनि

4.6 राग पूरिया कल्याण किन रागों का मिश्रण है?

(क) पूरिया तथा यमन

(ख) पूरिया तथा धनश्री

(ग) सोहनी तथा पूरिया

(घ) पूरिया तथा मारवा

4.4 सारांश

पूरिया कल्याण राग भारतीय शास्त्रीय संगीत का प्रचलित राग है। शास्त्रीय संगीत गायन के अंतर्गत इस राग को बजाया जाता है। पूरिया कल्याण राग का थाट मारवा है। इस राग की जाति संपूर्ण है तथा वादी स्वर गांधार, संवादी स्वर निषाद है। राग में कोमल रिषभ तथा तीव्र मध्यम का प्रयोग होता है व अन्य स्वर शुद्ध हैं। यह राग पूरिया तथा कल्याण रागों का मिश्रण है। इसमें रे॒ मॆ ग स्वरों की संगति विशेष है। इसका समप्रकृतिक राग पूरिया धनाश्री है। विभिन्न प्रकार के तोड़ों को इसमें लयकारियों के साथ बजाया जाता है।

4.5 शब्दावली

- द्रुत गत: उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में वादन के अंतर्गत द्रुत लय में बजाए जाने वाली गत।
- आलाप: वादन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, अनिबद्ध (ताल रहित) रूप से राग के स्वरों का विस्तार धीमी लय में करना, आलाप कहलाता है।
- द्रुत लय: वादन/गायन के अंतर्गत जब लय बहुत तेज गति मे चलती है तो उसे द्रुत लय कहते हैं।
- विलंबित लय: वादन/गायन के अंतर्गत जब लय बहुत धीमी गति मे चलती है तो उसे विलंबित लय कहते हैं।
- लय: गायन/वादन में बीत रहे समय की समान गति को 'लय' कहा जाता है।

4.6 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

स्वयं जांच अभ्यास 1

4.1 (ख)

4.2 (ग)

4.3 (घ)

4.4 (ख)

4.5 (ख)

4.6 (क)

4.7 संदर्भ

मिश्रा, लालमणि. (1979). तंत्रीनाद. साहित्य रत्नालय, कानपुर।

मृत्युंजय, डॉ. शर्मा. (2005). तांत्रिक विज्ञान, प्रतिभा स्पंदन प्रकाशन शिमला।

चौधरी, देबू. (1981). सितार और इसकी तकनीकें. एवन बुक कंपनी, दिल्ली।

बंधोपाध्याय, श्रीपद. (1977). सितार मार्ग (भाग 2). भारतीय संगीत साहित्य प्रकाशन, दिल्ली।

मृत्युंजय, डॉ. शर्मा. (2000). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

4.8 अनुशंसित पठन

बंधोपाध्याय, श्रीपद. (1977). सितार मार्ग (भाग 1). भारतीय संगीत साहित्य प्रकाशन, दिल्ली।

भीकन खान, यू.अनवर खान. (1972). सितार दर्पण. भारतीय संगीत नृत्य महाविद्यालय, बड़ौदा।

बंधोपाध्याय, श्रीपद. (1977). सितार मार्ग (भाग 3). भारतीय संगीत साहित्य प्रकाशन, दिल्ली।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2008). तंत्रिका विज्ञान, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2005). स्वर सरिता, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

झा, पं. रामाश्रय. (2040). अभिनव गीतांजलि (भाग 1-5), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

4.9 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. राग पूरिया कल्याण का परिचय लिखिए।

प्रश्न 2. राग पूरिया कल्याण के आलाप को लिखिए।

प्रश्न 3. राग पूरिया कल्याण की द्रुत गत को तोड़ों सहित लिखिए।

प्रश्न 4 राग पूरिया कल्याण के आलाप को बजा कर सुनाइए।

प्रश्न 5. राग पूरिया कल्याण की द्रुत गत को तोड़ों सहित बजा कर सुनाइए।

इकाई-5
राग अहीर भैरव - बड़ा ख्याल

इकाई की रूपरेखा

5.1 भूमिका

5.2 उद्देश्य तथा परिणाम

5.3 अहीर भैरव राग का परिचय, आलाप, बड़ा ख्याल, तानें

5.3.1 अहीर भैरव राग का परिचय

5.3.2 अहीर भैरव राग का आलाप

5.3.3 अहीर भैरव राग का बड़ा ख्याल

5.3.4 अहीर भैरव राग की तानें

स्वयं जांच अभ्यास 1

5.4 सारांश

5.5 शब्दावली

5.6 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

5.7 संदर्भ

5.8 अनुशंसित पठन

5.9 पाठगत प्रश्न

5.1 भूमिका

संगीत (गायन तथा वादन) स्नात्कोत्तर के क्रियात्मक पाठ्यक्रम की इस इकाई में गायन संगीत के संदर्भ में, राग अहीर भैरव का परिचय, आलाप, बड़ा ख्याल तथा तानों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति के माध्यम से विस्तार पूर्वक प्रस्तुत किया गया है। उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में रागों का प्रस्तुतिकरण विशेष रूप से होता है, जो सुनने में मधुरता से युक्त, कर्णप्रिय, वैचित्रतापूर्ण तथा आनंददायक होता है। आज के समय में शास्त्रीय संगीत के कलाकार रागों को अपने मंच प्रदर्शन के समय प्रस्तुत करते हैं। प्रस्तुत राग का, शास्त्रीय संगीत के अतिरिक्त, सुगम संगीत व फिल्मी संगीत में भी प्रयुक्त होता है, जिसके आधार पर कई मधुर गीतों, भजनों, गजलों इत्यादि का निर्माण हुआ है तथा हो रहा है। इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी राग अहीर भैरव के स्वरूप के साथ-साथ उसके आलाप, बड़ा ख्याल तथा तानों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति में लिख सकने का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे। साथ ही क्रियात्मक रूप से अहीर भैरव का आलाप, बड़ा ख्याल तथा तानों को गा सकेंगे।

5.2 उद्देश्य तथा परिणाम

सीखने के उद्देश्य

- अहीर भैरव ण राग के स्वरूप की संक्षिप्त जानकारी प्रदान करना।
- अहीर भैरव राग के आलाप, बड़ा ख्याल तथा तानों को भातखंडे स्वरलिपि में लिखने की क्षमता विकसित करना।
- अहीर भैरव राग के आलाप, बड़ा ख्याल तथा तानों को गाने की क्षमता विकसित करना।
- विद्यार्थी को गायन के दौरान सुधार करने का प्रयास करने के लिए प्रोत्साहित करना।

सीखने के परिणाम

- विद्यार्थी गायन के तकनीकी पहलुओं से अच्छी तरह परिचित हो जाएगा
- अहीर भैरव राग का परिचय, आलाप, बड़ा ख्याल, तानों को लिखने की निपुणता प्राप्त करने में सक्षम होंगे।

- अहीर भैरव राग के आलाप, बड़ा ख्याल, तानों को गाने में सक्षम होंगे।
- राग अहीर भैरव के विभिन्न रचनात्मक पहलुओं को क्रियात्मक रूप से प्रदर्शित करने की क्षमता विकसित होगी और अनुभव भी प्राप्त होगा।

5.3 अहीर भैरव राग का परिचय, आलाप, बड़ा ख्याल, तानें

5.3.1 अहीर भैरव राग का परिचय

राग - अहीर भैरव

थाट – भैरव

जाति - संपूर्ण

वादी - मध्यम

संवादी – षड्ज

स्वर - रिषभ कोमल, निषाद कोमल तथा अन्य स्वर शुद्ध

न्यास के स्वर – रिषभ, मध्यम, षड्ज

समय – प्रातःकाल

आरोह - सा रे ग म प ध नी सां

अवरोह - सां नी ध प म ग रे सा

पकड़ - ग म रे ऽ रे सा, नी ध़ नी रे ऽ रे सा

मधुर व लोकप्रिय अहीर भैरव राग का थाट भैरव है। इस राग की जाति संपूर्ण है। अहीर भैरव राग का वादी स्वर मध्यम तथा संवादी स्वर षड़ज है। प्रस्तुत राग में कोमल रिषभ तथा कोमल निषाद का प्रयोग होता है व अन्य स्वर शुद्ध हैं। इस

राग का गायन समय प्रात:काल माना जाता है। इस राग में रिषभ, मध्यम, षड्ज पर न्यास किया जाता है। यह राग भैरव तथा खमाज रागों का मिश्रण है। इसमें ध़ ऩी रे ऽ सा स्वरों की संगति विशेष है। म रे संगति तथा रिषभ पर आन्दोलन भैरव अंग का परिचायक है। इस राग में रिषभ स्वर का बहुत्व प्रयोग होता है (सा, रेऽरेऽ सा, ग म रेऽरेऽ सा)। इस राग की चलन तीनों सप्तकों में समान रूप से होता है।

5.3.2 आलाप

- सा, रे ऽ रेऽ सा, ऩी सा ध़ नी रे ऽ रेऽ सा सा
- सा ऩी सा ऩी ध़ ध़ नी ध़ सा ऩी रे सा, सा रे ग म रेऽ रे सा।
- सा रे ग, म रे ऽ रे ग, ऩी सा ध़ ऩी रेऽ ग,

  ग ग म प ग म रेऽ सा ऽ रे ग, नी सा ध़ ऩीरेऽ रे ग म रे सा ऽऽरे ग म।
- ग म, प ग म रे रे सा रे ग म प म,
- सा रे ग ऽ रे ग म ऽ प म ग ध ऽ ध नी ध प म,

  प ग म रेऽ रे सा, नी सा ध़ ऩी रे ऽ रे ऽ सा।
- ग म प ध ऽ ध नी ध नी नी सां, ध नी रेंऽ रें ऽ सां।
- गं मं रें ऽ रें सां, सां नी ध ध नी ध सां नी ध प म,

  ग म रे रे सा ध़ नी रे ऽ रे ऽ सा सा

5.3.3 अहीर भैरव बड़ा ख्याल द्रुत लय 1/4 एक ताल

स्थायी

भज मन राम पूरन होवे सब काम।।

4							
11				12			
सा,	$^{\text{सा}}$ग	मधपध	ग(म) -,	$^{\text{ग}}$रे-	नी-$^{\text{ध}}$सां	सानी	सारे$^{\text{ग}}$
ऽ	भ	जऽऽऽ	ऽऽऽ,	रेऽ	ऽऽऽ	ऽऽ	मन
x							
1				2			
ग	-	-	-,	(रे)	-	ग	म
रा	ऽ	ऽ	ऽ,	म	ऽ	ऽ	ऽ
0							
3				4			
ग	म	ग	म,	प$^{\text{म}}$	-	-	प
पू	ऽ	ऽ	ऽ,	र	ऽ	ऽ	न
2							
5				6			
धपध	-	पम	-,	पमप	-	धपमग	-
होऽऽ	ऽ	ऽ	ऽ,	वेऽऽ	ऽ	ऽऽऽ	ऽऽ

0							
7				8			
गमपध	नी	ध	नीधसांनी,	ध	-	प	-
स॒ऽऽऽ	ऽ	ऽ	ऽऽऽऽ,	ब	ऽ	ऽ	ऽ

3							
9				10			
धपध	-	पम	-,	प	मग	गमपगम	रे
काऽऽ	ऽ	ऽऽ	ऽ,	ऽ	ऽऽ	ऽऽऽऽऽ	म

अन्तरा

राम स्नेही जीवन ये है

औरन से क्या काम।।

4							
11				12			
सा,	म	ध	नी,	सां	-	धनी	रें
ऽ,	रा	म	स्	ने	ऽ	ऽऽ	ऽ

x							
1				2			
सां	-	-	-,	सारें	गंमं	-	गं(मं)
ही	ऽ	ऽ	ऽ,	जीऽ	ऽऽ	ऽ	ऽऽ

0								
3				4				
रें	-	सां	-,	सांनीसां	नीधप	धप	धनी	
व	ऽ	न	ऽ,	येऽऽ	ऽऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	
2								
5				6				
ध	प	म	-,	मम	मसां	धनी	रें	
है	ऽ	ऽ	ऽ,	और	नऽ	ऽऽ	ऽ	
0								
7				8				
सां	-	-	-,	सां	नी	ध	प	
से	ऽ	ऽ	ऽ,	क्या	ऽ	ऽ	ऽ	
3								
9				10				
धपध	-	पम	-,	म	ग	गमपगम	रे	
काऽऽ	ऽ	ऽऽ	ऽ,	ऽ	ऽ	ऽऽऽऽऽ	म	

5.3.4 अहीर भैरव राग की तानें

धऩी	साध़	ऩीसा	धऩी	रेसा	ऩीध़	गम	पग
मप	गम	नीध	पम	धनी	सांध	नीसां	धनी
रेंसां	नीध	गम	पम	गम	रेसा	गम	रेसा
ऽध़	ऽऩी	रेऽ	ऽध़	ऽऩी	रेऽ	ऽध़	ऽऩी

सां नी ऽ नी	ध ऽ ध प	ऽ प म ऽ	म ग ऽ ग
रे ऽ रे सा	ग म रे ऽ	सा ऽ सा ऽ	ग ऽ म ऽ
रे ऽ ऽ ऽ	सा ऽ सा ऽ		

ध़ ऩीऩी सा रे	सा ऩी ध़ ऩी	ध़ ऩी रे सा	सा रे ग म
सा रेरे ग म	प म ग म	ग मम प ध	नी सां नी रें
सां नीनी ध नी	ध प म प	ग म रे सा	

म़प़प़ध़ऩनी	सारेसाऩी	ध़ऩीऩीसारे	सारेगम
गममपध	नीधपध	पममगम	गरेसाऽ
ध़ऽऩीरे	ध़ऽऩीरे	ध़ऽऩीरे	

ध़ऩीऩीसाध़	ऩीऩीसाध़ऩी	ध़ऩीऩीसारे	साऩीऩीध़ऩी
सारेरेगसा	रेरेगसारे	सारेरेगम	पमगम
गममपग	ममपगम	गममपध	नीधपध
पधधनीप	धधनीपध	पधधनीसां	रेंसांनीसां
गंरेंसांरें	सांनीधप	मगरेसा	गरेसाऩी
ऽध़ऽऩी	रेऽऽऽ	गरेससाऩी	ऽध़ऽऩी
रेऽऽऽ	गरेसाऩी	ऽध़ऽऩी	

ध़ऩीसारेऩीसा	ऩीसारेगरेसा	सारेगमगरे	रेगमपमग
गमपधपम	मपधनीधप	पधनीसांनीध	धनीसांरेंसांनी
पधनीधपम	गमपमगरे	रेगमगरेसा	ध़ऩीरेसाऩीध़
ध़ऩीसाऩीध़ऩी	रेऽऽध़ऩीसा	ऩीध़ऩीरेऽऽ	ध़ऩीसाऩीध़ऩी

स्वयं जांच अभ्यास 1

5.1 राग अहीर भैरव का वादी स्वर कौन सा है?

(क) म

(ख) प

(ग) ग

(घ) सा

5.2 राग अहीर भैरव का संवादी स्वर कौन सा है?

(क) म

(ख) नी

(ग) ग

(घ) सा

5.3 राग अहीर भैरव की मुख्य स्वरसंगति कौन सी है?

(क) रे ग रे सा

(ख) ध़ नी रे ऽ रे सा

(ग) ग म ध नी सां

(घ) साऩीसा

5.4 राग अहीर भैरव का गायन समय क्या माना जाता है?

(क) दोपहर

(ख) दिन का चौथा प्रहर

(ग) सांयकाल

(घ) दिन का प्रथम प्रहर

5.5 राग अहीर भैरव का समप्रकृतिक राग कौन सा है?

(क) भैरव

(ख) पूरिया धनश्री

(ग) सोहनी

(घ) हंसध्वनि

5.6 राग अहीर भैरव किन रागों का मिश्रण है?

(क) पूरिया तथा यमन

(ख) खमाज तथा भैरव

(ग) भैरव तथा पूरिया

(घ) भैरव तथा यमन

5.4 सारांश

अहीर भैरव राग भारतीय शास्त्रीय संगीत का प्रचलित राग है। शास्त्रीय संगीत गायन के अंतर्गत इस राग को गाया जाता है। अहीर भैरव राग का थाट भैरव है। इस राग की जाति संपूर्ण है। अहीर भैरव राग का वादी स्वर मध्यम तथा संवादी स्वर षड़ज है। त राग में कोमल रिषभ तथा कोमल निषाद का प्रयोग होता है व अन्य स्वर शुद्ध हैं। इस राग का गायन समय प्रात:काल माना जाता है। इस राग में रिषभ, मध्यम, षड्ज पर न्यास किया जाता है। विभिन्न प्रकार की तानों को इसमें लयकारियों के साथ गाया जाता है।

5.5 शब्दावली

- विलंबित ख्याल/बड़ा ख्याल: गायन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, ऐसी गीत रचना, जो स्वरबद्ध, तालबद्ध व लयबद्ध हो तथा विलंबित लय में गाई जाती हो उसे बड़ा ख्याल कहते हैं।
- तान: साधारण रूप से राग के स्वरों का विस्तार जब विभिन्न प्रकार की लयों तथा लयकारियों में बांधकर, गाया जाता है तो उसे तान कहते हैं।
- आलाप: वादन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, अनिबद्ध (ताल रहित) रूप सें राग के स्वरों का विस्तार धीमी लय में करना, आलाप कहलाता है।
- विलंबित लय: वादन/गायन के अंतर्गत जब लय बहुत धीमी गति मे चलती है तो उसे विलंबित लय कहते हैं।
- लय: गायन/वादन में बीत रहे समय की समान गति को 'लय' कहा जाता है।

5.6 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

स्वयं जांच अभ्यास 1

5.1 (क)

5.2 (ख)

5.3 (ख)

5.4 (घ)

5.5 (क)

5.6 (ख)

5.7 संदर्भ

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2015). राग परिचय (भाग 1-4), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

भातखंडे, विष्णुनारायण. (1970). कर्मिक पुस्तक मलिका. खंड 1-6, संगीत कार्यालय हाथरस

मिश्र, शंकर लाल (1998).नवीन ख्याल रचनावली, अभिषेक पब्लिकेशन, चंडीगढ

मृत्युंजय, डॉ. शर्मा. (2000). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

5.8 अनुशंसित पठन

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2015). राग परिचय (भाग 1-4), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (1998). मधुर स्वरलिपि संग्रह. संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2008). तंत्रिका विज्ञान, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

अत्रे, डॉ. प्रभा. (2007). स्वरंजनी रात्रिकालीन रागों की बंदिशों का संकलन, बी. आर. रिदम्स, दिल्ली।

मिश्र, शंकर लाल (1998).नवीन ख्याल रचनावली, अभिषेक पब्लिकेशन, चंडीगढ

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2005). स्वर सरिता, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

झा, पं. रामाश्रय. (2040). अभिनव गीतांजलि (भाग 1-5), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

5.9 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. राग अहीर भैरव का परिचय लिखिए।

प्रश्न 2. राग अहीर भैरव के आलाप को लिखिए।

प्रश्न 3. राग अहीर भैरव में विलम्बित ख्याल को तानों सहित लिखिए।

प्रश्न 4 राग अहीर भैरव के आलाप को गा कर सुनाइए।

प्रश्न 5. राग अहीर भैरव के विलम्बित ख्याल को तानों सहित गा कर सुनाइए।

इकाई-6
राग अहीर भैरव - छोटा ख्याल

इकाई की रूपरेखा

6.1 भूमिका

6.2 उद्देश्य तथा परिणाम

6.3 अहीर भैरव राग का परिचय, आलाप, छोटा ख्याल, तानें

6.3.1 अहीर भैरव राग का परिचय

6.3.2 अहीर भैरव राग का आलाप

6.3.3 अहीर भैरव राग का छोटा ख्याल

6.3.4 अहीर भैरव राग की तानें

स्वयं जांच अभ्यास 1

6.4 सारांश

6.5 शब्दावली

6.6 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

6.7 संदर्भ

6.8 अनुशंसित पठन

6.9 पाठगत प्रश्न

6.1 भूमिका

संगीत (गायन तथा वादन) स्नात्कोत्तर के क्रियात्मक पाठ्यक्रम की इस इकाई में गायन संगीत के संदर्भ में, राग अहीर भैरव का परिचय, आलाप, छोटा ख्याल तथा तानों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति के माध्यम से विस्तार पूर्वक प्रस्तुत किया गया है। उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में रागों का प्रस्तुतिकरण विशेष रूप से होता है, जो सुनने में मधुरता से युक्त, कर्णप्रिय, वैचित्रतापूर्ण तथा आनंददायक होता है। आज के समय में शास्त्रीय संगीत के कलाकार रागों को अपने मंच प्रदर्शन के समय प्रस्तुत करते हैं। प्रस्तुत राग का, शास्त्रीय संगीत के अतिरिक्त, सुगम संगीत व फिल्मी संगीत में भी प्रयुक्त होता है, जिसके आधार पर कई मधुर गीतों, भजनों, गजलों इत्यादि का निर्माण हुआ है तथा हो रहा है। इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी राग अहीर भैरव के स्वरूप के साथ-साथ उसके आलाप, छोटा ख्याल तथा तानों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति में लिख सकने का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे। साथ ही क्रियात्मक रूप से राग अहीर भैरव का आलाप, छोटा ख्याल तथा तानों को गा सकेंगे।

6.2 उद्देश्य तथा परिणाम

सीखने के उद्देश्य

- अहीर भैरव राग के स्वरूप की संक्षिप्त जानकारी प्रदान करना।
- अहीर भैरव राग के आलाप, छोटा ख्याल तथा तानों को भातखंडे स्वरलिपि में लिखने की क्षमता विकसित करना।
- अहीर भैरव राग के आलाप, छोटा ख्याल तथा तानों को गाने की क्षमता विकसित करना।
- विद्यार्थी को गायन के दौरान सुधार करने का प्रयास करने के लिए प्रोत्साहित करना।

सीखने के परिणाम

- विद्यार्थी गायन के तकनीकी पहलुओं से अच्छी तरह परिचित हो जाएगा
- अहीर भैरव राग का परिचय, आलाप, छोटा, तानों को लिखने की निपुणता प्राप्त करने में सक्षम होंगे।

- अहीर भैरव राग के आलाप, छोटा ख्याल, तानों को गाने में सक्षम होंगे।
- राग अहीर भैरव के विभिन्न रचनात्मक पहलुओं को क्रियात्मक रूप से प्रदर्शित करने की क्षमता विकसित होगी और अनुभव भी प्राप्त होगा।

6.3 अहीर भैरव राग का परिचय, आलाप, छोटा ख्याल, तानें

6.3.1 अहीर भैरव राग का परिचय

राग - अहीर भैरव

थाट – भैरव

जाति - संपूर्ण

वादी - मध्यम

संवादी – षड्ज

स्वर - रिषभ कोमल, निषाद कोमल तथा अन्य स्वर शुद्ध

न्यास के स्वर – रिषभ, मध्यम, षड्ज

समय – प्रातःकाल

आरोह - सा रे ग म प ध नी सां

अवरोह - सां नी ध प म ग रे सा

पकड़ - ग म रे ऽ रे सा, नी ध़ नी रे ऽ रे सा

मधुर व लोकप्रिय अहीर भैरव राग का थाट भैरव है। इस राग की जाति संपूर्ण है। अहीर भैरव राग का वादी स्वर मध्यम तथा संवादी स्वर षड़ज है। प्रस्तुत राग में कोमल रिषभ तथा कोमल निषाद का प्रयोग होता है व अन्य स्वर शुद्ध हैं। इस

राग का गायन समय प्रात:काल माना जाता है। इस राग में रिषभ, मध्यम, षड्ज पर न्यास किया जाता है। यह राग भैरव तथा खमाज रागों का मिश्रण है। इसमें ध़ ऩी रे ऽ सा स्वरों की संगति विशेष है। म रे संगति तथा रिषभ पर आन्दोलन भैरव अंग का परिचायक है। इस राग में रिषभ स्वर का बहुत्व प्रयोग होता है (सा, रेऽरेऽ सा, ग म रेऽरेऽ सा)। इस राग की चलन तीनों सप्तकों में समान रूप से होता है।

6.3.2 आलाप

- सा, रे ऽ रेऽ सा, ऩी सा ध़ नी रे ऽ रेऽ सा सा
- सा ऩी सा ऩी ध़ ध़ नी ध़ सा ऩी रे सा, सा रे ग म रेऽ रे सा।
- सा रे ग, म रे ऽ रे ग, ऩी सा ध़ ऩी रेऽ ग,

  ग ग म प ग म रेऽ सा ऽ रे ग, नी सा ध़ ऩीरेऽ रे ग म रे सा ऽऽरे ग म।
- ग म, प ग म रे रे सा रे ग म प म,
- सा रे ग ऽ रे ग म ऽ प म ग ध ऽ ध नी ध प म,

  प ग म रेऽ रे सा, नी सा ध़ ऩी रे ऽ रे ऽ सा।
- ग म प ध ऽ ध नी ध नी नी सां, ध नी रेंऽ रें ऽ सां।
- गं मं रें ऽ रें सां, सां नी ध ध नी ध सां नी ध प म,

  ग म रे रे सा ध़ नी रे ऽ रे ऽ सा सा

6.3.3 अहीर भैरव का छोटा ख्याल

द्रुत लय तीन ताल

स्थाई

बन्दो राम को निसदिन,

जन्म-मरण दुःख दूर करन को॥

अन्तरा

सुमिर तू निसदिन हरि चरन को,

भव सागर जल पार करन को॥

x				2				0				3			
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
स्थाई															
								सा	मग	पम	रे^{ग}	सा	ध़	-	नी
								बं	ऽऽ	ऽऽ	दो	ऽ	रा	ऽ	म
रे	-	सा	-	सा	रे	ग	म								
को	ऽ	ऽ	ऽ	नी	स	दि	न								
								ध़	नी	सा	रे	ग	म	प	ध
								ज	न्	म	म	र	ण	दुः	ख
ऩीध	पध	नीध	प	ग	म	रे	सा								
दूऽ	ऽऽ	ऽर	क	र	न	को	ऽ								

x				**2**				**0**				**3**			
1	**2**	**3**	**4**	**5**	**6**	**7**	**8**	**9**	**10**	**11**	**12**	**13**	**14**	**15**	**16**
अन्तरा															
								म	म	प	ध	नी	सां	सां	सां
								सु	मि	र	तू	नी	स	दि	न
सां	सां	ध	नी	रें	रें	सां	ऽ								
ह	रि	ऽ	च	र	न	को	ऽ								
								सां	रें	गं	मं	रें	रें	सा	नी
								भ	व	सा	ऽ	ग	र	ज	ल
नीध	पध	नीध	प	ग	म	रे	सा								
पाऽ	ऽऽ	ऽर	क	र	न	को	ऽ								

6.3.4 अहीर भैरव राग की तानें

- गऽ मऽ धऽ नीऽ रेंऽ सांऽ
- गम पध नीध पम गम रेसा
- गम धनी धप मप गम रेसा

- म़प़ ध़ऩी साऩी ध़ऩी रेऽ साऽ
- ध़ऩी रेसा ध़ऩी रेसा ध़ऩी रेसा
- ध़ऩी रेसा गम पम गम रेसा
- साग मप गम पम गम रेस
- पम गम नीध पम गम रेसा
- ध़ऩी साध़ ऩीसा ध़ऩी रेसा ऩीध़ गम पग
  मप गम नीध पम धनी सांध नीसां धनी
  रेंसां नीध गम पम गम रेसा गम रेसा
  ऽध़ ऽऩी रेऽ ऽध़ ऽऩी रेऽ ऽध़ ऽऩी
- नी ऽ नी ध ऽ ध प ऽ प म ऽ म ग ऽ ग
  रे ऽ रे सा ग म रे ऽ सा ऽ सा ऽ ग ऽ म ऽ
  रे ऽ ऽ ऽ सा ऽ सा ऽ

स्वयं जांच अभ्यास 1

6.1 राग अहीर भैरव का वादी स्वर कौन सा है?

(क) म

(ख) प

(ग) ग

(घ) सा

6.2 राग अहीर भैरव का संवादी स्वर कौन सा है?

(क) म

(ख) नी

(ग) ग

(घ) सा

6.3 राग अहीर भैरव की मुख्य स्वरसंगति कौन सी है?

(क) रे ग रे सा

(ख) ध़ नी रे ऽ रे सा

(ग) ग म ध नी सां

(घ) साऩीसा

6.4 राग अहीर भैरव का गायन समय क्या माना जाता है?

(क) दोपहर

(ख) दिन का चौथा प्रहर

(ग) सांयकाल

(घ) दिन का प्रथम प्रहर

6.5 राग अहीर भैरव का समप्रकृतिक राग कौन सा है?

(क) भैरव

(ख) पूरिया धनश्री

(ग) सोहनी

(घ) हंसध्वनि

6.6 राग अहीर भैरव किन रागों का मिश्रण है?

(क) पूरिया तथा यमन

(ख) खमाज तथा भैरव

(ग) भैरव तथा पूरिया

(घ) भैरव तथा यमन

6.4 सारांश

अहीर भैरव राग भारतीय शास्त्रीय संगीत का प्रचलित राग है। शास्त्रीय संगीत गायन के अंतर्गत इस राग को गाया जाता है। अहीर भैरव राग का थाट भैरव है। इस राग की जाति संपूर्ण है। अहीर भैरव राग का वादी स्वर मध्यम तथा संवादी स्वर षड़ज है। त राग में कोमल रिषभ तथा कोमल निषाद का प्रयोग होता है व अन्य स्वर शुद्ध हैं। इस राग का गायन समय प्रात:काल माना जाता है। इस राग में रिषभ, मध्यम, षड्ज पर न्यास किया जाता है। विभिन्न प्रकार की तानों को इसमें लयकारियों के साथ गाया जाता है।

6.5 शब्दावली

- छोटा ख्याल: गायन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, ऐसी गीत रचना, जो स्वरबद्ध, लयबद्ध व तालबद्ध हो तथा मध्य या द्रुत लय में गाई जाती हो उसे छोटा ख्याल कहते हैं।

- तान: साधारण रूप से राग के स्वरों का विस्तार जब विभिन्न प्रकार की लयों तथा लयकारियों में बांधकर, गाया जाता है तो उसे तान कहते हैं।
- आलाप: वादन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, अनिबद्ध (ताल रहित) रूप सें राग के स्वरों का विस्तार धीमी लय में करना, आलाप कहलाता है।
- लय: गायन/वादन में बीत रहे समय की समान गति को 'लय' कहा जाता है।
- द्रुत लय: वादन/गायन के अंतर्गत जब लय बहुत तेज गति मे चलती है तो उसे द्रुत लय कहते हैं।

6.6 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

स्वयं जांच अभ्यास 1

6.1 (क)

6.2 (ख)

6.3 (ख)

6.4 (घ)

6.5 (क)

6.6 (ख)

6.7 संदर्भ

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2015). राग परिचय (भाग 1-4), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

मिश्र, शंकर लाल (1998).नवीन ख्याल रचनावली, अभिषेक पब्लिकेशन, चंडीगढ

भातखंडे, विष्णुनारायण. (1970). कर्मिक पुस्तक मलिका. खंड 1-6, संगीत कार्यालय हाथरस

मृत्युंजय, डॉ. शर्मा. (2000). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

6.8 अनुशंसित पठन

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2015). राग परिचय (भाग 1-4), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (1998). मधुर स्वरलिपि संग्रह. संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

अत्रे, डॉ. प्रभा. (2007). स्वरंजनी रात्रिकालीन रागों की बंदिशों का संकलन, बी. आर. रिदम्स, दिल्ली।

मिश्र, शंकर लाल (1998).नवीन ख्याल रचनावली, अभिषेक पब्लिकेशन, चंडीगढ

झा, पं. रामाश्रय. (2040). अभिनव गीतांजलि (भाग 1-5), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

6.9 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. राग अहीर भैरव का परिचय लिखिए।

प्रश्न 2. राग अहीर भैरव के आलाप को लिखिए।

प्रश्न 3. राग अहीर भैरव में छोटा ख्याल को तानों सहित लिखिए।

प्रश्न 4 राग अहीर भैरव के आलाप को गा कर सुनाइए।

प्रश्न 5. राग अहीर भैरव के छोटा ख्याल को तानों सहित गा कर सुनाइए।

इकाई-7
राग अहीर भैरव - विलंबित गत

इकाई की रूपरेखा

7.1 भूमिका

7.2 उद्देश्य तथा परिणाम

7.3 अहीर भैरव राग का परिचय, आलाप, विलम्बित गत, तोड़े

- 7.3.1 अहीर भैरव राग का परिचय
- 7.3.2 अहीर भैरव राग का आलाप
- 7.3.3 अहीर भैरव राग की विलम्बित गत
- 7.3.4 अहीर भैरव राग की तोड़े
- स्वयं जांच अभ्यास 1

7.4 सारांश

7.5 शब्दावली

7.6 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

7.7 संदर्भ

7.8 अनुशंसित पठन

7.9 पाठगत प्रश्न

7.1 भूमिका

संगीत (गायन तथा वादन) स्नात्कोत्तर के क्रियात्मक पाठ्यक्रम की इस इकाई में वादन संगीत के संदर्भ में, राग अहीर भैरव का परिचय, आलाप, विलंबित गत तथा तोड़ों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति के माध्यम से विस्तार पूर्वक प्रस्तुत किया गया है। उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में रागों का प्रस्तुतिकरण विशेष रूप से होता है, जो सुनने में मधुरता से युक्त, कर्णप्रिय, वैचित्रतापूर्ण तथा आनंददायक होता है। आज के समय में शास्त्रीय संगीत के कलाकार रागों को अपने मंच प्रदर्शन के समय प्रस्तुत करते हैं। प्रस्तुत राग का, शास्त्रीय संगीत के अतिरिक्त, सुगम संगीत व फिल्मी संगीत में भी प्रयुक्त होता है, जिसके आधार पर कई मधुर गीतों, भजनों, गजलों इत्यादि का निर्माण हुआ है तथा हो रहा है। इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी राग अहीर भैरव के स्वरूप के साथ-साथ उसके आलाप, विलंबित गत तथा तोड़ों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति में लिख सकने का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे। साथ ही क्रियात्मक रूप से राग अहीर भैरव का आलाप, विलंबित गत तथा तोड़ों को बजा सकेंगे।

7.2 उद्देश्य तथा परिणाम

सीखने के उद्देश्य

- अहीर भैरव राग के स्वरूप की संक्षिप्त जानकारी प्रदान करना।
- अहीर भैरव राग के आलाप, विलंबित गत तथा तोड़ों को भातखंडे स्वरलिपि में लिखने की क्षमता विकसित करना।
- अहीर भैरव राग के आलाप, विलंबित गत तथा तोड़ों को बजाने की क्षमता विकसित करना।
- विद्यार्थी को गायन के दौरान सुधार करने का प्रयास करने के लिए प्रोत्साहित करना।

सीखने के परिणाम

- विद्यार्थी गायन के तकनीकी पहलुओं से अच्छी तरह परिचित हो जाएगा
- अहीर भैरव राग का परिचय, आलाप, विलंबित गत तथा तोड़ों को लिखने की निपुणता प्राप्त करने में सक्षम होंगे।

- अहीर भैरव राग के आलाप, विलंबित गत तथा तोड़ों को बजाने में सक्षम होंगे।
- राग अहीर भैरव के विभिन्न रचनात्मक पहलुओं को क्रियात्मक रूप से प्रदर्शित करने की क्षमता विकसित होगी और अनुभव भी प्राप्त होगा।

7.3 अहीर भैरव राग का परिचय, आलाप, विलंबित गत, तोड़े

7.3.1 अहीर भैरव राग का परिचय

थाट – भैरव

जाति - संपूर्ण

वादी - मध्यम

संवादी – षड्ज

स्वर - रिषभ कोमल, निषाद कोमल तथा अन्य स्वर शुद्ध

न्यास के स्वर – रिषभ, मध्यम, षड्ज

समय – प्रातःकाल

आरोह - सा रे ग म प ध नी सां

अवरोह - सां नी ध प म ग रे सा

पकड़ - ग म रे ऽ रे सा, नी ध़ नी रे ऽ रे सा

मधुर व लोकप्रिय अहीर भैरव राग का थाट भैरव है। इस राग की जाति संपूर्ण है। अहीर भैरव राग का वादी स्वर मध्यम तथा संवादी स्वर षड़ज है। प्रस्तुत राग में कोमल रिषभ तथा कोमल निषाद का प्रयोग होता है व अन्य स्वर शुद्ध हैं। इस राग का गायन समय प्रात:काल माना जाता है। इस राग में रिषभ, मध्यम, षड्ज पर न्यास किया जाता है। यह राग भैरव

तथा खमाज रागों का मिश्रण है। इसमें ध़ ऩी रे ऽ सा स्वरों की संगति विशेष है। म रे संगति तथा रिषभ पर आन्दोलन भैरव अंग का परिचायक है। इस राग में रिषभ स्वर का बहुत्व प्रयोग होता है (सा, रेऽरेऽ सा, ग म रेऽरेऽ सा)। इस राग की चलन तीनों सप्तकों में समान रूप से होता है।

7.3.2 आलाप

- सा, सा, रे ऽ रेऽ सा, ऩी सा ध़ नी रे ऽ रेऽ सा सा
- सा सा ऩी सा ऩी ध़ ध़ नी ध़ सा ऩी रे सा, सा रे ग म रेऽ रे सा।
- सा रे ग, म रे ऽ रे ग, ऩी सा ध़ ऩी रेऽ ग,

  ग ग म प ग म रेऽ सा ऽ रे ग, नी सा ध़ ऩीरेऽ रे ग म रे सा ऽऽरे ग म।
- ग म, प ग म रे रे सा रे ग म प म,
- सा रे ग ऽ रे ग म ऽ प म ग ध ऽ ध नी ध प म,

  प ग म रेऽ रे सा, नी सा ध़ ऩी रे ऽ रे ऽ सा।
- ग म प ध ऽ ध नी ध नी नी सां, ध नी रेंऽ रें ऽ सां।
- गं मं रें ऽ रें सां, सां नी ध ध नी ध सां नी ध प म,

  ग म रे रे सा ध़ नी रे ऽ रे ऽ सा सा

7.3.3 अहीर भैरव विलंबित गत तीन ताल

x				2				0				3			
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
स्थाई															
											गम	रे	सासा	ऩीसा	धऩि
											दारा	दा	दारा	दारा	दारा
रे	रे	सा	सारे	ग	मम	प	धनी	धप	ऽगम	रेसा					
दा	दा	रा	दारा	दा	दारा	दा	दारा	दारा	ऽदारा	दारा					
अन्तरा															
											मम	ग	मम	ध	नी
											दारा	दा	दारा	दा	रा
रें	रें	सां	सांसां	ध	नीनी	रें	सां	गंमं	रें	सां					
दा	दा	रा	दारा	दा	दारा	दा	रा	दारा	दा	रा					
											गंमं	रें	सांसां	नी	ध
											दारा	दा	दारा	दा	रा
प	धध	नी	सां	नी	धध	प	मप	गम	रे	सा					
दा	दारा	दा	रा	दा	दारा	दा	दारा	दारा	दा	रा					

7.3.4 अहीर भैरव के तोड़े

- ध़ ऩीऩी सा रे | सा ऩी ध़ ऩी | ध़ ऩी रे सा | सा रे ग म
  सा रेरे ग म | प म ग म | ग मम प ध | नी सां नी रें
  सां नीनी ध नी | ध प म प | ग म रे सा

- साध़ | ऩीसा | ध़ऩी | रेसा | ऩीध़ | गम | पग
  मप | गम | नीध | पम | धनी | सांध | नीसां | धनी
  रेंसां | नीध | गम | पम | गम | रेसा | गम | रेसा
  ऽध़ | ऽऩी | रेऽ | ऽध़ | ऽऩी | रेऽ | ऽध़ | ऽऩी

- सां नी ऽ नी | ध ऽ ध प | ऽ प म ऽ | म ग ऽ ग
  रे ऽ रे सा | ग म रे ऽ | सा ऽ सा ऽ | ग ऽ म ऽ
  रे ऽ ऽ ऽ | सा ऽ सा ऽ

- म़प़प़ध़ऩनी | सारेसाऩी | ध़ऩीऩीसारे | सारेगम
  गममपध | नीधपध | पममगम | गरेसाऽ
  ध़ऽऩीरे | ध़ऽऩीरे | ध़ऽऩीरे

- ध़ऩीऩीसाध़ | ऩीऩीसाध़ऩी | ध़ऩीऩीसारे | साऩीऩीध़ऩी
  सारेरेगसा | रेरेगसारे | सारेरेगम | पमगम
  गममपग | ममपगम | गममपध | नीधपध
  पधधनीप | धधनीपध | पधधनीसां | रेंसांनीसां
  गंरेंसांरें | सांनीधप | मगरेसा | गरेसाऩी

ऽध़ऽऩी　　रेऽऽऽ　　गरेससाऩी　　ऽध़ऽऩी

रेऽऽऽ　　गरेसाऩी　　ऽध़ऽऩी

- ध़ऩीसारेऩीसा　　ऩीसारेगरेसा　　सारेगमगरे　　रेगमपमग
  गमपधपम　　मपधनीधप　　पधनीसांनीध　　धनीसारेंसांनी
  पधनीधपम　　गमपमगरे　　रेगमगरेसा　　ध़ऩीरेसाऩीध़
  ध़ऩीसाऩीध़ऩी　　रेऽऽध़ऩीसा　　ऩीध़ऩीरेऽऽ　　ध़ऩीसाऩीध़ऩी

स्वयं जांच अभ्यास 1

7.1 राग अहीर भैरव का वादी स्वर कौन सा है?

(क) म

(ख) प

(ग) ग

(घ) सा

7.2 राग अहीर भैरव का संवादी स्वर कौन सा है?

(क) म

(ख) नी

(ग) ग

(घ) सा

7.3 राग अहीर भैरव की मुख्य स्वरसंगति कौन सी है?

(क) रे ग रे सा

(ख) ध़ <u>नी</u> <u>रे</u> ऽ <u>रे</u> सा

(ग) ग म ध <u>नी</u> सां

(घ) साऩीसा

7.4 राग अहीर भैरव का गायन समय क्या माना जाता है?

(क) दोपहर

(ख) दिन का चौथा प्रहर

(ग) सांयकाल

(घ) दिन का प्रथम प्रहर

7.5 राग अहीर भैरव का समप्रकृतिक राग कौन सा है?

(क) भैरव

(ख) पूरिया धनश्री

(ग) सोहनी

(घ) हंसध्वनि

7.6 राग अहीर भैरव किन रागों का मिश्रण है?

(क) पूरिया तथा यमन

(ख) खमाज तथा भैरव

(ग) भैरव तथा पूरिया

(घ) भैरव तथा यमन

7.4 सारांश

अहीर भैरव राग भारतीय शास्त्रीय संगीत का प्रचलित राग है। शास्त्रीय संगीत वादन के अंतर्गत इस राग को बजाया जाता है। अहीर भैरव राग का थाट भैरव है। इस राग की जाति संपूर्ण है। अहीर भैरव राग का वादी स्वर मध्यम तथा संवादी स्वर षड़ज है। त राग में कोमल रिषभ तथा कोमल निषाद का प्रयोग होता है व अन्य स्वर शुद्ध हैं। इस राग का वादन समय प्रात:काल माना जाता है। इस राग में रिषभ, मध्यम, षड्ज पर न्यास किया जाता है। विभिन्न प्रकार के तोडों को इसमें लयकारियों के साथ बजाया जाता है।

7.5 शब्दावली

- विलंबित गत: उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में वादन के अंतर्गत विलंबित लय में बजाए जाने वाली गत।
- आलाप: वादन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, अनिबद्ध (ताल रहित) रूप सें राग के स्वरों का विस्तार धीमी लय में करना, आलाप कहलाता है।
- विलंबित लय: वादन/गायन के अंतर्गत जब लय बहुत धीमी गति मे चलती है तो उसे विलंबित लय कहते हैं।
- लय: गायन/वादन में बीत रहे समय की समान गति को 'लय' कहा जाता है।

7.6 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

स्वयं जांच अभ्यास 1

7.1 (क)

7.2 (ख)

7.3 (ख)

7.4 (घ)

7.5 (क)

7.6 (ख)

7.7 संदर्भ

मिश्रा, लालमणि. (1979). तंत्रीनाद. साहित्य रत्नालय, कानपुर।

मृत्युंजय, डॉ. शर्मा. (2005). तांत्रिक विज्ञान, प्रतिभा स्पंदन प्रकाशन शिमला।

चौधरी, देबू. (1981). सितार और इसकी तकनीकें. एवन बुक कंपनी, दिल्ली।

बंधोपाध्याय, श्रीपद. (1977). सितार मार्ग (भाग 2). भारतीय संगीत साहित्य प्रकाशन, दिल्ली।

मृत्युंजय, डॉ. शर्मा. (2000). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

7.8 अनुशंसित पठन

बंधोपाध्याय, श्रीपद. (1977). सितार मार्ग (भाग 1). भारतीय संगीत साहित्य प्रकाशन, दिल्ली।

भीकन खान, यू.अनवर खान. (1972). सितार दर्पण. भारतीय संगीत नृत्य महाविद्यालय, बड़ौदा।

बंधोपाध्याय, श्रीपद. (1977). सितार मार्ग (भाग 3). भारतीय संगीत साहित्य प्रकाशन, दिल्ली।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2005). स्वर सरिता, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

7.9 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. राग अहीर भैरव का परिचय लिखिए।

प्रश्न 2. राग अहीर भैरव के आलाप को लिखिए।

प्रश्न 3. राग अहीर भैरव की विलम्बित गत को तोड़ों सहित लिखिए

प्रश्न 4 राग अहीर भैरव के आलाप को बजा कर सुनाइए।

प्रश्न 5. राग अहीर भैरव की विलम्बित गत को तोड़ों सहित बजा कर सुनाइए।

इकाई-8
राग अहीर भैरव - द्रुत गत

इकाई की रूपरेखा

8.1 भूमिका

8.2 उद्देश्य तथा परिणाम

8.3 अहीर भैरव राग का परिचय, आलाप, द्रुत गत, तोड़े

8.3.1 अहीर भैरव राग का परिचय

8.3.2 अहीर भैरव राग का आलाप

8.3.3 अहीर भैरव राग का द्रुत गत

8.3.4 अहीर भैरव राग की तोड़े

स्वयं जांच अभ्यास 1

8.4 सारांश

8.5 शब्दावली

8.6 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

8.7 संदर्भ

8.8 अनुशंसित पठन

8.9 पाठगत प्रश्न

8.1 भूमिका

संगीत (गायन तथा वादन) स्नात्कोत्तर के क्रियात्मक पाठ्यक्रम की इस इकाई में वादन संगीत के संदर्भ में, राग अहीर भैरव का परिचय, आलाप, द्रुत गत तथा तोड़ों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति के माध्यम से विस्तार पूर्वक प्रस्तुत किया गया है। उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में रागों का प्रस्तुतिकरण विशेष रूप से होता है, जो सुनने में मधुरता से युक्त, कर्णप्रिय, वैचित्रतापूर्ण तथा आनंददायक होता है। आज के समय में शास्त्रीय संगीत के कलाकार रागों को अपने मंच प्रदर्शन के समय प्रस्तुत करते हैं। प्रस्तुत राग का, शास्त्रीय संगीत के अतिरिक्त, सुगम संगीत व फिल्मी संगीत में भी प्रयुक्त होता है, जिसके आधार पर कई मधुर गीतों, भजनों, गजलों इत्यादि का निर्माण हुआ है तथा हो रहा है। इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी राग अहीर भैरव के स्वरूप के साथ-साथ उसके आलाप, द्रुत गत तथा तोड़ों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति में लिख सकने का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे। साथ ही क्रियात्मक रूप से राग अहीर भैरव का आलाप, द्रुत गत तथा तोड़ों को बजा सकेंगे।

8.2 उद्देश्य तथा परिणाम

सीखने के उद्देश्य

- अहीर भैरव राग के स्वरूप की संक्षिप्त जानकारी प्रदान करना।
- अहीर भैरव राग के आलाप, द्रुत गत तथा तोड़ों को भातखंडे स्वरलिपि में लिखने की क्षमता विकसित करना।
- अहीर भैरव राग के आलाप, द्रुत गत तथा तोड़ों को बजाने की क्षमता विकसित करना।
- विद्यार्थी को गायन के दौरान सुधार करने का प्रयास करने के लिए प्रोत्साहित करना।

सीखने के परिणाम

- विद्यार्थी गायन के तकनीकी पहलुओं से अच्छी तरह परिचित हो जाएगा
- अहीर भैरव राग का परिचय, आलाप, द्रुत गत तथा तोड़ों को लिखने की निपुणता प्राप्त करने में सक्षम होंगे।
- अहीर भैरव राग के आलाप, द्रुत गत तथा तोड़ों को बजाने में सक्षम होंगे।

- राग अहीर भैरव के विभिन्न रचनात्मक पहलुओं को क्रियात्मक रूप से प्रदर्शित करने की क्षमता विकसित होगी और अनुभव भी प्राप्त होगा।

8.3 अहीर भैरव राग का परिचय, आलाप, द्रुत गत, तोड़े

8.3.1 अहीर भैरव राग का परिचय

राग - अहीर भैरव

थाट – भैरव

जाति - संपूर्ण

वादी - मध्यम

संवादी – षड्ज

स्वर - रिषभ कोमल, निषाद कोमल तथा अन्य स्वर शुद्ध

न्यास के स्वर – रिषभ, मध्यम, षड्ज

समय – प्रातःकाल

आरोह - सा रे ग म प ध नी सां

अवरोह - सां नी ध प म ग रे सा

पकड़ - ग म रे ऽ रे सा, नी ध़ नी रे ऽ रे सा

मधुर व लोकप्रिय अहीर भैरव राग का थाट भैरव है। इस राग की जाति संपूर्ण है। अहीर भैरव राग का वादी स्वर मध्यम तथा संवादी स्वर षड़ज है। प्रस्तुत राग में कोमल रिषभ तथा कोमल निषाद का प्रयोग होता है व अन्य स्वर शुद्ध हैं। इस

राग का गायन समय प्रात:काल माना जाता है। इस राग में रिषभ, मध्यम, षड्ज पर न्यास किया जाता है। यह राग भैरव तथा खमाज रागों का मिश्रण है। इसमें ध़ ऩी रे ऽ सा स्वरों की संगति विशेष है। म रे संगति तथा रिषभ पर आन्दोलन भैरव अंग का परिचायक है। इस राग में रिषभ स्वर का बहुत्व प्रयोग होता है (सा, रेऽरेऽ सा, ग म रेऽरेऽ सा)। इस राग की चलन तीनों सप्तकों में समान रूप से होता है।

8.3.2 आलाप

- सा, सा, रे ऽ रेऽ सा, ऩी सा ध़ नी रे ऽ रेऽ सा सा
- सा सा ऩी सा ऩी ध़ ध़ नी ध़ सा ऩी रे सा, सा रे ग म रेऽ रे सा।
- सा रे ग, म रे ऽ रे ग, ऩी सा ध़ ऩी रेऽ ग,

  ग ग म प ग म रेऽ सा ऽ रे ग, नी सा ध़ ऩीरेऽ रे ग म रे सा ऽऽरे ग म।
- ग म, प ग म रे रे सा रे ग म प म,
- सा रे ग ऽ रे ग म ऽ प म ग ध ऽ ध नी ध प म,

  प ग म रेऽ रे सा, नी सा ध़ ऩी रे ऽ रे ऽ सा।
- ग म प ध ऽ ध नी ध नी नी सां, ध नी रेंऽ रें ऽ सां।
- गं मं रें ऽ रें सां, सां नी ध ध नी ध सां नी ध प म,

  ग म रे रे सा ध़ नी रे ऽ रे ऽ सा सा

8.3.3 अहीर भैरव द्रुत गत तीन ताल

x				2				0				3			
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
स्थाई															
						गग	मम	रेऽ	रेसा	ऽसा	नीऽ	सा	ध़	ऽ	ऩी
						दिर	दिर	दाऽ	रदा	ऽर	दाऽ	रा	दा	ऽ	रा
रे	ऽ	ऽ	सा	ऽ	सा										
दा	ऽ	ऽ	दा	ऽ	रा										
						गग	मम	पऽ	पग	ऽग	मऽ	प	धध	नी	ध
						दिर	दिर	दाऽ	रदा	ऽर	दाऽ	दा	दिर	दा	रा
म	पप	ध	नी	रें	सां										
दा	दिर	दा	रा	दा	रा										
अन्तरा															
						गग	मम	ग	मम	पप	धध	नीऽ	नीध	ऽध	नीऽ
						दिर	दिर	दा	दिर	दिर	दिर	दाऽ	रदा	ऽर	दाऽ
रें	ऽ	ऽ	रें	सां	रेंरें	सां	सां								
दा	ऽ	ऽ	रा	दा	दिर	दा	रा								
								ध	नीनी	रें	सां	नी	धध	प	ध
								दा	दिर	दा	रा	दा	दिर	दा	रा
पऽ	पग	ऽग	मऽ	रे	सा										
दाऽ	रदा	ऽर	दाऽ	दा	रा										

8.3.4 अहीर भैरव के तोड़े

- म़प़ ध़नी़ सानी़ ध़नी़ रे॒ऽ साऽ
- गऽ मऽ धऽ नीऽ रें॒ऽ सांऽ

- गम पध नी॒ध पम गम रेसा

- गम धनी॒ धप मप गम रेसा

- ध़नी़ रे॒सा ध़नी़ रे॒सा ध़नी़ रे॒सा

- ध़नी़ रे॒सा गम पम गम रे॒सा

- साग मप गम पम गम रे॒स

- पम गम नी॒ध पम गम रे॒सा

- ध़नी़ साध़ नी़सा ध़नी़ रे॒सा नी़ध़ गम पग
  मप गम नी॒ध पम धनी॒ सांध नी॒सां धनी॒
  रें॒सां नी॒ध गम पम गम रे॒सा गम रे॒सा
  ऽध़ ऽनी़ रे॒ऽ ऽध़ ऽनी़ रे॒ऽ ऽध़ ऽनी़

- सां नी॒ ऽ नी॒ ध ऽ ध प ऽ प म ऽ म ग ऽ ग
  रे॒ ऽ रे॒ सा ग म रे॒ ऽ सा ऽ सा ऽ ग ऽ म ऽ
  रे॒ ऽ ऽ ऽ सा ऽ सा ऽ

स्वयं जांच अभ्यास 1

8.1 राग अहीर भैरव का वादी स्वर कौन सा है?

(क) म

(ख) प

(ग) ग

(घ) सा

8.2 राग अहीर भैरव का संवादी स्वर कौन सा है?

(क) म

(ख) नी

(ग) ग

(घ) सा

8.3 राग अहीर भैरव की मुख्य स्वरसंगति कौन सी है?

(क) रे ग रे सा

(ख) ध़ नी रे ऽ रे सा

(ग) ग म ध नी सां

(घ) सानीसा

8.4 राग अहीर भैरव का गायन समय क्या माना जाता है?

(क) दोपहर

(ख) दिन का चौथा प्रहर

(ग) सांयकाल

(घ) दिन का प्रथम प्रहर

8.5 राग अहीर भैरव का समप्रकृतिक राग कौन सा है?

(क) भैरव

(ख) पूरिया धनश्री

(ग) सोहनी

(घ) हंसध्वनि

8.6 राग अहीर भैरव किन रागों का मिश्रण है?

(क) पूरिया तथा यमन

(ख) खमाज तथा भैरव

(ग) भैरव तथा पूरिया

(घ) भैरव तथा यमन

8.4 सारांश

अहीर भैरव राग भारतीय शास्त्रीय संगीत का प्रचलित राग है। शास्त्रीय संगीत वादन के अंतर्गत इस राग को बजाया जाता है। अहीर भैरव राग का थाट भैरव है। इस राग की जाति संपूर्ण है। अहीर भैरव राग का वादी स्वर मध्यम तथा संवादी स्वर षड्ज है। त राग में कोमल रिषभ तथा कोमल निषाद का प्रयोग होता है व अन्य स्वर शुद्ध हैं। इस राग का वादन समय प्रात:काल माना जाता है। इस राग में रिषभ, मध्यम, षड्ज पर न्यास किया जाता है। विभिन्न प्रकार के तोडों को इसमें लयकारियों के साथ बजाया जाता है।

8.5 शब्दावली

- द्रुत गत: उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में वादन के अंतर्गत द्रुत लय में बजाए जाने वाली गत।
- आलाप: वादन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, अनिबद्ध (ताल रहित) रूप से राग के स्वरों का विस्तार धीमी लय में करना, आलाप कहलाता है।
- द्रुत लय: वादन/गायन के अंतर्गत जब लय बहुत तेज गति मे चलती है तो उसे द्रुत लय कहते हैं।
- विलंबित लय: वादन/गायन के अंतर्गत जब लय बहुत धीमी गति मे चलती है तो उसे विलंबित लय कहते हैं।
- लय: गायन/वादन में बीत रहे समय की समान गति को 'लय' कहा जाता है।

8.6 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

स्वयं जांच अभ्यास 1

8.1 (क)

8.2 (ख)

8.3 (ख)

8.4 (घ)

8.5 (क)

8.6 (ख)

8.7 संदर्भ

मिश्रा, लालमणि. (1979). तंत्रीनाद. साहित्य रत्नालय, कानपुर।

मृत्युंजय, डॉ. शर्मा. (2005). तांत्रिक विज्ञान, प्रतिभा स्पंदन प्रकाशन शिमला।

चौधरी, देबू. (1981). सितार और इसकी तकनीकें. एवन बुक कंपनी, दिल्ली।

बंधोपाध्याय, श्रीपद. (1977). सितार मार्ग (भाग 2). भारतीय संगीत साहित्य प्रकाशन, दिल्ली।

मृत्युंजय, डॉ. शर्मा. (2000). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

8.8 अनुशंसित पठन

बंधोपाध्याय, श्रीपद. (1977). सितार मार्ग (भाग 1). भारतीय संगीत साहित्य प्रकाशन, दिल्ली।

भीकन खान, यू.अनवर खान. (1972). सितार दर्पण. भारतीय संगीत नृत्य महाविद्यालय, बड़ौदा।

बंधोपाध्याय, श्रीपद. (1977). सितार मार्ग (भाग 3). भारतीय संगीत साहित्य प्रकाशन, दिल्ली।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2008). तंत्रिका विज्ञान, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2005). स्वर सरिता, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

झा, पं. रामाश्रय. (2040). अभिनव गीतांजलि (भाग 1-5), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

8.9 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. राग अहीर भैरव का परिचय लिखिए।

प्रश्न 2. राग अहीर भैरव के आलाप को लिखिए।

प्रश्न 3. राग अहीर भैरव की द्रुत गत को तोड़ों सहित लिखिए

प्रश्न 4 राग अहीर भैरव के आलाप को बजा कर सुनाइए।

प्रश्न 5. राग अहीर भैरव की द्रुत गत को तोड़ों सहित बजा कर सुनाइए।

इकाई-9
राग भीमपलासी - विलंबित गत

इकाई की रूपरेखा

क्रम	विवरण
9.1	भूमिका
9.2	उद्देश्य तथा परिणाम
9.3	भीमपलासी राग का परिचय (वादन के संदर्भ में)
	स्वयं जांच अभ्यास 1
9.4	भीमपलासी राग का आलाप (वादन के संदर्भ में)
	स्वयं जांच अभ्यास 2
9.5	राग भीमपलासी की विलंबित गत तथा तोड़े
	9.5.1 भीमपलासी राग की विलम्बित गत
	9.5.2 भीमपलासी राग की विलम्बित गत के तोड़े
	स्वयं जांच अभ्यास 3
9.6	सारांश
9.7	शब्दावली
9.8	स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
9.9	संदर्भ
9.10	अनुशंसित पठन
9.11	पाठगत प्रश्न

9.1 भूमिका

संगीत (गायन तथा वादन) स्नात्कोत्तर के क्रियात्मक पाठ्यक्रम की इस इकाई में वादन संगीत के संदर्भ में, राग भीमपलासी का परिचय, आलाप, विलंबित गत तथा तोड़ों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति के माध्यम से विस्तार पूर्वक प्रस्तुत किया गया है। उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में रागों का प्रस्तुतिकरण विशेष रूप से होता है, जो सुनने में मधुरता से युक्त, कर्णप्रिय, वैचित्रतापूर्ण तथा आनंददायक होता है। आज के समय में शास्त्रीय संगीत के कलाकार रागों को अपने मंच प्रदर्शन के समय प्रस्तुत करते हैं। प्रस्तुत राग का, शास्त्रीय संगीत के अतिरिक्त, सुगम संगीत व फिल्मी संगीत में भी प्रयुक्त होता है, जिसके आधार पर कई मधुर गीतों, भजनों, गजलों इत्यादि का निर्माण हुआ है तथा हो रहा है। इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी राग भीमपलासी के स्वरूप के साथ-साथ उसके आलाप, विलंबित गत तथा तोड़ों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति में लिख सकने का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे। साथ ही क्रियात्मक रूप से राग भीमपलासी का आलाप, विलंबित गत तथा तोड़ों को बजा सकेंगे।

9.2 उद्देश्य तथा परिणाम

सीखने के उद्देश्य

- भीमपलासी राग के स्वरूप की बुनियादी जानकारी प्रदान करना।
- भीमपलासी राग के आलाप, विलंबित गत, तोड़ों को भातखंडे स्वरलिपि में लिखने की क्षमता विकसित करना।
- भीमपलासी राग के आलाप, विलंबित गत, तोड़ों को बजाने की क्षमता विकसित करना।
- छात्र को वादन के दौरान सुधार करने का प्रयास करने के लिए प्रोत्साहित करना।

सीखने के परिणाम

- विद्यार्थी वादन के तकनीकी पहलुओं से अच्छी तरह परिचित हो जाएगा
- भीमपलासी राग के स्वरूप की बुनियादी जानकारी प्रदान करना।
- भीमपलासी राग के आलाप, विलंबित गत, तोड़ों को लिखने की निपुणता प्राप्त करने में सक्षम होंगे।
- भीमपलासी राग के आलाप, विलंबित गत, तोड़ों को बजाने में सक्षम होंगे।

- राग भीमपलासी के विभिन्न रचनात्मक पहलुओं को मंच पर प्रदर्शित करने की क्षमता विकसित होगी और अनुभव भी प्राप्त होगा।

9.3 भीमपलासी राग का परिचय

राग - भीमपलासी

थाट – काफी

जाति – औड़व-संपूर्ण

वादी – मध्यम

संवादी – षड़ज

स्वर - गांधार, निषाद कोमल तथा अन्य स्वर शुद्ध

वर्जित स्वर - आरोह में रिषभ, धैवत

न्यास के स्वर – षड़ज, मध्यम, पंचम

समय - दिन का तीसरा प्रहर

समप्रकृतिक राग – धनाश्री

आरोह:- ऩी सा, ग म प नी सां।

अवरोह:- सां नी ध प, म प, म ग रे सा।

पकड़:- नी सा म, प ग म ग रे सा

मधुर व लोकप्रिय, भीमपलासी राग का थाट काफी है। इस राग की जाति औड़व-संपूर्ण है। भीमपलासी राग का वादी स्वर मध्यम तथा संवादी स्वर षड़ज है। प्रस्तुत राग में कोमल गांधार तथा कोमल निषाद का प्रयोग होता है व अन्य स्वर शुद्ध हैं। आरोह में रिषभ, धैवत स्वर वर्जित हैं। इस राग का गायन समय दिन का तीसरा प्रहर माना जाता है। इस राग को

मंद्र सप्तक के निषाद से आरम्भ किया जाता है (ऩी सा ग म प)। इस राग में षड़ज, मध्यम, पंचम पर न्यास किया जाता है। इसमें प ग स्वरों की संगति विशेष है (नी सा म, प ग, म ग रे सा)। मंद्र तथा मध्य सप्तक में इस राग को गाने में अधिक सौंदर्य बोध होता है। इसका समप्रकृतिक राग धनाश्री है।

स्वयं जांच अभ्यास 1

9.1 भीमपलासी राग का वादी स्वर निम्न में से कौन सा है?

क) म

ख) नि

ग) सा

घ) ग

9.2 भीमपलासी राग का संवादी स्वर निम्न में से कौन सा है?

क) रे

ख) नि

ग) सा

घ) म

9.3 भीमपलासी राग का समय निम्न में से कौन सा है?

क) दिन का प्रथम प्रहर

ख) मध्य रात्रि

ग) दिन का तीसरा प्रहर

घ) दोपहर

9.4 भीमपलासी राग का आविष्कारक किसने किया था?

क) उ. विलायत खां

ख) पं. रवि शंकर

ग) तानसेन

घ) अज्ञात

9.5 भीमपलासी राग में, निम्न में से कौन सा स्वर कोमल होता है?

क) गंधार

ख) षड़ज

ग) मध्यम

घ) ऋषभ

9.6 भीमपलासी राग में किस स्वर को अधिकतर आन्दोलित किया जाता है?

क) नी

ख) प

ग) ध

घ) सा

9.7 भीमपलासी राग का थाट निम्न में से कौन सा है?

क) कल्याण

ख) काफी

ग) मारवा

घ) देस

9.4 आलाप

- सा, ऩी सा ग रे सा, ऩी सा ग म,

  ग म ग रे सा ऩी सा,

- सा रे सा, ऩी ध़ प़ प़,

  म़ प़ ऩी ऩी सा,

- ऩी सा ग म म प, प, म प नी ध प,

  म प नी नी सां सां

- प नी सां गं रें सां, मं गं रें सां,

  सां, नी ध प, म प म ग रे सा, सा

- ऩी सा म म, ग म रे सा, सा रे

ऩी सा ग॒ म प, म ग॒ रे सा

स्वयं जांच अभ्यास 2

9.8 क्या भीमपलासी राग में ऩी सा रे सा स्वर संगति हो सकती है?

क) हां

ख) नहीं

9.9 क्या भीमपलासी राग में ध़ ऽ ऩी ध़ प़ ग॒स्वर संगति हो सकती है?

क) हां

ख) नहीं

9.10 भीमपलासी राग के संदर्भ में निम्न में से कौन सी स्वर संगति ठीक है?

क) म ग॒ रे सा

ख) म ग॒ रे॒ सा

ग) ग॒ म रे॒ सा

घ) म ग॒ रे॒ सा

9.5 राग भीमपलासी की विलंबित गत तथा तोड़े

9.5.1 भीमपलासी विलंबित गत तीन ताल

	x				**2**				**0**				**3**			
	1	**2**	**3**	**4**	**5**	**6**	**7**	**8**	**9**	**10**	**11**	**12**	**13**	**14**	**15**	**16**
स्थाई																
												साम	ग	रेसा	ऩी	सा
												दिर	दा	दिर	दा	रा
	म	म	म	गम	प	नीध	प	म	ग	रे	सा					
	दा	दा	रा	दिर	दा	दिर	दा	रा	दा	दा	रा					
												ऩीसा	ऩी	ध़ध़	प़	प़
												दिर	दा	दिर	दा	रा
	म़	म़	प़	ध़प़	म़	प़प़	ऩी	सा	ग	रे	सा					
	दा	दा	रा	दिर	दा	दिर	दा	रा	दा	दा	रा					
अंतरा																
												मम	ग	मम	प	नी
												दिर	दा	दिर	दा	रा
	सां	सां	सां	सांसां	नी	सांसां	गं	रें	सां	नी	सां					
	दा	दा	रा	दिर	दा	दिर	दा	रा	दा	दा	रा					
												मंमं	गं	रेंसां	नी	सां
												दिर	दा	दिर	दा	रा
	नी	ध	प	धप	म	पप	ग	म	ग	रे	सा					
	दा	दा	रा	दिर	दा	दिर	दा	रा	दा	दा	रा					

9.5.2 भीमपलासी राग की विलंबित गत के तोड़े

•	गम पनी	सांगंरेसा	नीध पम	गरे सा-
	पनी धप	सांगं रेसा	नीधपम	गमपनी
	धपसांनी	धप मग	मग रेसा	
•	पनी धप	मप गम	पनी सांगं	मंगंरेसा
	नीध पम	गरे सा-		
•	नीध पनी	धप नीध	पम पनी	सांमं रेसा
	नीध	पम गरे	सा-सा-	
•	गम मप	पनी धप	नीसां गंरें	सांमं गंरें
	सांनी धप	मग रेसा		
•	नीसां मग	मगरेसा	ऩीसा गम	पम गम
	पनी धप	नीसां गंरें		
•	सांनी धप	मग रेसा	ऩीसा गग	रेसा नीसा
	गम पप	मप गम	पनी सांसां	नीसां गरे
	सांनीधप	मग रेसा		
	ऩीसागम	पग मप	गम पनी	सांनी रेसा
	गंगं रेंसा	मंगं रेसा	नीध पम	गरे सा-

• गमपनी	धपमप	मगरेसा	रेसाऩीऽ
ऽरेसाऩी	ऽऽरेसा	सांनीधप	मगरेसा
ऩीसामग	रेसाऩीम	गरेसानी	मगरेसा
• पनी सांगं	रेसा नीसां	पनी धप	मप नीसां
गंगं रेंसा	नीध पम	पनी धप	साग रेसा
• पनी धप	मग गम	पनी सां-	गरे सारे
नीध पध	मप नीसां	गम पनी	सांग रेंसा
मंगं मंगं	रेंसा गरें	सांनी धप	मप नीसां
• मप नीध	पनी धप	नीध पम	पनी सांगं
मंगं रेंसां	पनी सां-		
• नीसां गग	रेसा नीसां	पनी धप	मप गम
साग मप	नीसां गरें	सांनीधप	मप नीसां
• गरें सारें	सांनी धप	गम साग	मप नीसां
गंगं रेंसां	रेंरें सांनी	धप मप	नीसांनीसां
• नीसां गं-	रेसा नीसां	रें- सांनी	धपमप
नी- धप	मप गम	पनी सांगं	रेंसा नीसां
• नीसां गरे	सानी धप	मप गम	मप पनी

सां- गरें	सामं गरे	सांनी धप	मप नीसां

• ऩीऩीऩीरेसा	गममपम	गममपपमम	पऽमगऽरेसाऽ
ऩीऩीऩीरेसा	ऽप़ऽऩी	साऽऽ	ऽपऽऩी
साऽऽऽ	ऽप़ऩी	साऽऽऽ	

• ऩीऽऩीरेसा	गममपम	मगगरेसा	ऽऩीऽऩी
साऽऽऽ	मगगरेसा	ऽऩीऽऩी	साऽऽऽ
मगगरेसा	ऽऩीऽऩी	साऽऽऽ	

स्वयं जांच अभ्यास 3

9.11 भीमपलासी राग की विलंबित गत में सम कौन सी मात्रा पर होता है?

क) 2

ख) 16

ग) 1

घ) 9

9.12 भीमपलासी राग की मसीतखानी गत अधिकतर किस मात्रा से शुरू होती है?

क) 13

ख) 12

ग) 1

घ) 9

9.13 भीमपलासी राग की विलंबित गत को केवल सितार वाद्य पर ही बजाते हैं?

क) हां

ख) नहीं

9.14 तीन ताल में, 8 मात्रा के तोड़े को किस मात्रा से शुरू करें कि वह सम पर समाप्त हो जाए?

क) 8

ख) 9

ग) 10

घ) 1

9.15 तीन ताल में, 16 मात्रा के तोड़े को किस मात्रा से शुरू करें कि वह सम पर समाप्त हो जाए?

क) 16

ख) 9

ग) 1

घ) 12

9.6 सारांश

भीमपलासी राग भारतीय शास्त्रीय संगीत का एक प्रचलित राग है। शास्त्रीय संगीत के वादन के अंतर्गत इस राग को बजाया जाता है। भीमपलासी राग का आलाप अनिबद्ध (ताल रहित) होता है। इस राग में विलंबित गत को धीमी लय में बजाया जाता है। विलंबित गत में तोड़ों का अपना महत्व है और विभिन्न प्रकार के तोड़ों को इसमें विभिन्न प्रकार की लयकारियों के साथ बजाया जाता है।

9.7 शब्दावली

- आलाप: वादन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, अनिबद्ध (ताल रहित) रूप सें राग के स्वरों का विस्तार धीमी लय में करना, आलाप कहलाता है।
- विलंबित गत: वादन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, ऐसी स्वर-रचना जो लयबद्ध व तालबद्ध हो तथा विलंबित लय में बजाई जाती हो उसे विलंबित गत कहते हैं।
- तोड़ा: साधारण रूप से राग के स्वरों का विस्तार जब विभिन्न प्रकार की लयों तथा लयकारियों में बांधकर, वाद्य पर बजाया जाता है तो उसे तोड़ा कहते हैं।

9.8 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

स्वयं जांच अभ्यास 1

9.1 उत्तर:क)

9.2 उत्तर:ग)

9.3 उत्तर:ग)

9.4 उत्तर:घ)

9.5 उत्तर:क)

9.6 उत्तर:क)

9.7 उत्तर:ख)

स्वयं जांच अभ्यास 2

9.8 उत्तर:क)

9.9 उत्तर:ख)

9.10 उत्तर:क)

स्वयं जांच अभ्यास 3

9.11 उत्तर:ग)

9.12 उत्तर:ख)

9.13 उत्तर:ख)

9.14 उत्तर:ख)

9.15 उत्तर:ग)

9.9 संदर्भ

डॉ. केशव शर्मा से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त जानकारी, मार्च 2024।

डॉ. निर्मल सिंह से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त जानकारी, अप्रैल 2024।

बन्द्योपाध्याय, श्रीपद. (1957). सितार मार्ग (भाग 1-4), भारतीय संगीत साहित्य प्रकाशन, दिल्ली।

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2015). राग परिचय (भाग 1-4), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2008). तंत्रिका विज्ञान, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

9.10 अनुशंसित पठन

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2005). स्वर सरिता, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2015). राग परिचय (भाग 1-4), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

झा, पं. रामाश्रय. (2020). अभिनव गीतांजलि (भाग 1-5), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

9.11 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. राग भीमपलासी का परिचय लिखिए।

प्रश्न 2. राग भीमपलासी के तीन आलाप लिखिए।

प्रश्न 3. राग भीमपलासी की विलंबित गत लिखिए।

प्रश्न 4. राग भीमपलासी की विलंबित गत के पांच तोड़े लिखिए

इकाई-10
राग भीमपलासी की द्रुत गत

इकाई की रूपरेखा

क्रम	विवरण
10.1	भूमिका
10.2	उद्देश्य तथा परिणाम
10.3	भीमपलासी राग का परिचय (वादन के संदर्भ में)
	स्वयं जांच अभ्यास 1
10.4	भीमपलासी राग का आलाप (वादन के संदर्भ में)
	स्वयं जांच अभ्यास 2
10.5	राग भीमपलासी की द्रुत गत तथा तोड़े
	10.5.1 भीमपलासी राग की द्रुत गत
	10.5.2 भीमपलासी राग की द्रुत गत के तोड़े
	स्वयं जांच अभ्यास 3
10.6	सारांश
10.7	शब्दावली
10.8	स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
10.9	संदर्भ
10.10	अनुशंसित पठन
10.11	पाठगत प्रश्न

10.1 भूमिका

संगीत (गायन तथा वादन) स्नात्कोत्तर के क्रियात्मक पाठ्यक्रम की इस इकाई में वादन संगीत के संदर्भ में, राग भीमपलासी का परिचय, आलाप, द्रुत गत तथा तोड़ों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति के माध्यम से विस्तार पूर्वक प्रस्तुत किया गया है। उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में रागों का प्रस्तुतिकरण विशेष रूप से होता है, जो सुनने में मधुरता से युक्त, कर्णप्रिय, वैचित्रतापूर्ण तथा आनंददायक होता है। आज के समय में शास्त्रीय संगीत के कलाकार रागों को अपने मंच प्रदर्शन के समय प्रस्तुत करते हैं। प्रस्तुत राग का, शास्त्रीय संगीत के अतिरिक्त, सुगम संगीत व फिल्मी संगीत में भी प्रयुक्त होता है, जिसके आधार पर कई मधुर गीतों, भजनों, गजलों इत्यादि का निर्माण हुआ है तथा हो रहा है। इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी राग भीमपलासी के स्वरूप के साथ-साथ उसके आलाप, द्रुत गत तथा तोड़ों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति में लिख सकने का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे। साथ ही क्रियात्मक रूप से राग भीमपलासी का आलाप, द्रुत गत तथा तोड़ों को बजा सकेंगे।

10.2 उद्देश्य तथा परिणाम

सीखने के उद्देश्य

- भीमपलासी राग के स्वरूप की बुनियादी जानकारी प्रदान करना।
- भीमपलासी राग के आलाप, द्रुत गत, तोड़ों को भातखंडे स्वरलिपि में लिखने की क्षमता विकसित करना।
- भीमपलासी राग के आलाप, द्रुत गत, तोड़ों को बजाने की क्षमता विकसित करना।
- छात्र को वादन के दौरान सुधार करने का प्रयास करने के लिए प्रोत्साहित करना।

सीखने के परिणाम

- विद्यार्थी वादन के तकनीकी पहलुओं से अच्छी तरह परिचित हो जाएगा
- भीमपलासी राग के स्वरूप की बुनियादी जानकारी प्रदान करना।
- भीमपलासी राग के आलाप, द्रुत गत, तोड़ों को लिखने की निपुणता प्राप्त करने में सक्षम होंगे।
- भीमपलासी राग के आलाप, द्रुत गत, तोड़ों को बजाने में सक्षम होंगे।

- राग भीमपलासी के विभिन्न रचनात्मक पहलुओं को मंच पर प्रदर्शित करने की क्षमता विकसित होगी और अनुभव भी प्राप्त होगा।

10.3 भीमपलासी राग का परिचय

राग - भीमपलासी

थाट – काफी

जाति – औड़व-संपूर्ण

वादी – मध्यम

संवादी – षड़ज

स्वर - गांधार, निषाद कोमल तथा अन्य स्वर शुद्ध

वर्जित स्वर - आरोह में रिषभ, धैवत

न्यास के स्वर – षड़ज, मध्यम, पंचम

समय - दिन का तीसरा प्रहर

समप्रकृतिक राग – धनाश्री

आरोह:- ऩी सा, ग म प नी सां।

अवरोह:- सां नी ध प, म प, म ग रे सा।

पकड़:- नी सा म, प ग म ग रे सा

मधुर व लोकप्रिय, भीमपलासी राग का थाट काफी है। इस राग की जाति औड़व-संपूर्ण है। भीमपलासी राग का वादी स्वर मध्यम तथा संवादी स्वर षड़ज है। प्रस्तुत राग में कोमल गांधार तथा कोमल निषाद का प्रयोग होता है व अन्य स्वर शुद्ध हैं। आरोह में रिषभ, धैवत स्वर वर्जित हैं।

इस राग का गायन समय दिन का तीसरा प्रहर माना जाता है। इस राग को मंद्र सप्तक के निषाद से आरम्भ किया जाता है (ऩी सा ग म प)। इस राग में षड़ज, मध्यम, पंचम पर न्यास किया जाता है।

इसमें प ग स्वरों की संगति विशेष है (नी सा म, प ग, म ग रे सा)। मंद्र तथा मध्य सप्तक में इस राग को गाने में अधिक सौंदर्य बोध होता है। इसका समप्रकृतिक राग धनाश्री है।

स्वयं जांच अभ्यास 1

10.1 भीमपलासी राग का वादी स्वर निम्न में से कौन सा है?

क) म

ख) नि

ग) सा

घ) ग

10.2 भीमपलासी राग का संवादी स्वर निम्न में से कौन सा है?

क) रे

ख) नि

ग) सा

घ) म

10.3 भीमपलासी राग का समय निम्न में से कौन सा है?

क) दिन का प्रथम प्रहर

ख) मध्य रात्रि

ग) दिन का तीसरा प्रहर

घ) दोपहर

10.4 भीमपलासी राग का आविष्कारक किसने किया था?

क) उ. विलायत खां

ख) पं. रवि शंकर

ग) तानसेन

घ) अज्ञात

10.5 भीमपलासी राग में, निम्न में से कौन सा स्वर कोमल होता है?

क) गंधार

ख) षड़ज

ग) मध्यम

घ) ऋषभ

10.6 भीमपलासी राग में किस स्वर को अधिकतर आन्दोलित किया जाता है?

क) नी

ख) प

ग) ध

घ) सा

10.7 भीमपलासी राग का थाट निम्न में से कौन सा है?

क) कल्याण

ख) काफी

ग) मारवा

घ) देस

10.4 आलाप

- सा, ऩी सा ग रे सा, ऩी सा ग म,

  ग म ग रे सा ऩी सा,

- सा रे सा, ऩी ध़ प़ प़,

  म़ प़ ऩी ऩी सा,

- ऩी सा ग म म प, प, म प नी ध प,

म प नी नी सां सां

- प नी सां गं रें सां, मं गं रें सां,

  सां, नी ध प, म प म ग रे सा, सा

- ऩी सा म म, ग म रे सा, सा रे

  ऩी सा ग म प, म ग रे सा

स्वयं जांच अभ्यास 2

10.8 क्या भीमपलासी राग में ऩी सा रे सा स्वर संगति हो सकती है?

क) हां

ख) नहीं

10.9 क्या भीमपलासी राग में ध़ ऽ ऩी ध़ प़ गस्वर संगति हो सकती है?

क) हां

ख) नहीं

10.10 भीमपलासी राग के संदर्भ में निम्न में से कौन सी स्वर संगति ठीक है?

क) म ग रे सा

ख) म ग रे सा

ग) ग म रे सा

घ) म ग रे सा

10.5 राग भीमपलासी की द्रुत गत तथा तोड़े

10.5.1 भीमपलासी द्रुत गत तीन ताल

x				2				0				3			
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
स्थाई															
								गम	पनी	नीध	पम	ग	रे	ऩी	सा
								दिर	दिर	दिर	दिर	दा	रा	दा	रा
म	ऽ	ऽ	ग	ऽ	म	प	ऽ								
दा	ऽ	ऽ	रा	ऽ	दा	रा	ऽ								
अंतरा															
								प	मम	प	ग	ऽ	म	प	ऽ
								दा	दिर	दा	रा	ऽ	दा	रा	ऽ
प	नीनी	प	नी	सां	नी	सां	ऽ								
दा	दिर	दा	रा	दा	रा	दा	ऽ								
								प	नीनी	सां	गं	ऽ	रें	ऽ	सां
								दा	दिर	दा	रा	ऽ	दा	ऽ	रा
नी	सांसां	नी	ध	प	ऽ	ग	म								
दा	दिर	दा	रा	दा	ऽ	दा	रा								

10.5.2 भीमपलासी राग की द्रुत गत के तांड़े

- गम पनी सांगं रेसा
  नीध पम गरे सा-
- पनी धप सांगं रेसा नीध
- पम गम पनी धप
  सांनी धप मग रेसा
- पनी धप मप गम
  पनी सांगं मंगं रेसा
  नीध पम गरे सा
- नीध पनी धप नीध
  पम पनी सांमं रेसा
  नीध पम गरे सा-
- गम मप पनी धप
  नीसां गंरे सामं गरे
  सानी धप मग रेसा
- नीसा मग मग रेसा
  नीसा गम पम गम

	पनी	धप	नीसां	गरे
•	सांनी	धप	मग	रेसा
•	ऩीसा	गग	रेसा	नीसा
	गम	पप	मप	गम
	पनी	सांसां	नीसां	गरे
	सांनी	धप	मग	रेसा
•	ऩीसा	गम	पग	मप
	गम	पनी	सांनी	रेसा
	गंगं	रेंसा	मंगं	रेसा
	नीध	पम	गरे	सा-
•	गम	पनी	धप	मप
	मग	रेसा	रेसा	ऩीऽ
	ऽरे	साऩी	ऽऽ	रेसा
•	सांनी	धप	मग	रेसा
	ऩीसा	मग	रेसा	ऩीम
	गरे	सानी	मग	रेसा
•	पनी	सांगं	रेसा	नीसां
	पनी	धप	मप	नीसां

- गंगं रेंसा नीध पम
  पनी धप साग रेसा
- पनी धप मग गम
  पनी सां - गंरे सारे
  नीध पध मप नीसां
- गम पनी सांग रेंसा
  मंगं मंगं रेंसा गरें
  सानी धप मप नीसां
- मप नीध पनी धप
  नीध पम पनी सांगं
  मंग रेसा पनी सां-
- नीसां गग रेसा नीसां
  पनी धप मप गम
  साग मप नीसां गरें
  सांनी धप मप नीसां
- गरे सारे सानी धप
  गम सांग मप नीसां
  गंगं रेंसां रेंरें सांनी

	धप	मप	नीसां	नीसां
•	नीसां	गं-	रेंसा	नीसां
	रें-	सांनी	धप	मप
	नी-	धप	मप	गम
	पनी	सांगं	रेंसा	नीसां
•	नीसां	गरे	सानी	धप
	मप	गम	मप	पनी
	सां-	गंरें	सामं	गंरे
	सांनी	धप	मप	नीसां

स्वयं जांच अभ्यास 3

10.11 भीमपलासी राग की द्रुत गत को केवल सितार वाद्य पर ही बजाते हैं?

क) हां

ख) नहीं

10.12 भीमपलासी राग की द्रुत गत में सम कौन सी मात्रा पर होता है?

क) 2

ख) 16

ग) 1

घ) 9

10.13 भीमपलासी राग की द्रुत गत में सम पर मिजराब का कौन सा बोल आता है?

क) रा

ख) दिर

ग) दा

घ) दारा

10.14 तीन ताल में, 9 मात्रा के तोड़े को किस मात्रा से शुरू करें कि वह सम पर समाप्त हो जाए?

क) 9

ख) 8

ग) 10

घ) 1

10.15 तीन ताल में, 16 मात्रा के तोड़े को किस मात्रा से शुरू करें कि वह सम पर समाप्त हो जाए?

क) 16

ख) 9

ग) 1

घ) 12

10.6 सारांश

भीमपलासी राग भारतीय शास्त्रीय संगीत का एक प्रचलित राग है। शास्त्रीय संगीत के वादन के अंतर्गत इस राग को गाया जाता है। भीमपलासी राग का आलाप अनिबद्ध (ताल रहित) होता है। इस राग में द्रुत गत को तेज लय में बजाया जाता है। द्रुत गत में तोड़ों का अपना महत्व है और विभिन्न प्रकार के तोड़ों को इसमें विभिन्न प्रकार की लयकारियों के साथ बजाया जाता है।

10.7 शब्दावली

- आलाप: वादन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, अनिबद्ध (ताल रहित) रूप सें राग के स्वरों का विस्तार धीमी लय में करना, आलाप कहलाता है।
- द्रुत गत: वादन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, ऐसी स्वर-रचना जो लयबद्ध व तालबद्ध हो तथा द्रुत लय में बजाई जाती हो उसे द्रुत गत कहते हैं।
- तोड़ा: साधारण रूप से राग के स्वरों का विस्तार जब विभिन्न प्रकार की लयों तथा लयकारियों में बांधकर, वाद्य पर बजाया जाता है तो उसे तोड़ा कहते हैं।

10.8 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

स्वयं जांच अभ्यास 1

10.1 उत्तर: क)

10.2 उत्तर: ग)

10.3 उत्तर: ग)

10.4 उत्तर: घ)

10.5 उत्तर: क)

10.6 उत्तर: क)

10.7 उत्तर: ख)

स्वयं जांच अभ्यास 2

10.8 उत्तर: क)

10.9 उत्तर: ख)

10.10 उत्तर: क)

स्वयं जांच अभ्यास 3

10.11 उत्तर: ख)

10.12 उत्तर: ग)

10.13 उत्तर: ग)

10.14 उत्तर: ख)

10.15 उत्तर: ग)

10.9 संदर्भ

डॉ. निर्मल सिंह से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त जानकारी, अप्रैल 2024।

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2015). राग परिचय (भाग 1-4), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2008). तंत्रिका विज्ञान, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

10.10 अनुशंसित पठन

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2005). स्वर सरिता, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

अत्रे, डॉ. प्रभा. (2007). स्वरंजनी रात्रिकालीन रागों की बंदिशों का संकलन, बी. आर. रिदम्स, दिल्ली।

झा, पं. रामाश्रय. (2020). अभिनव गीतांजलि (भाग 1-5), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

10.11 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. राग भीमपलासी का परिचय लिखिए।

प्रश्न 2. राग भीमपलासी के तीन आलाप लिखिए।

प्रश्न 3. राग भीमपलासी की द्रुत गत लिखिए।

प्रश्न 4. राग भीमपलासी की द्रुत गत के पांच तोड़े लिखिए।

इकाई-11
राग भीमपलासी का बड़ा ख्याल

इकाई की रूपरेखा

क्रम	विवरण
11.1	भूमिका
11.2	उद्देश्य तथा परिणाम
11.3	भीमपलासी राग का परिचय (गायन के संदर्भ में)
	स्वयं जांच अभ्यास 1
11.4	भीमपलासी राग का आलाप (गायन के संदर्भ में)
	स्वयं जांच अभ्यास 2
11.5	राग भीमपलासी का बड़ा ख्याल तथा तानें
11.5.1	भीमपलासी राग का बड़ा ख्याल
11.5.2	भीमपलासी राग के बड़े ख्याल की तानें
	स्वयं जांच अभ्यास 3
11.6	सारांश
11.7	शब्दावली
11.8	स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
11.9	संदर्भ
11.10	अनुशंसित पठन
11.11	पाठगत प्रश्न

11.1 भूमिका

संगीत (गायन तथा वादन) स्नात्कोत्तर के क्रियात्मक पाठ्यक्रम की इस इकाई में गायन संगीत के संदर्भ में, राग भीमपलासी का परिचय, आलाप, बड़ा ख्याल तथा तानों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति के माध्यम से विस्तार पूर्वक प्रस्तुत किया गया है। उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में रागों का प्रस्तुतिकरण विशेष रूप से होता है, जो सुनने में मधुरता से युक्त, कर्णप्रिय, वैचित्रतापूर्ण तथा आनंददायक होता है। आज के समय में शास्त्रीय संगीत के कलाकार रागों को अपने मंच प्रदर्शन के समय प्रस्तुत करते हैं। प्रस्तुत राग का, शास्त्रीय संगीत के अतिरिक्त, सुगम संगीत व फिल्मी संगीत में भी प्रयुक्त होता है, जिसके आधार पर कई मधुर गीतों, भजनों, गजलों इत्यादि का निर्माण हुआ है तथा हो रहा है। इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी राग भीमपलासी के स्वरूप के साथ-साथ उसके आलाप, बड़ा ख्याल तथा तानों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति में लिख सकने का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे। साथ ही क्रियात्मक रूप से राग भीमपलासी का आलाप, बड़ा ख्याल तथा तानों को गा सकेंगे।

11.2 उद्देश्य तथा परिणाम

सीखने के उद्देश्य

- भीमपलासी राग के स्वरूप की बुनियादी जानकारी प्रदान करना।
- भीमपलासी राग के आलाप, बड़ा ख्याल तथा तानों को भातखंडे स्वरलिपि में लिखने की क्षमता विकसित करना।
- भीमपलासी राग के आलाप, बड़ा ख्याल तथा तानों को बजाने की क्षमता विकसित करना।
- छात्र को गायन के दौरान सुधार करने का प्रयास करने के लिए प्रोत्साहित करना।

सीखने के परिणाम

- विद्यार्थी वादन के तकनीकी पहलुओं से अच्छी तरह परिचित हो जाएगा
- भीमपलासी राग के स्वरूप की बुनियादी जानकारी प्रदान करना।
- भीमपलासी राग के आलाप, बड़ा ख्याल तथा तानों को लिखने की निपुणता प्राप्त करने में सक्षम होंगे।

- भीमपलासी राग के आलाप, बड़ा ख्याल तथा तानों को गाने में सक्षम होंगे।
- राग भीमपलासी के विभिन्न रचनात्मक पहलुओं को मंच पर प्रदर्शित करने की क्षमता विकसित होगी और अनुभव भी प्राप्त होगा।

11.3 भीमपलासी राग का परिचय

राग - भीमपलासी

थाट – काफी

जाति – औड़व-संपूर्ण

वादी – मध्यम

संवादी – षड़ज

स्वर - गांधार, निषाद कोमल तथा अन्य स्वर शुद्ध

वर्जित स्वर - आरोह में रिषभ, धैवत

न्यास के स्वर – षड़ज, मध्यम, पंचम

समय - दिन का तीसरा प्रहर

समप्रकृतिक राग – धनाश्री

आरोह:- ऩी सा, ग म प नी सां।

अवरोह:- सां नी ध प, म प, म ग रे सा।

पकड़:- नी सा म, प ग म ग रे सा

मधुर व लोकप्रिय, भीमपलासी राग का थाट काफी है। इस राग की जाति औड़व-संपूर्ण है। भीमपलासी राग का वादी स्वर मध्यम तथा संवादी स्वर षड़ज है। प्रस्तुत राग में कोमल गांधार तथा कोमल निषाद का प्रयोग होता है व अन्य स्वर शुद्ध हैं। आरोह में रिषभ, धैवत स्वर वर्जित हैं। इस राग का गायन समय दिन का तीसरा प्रहर माना जाता है। इस राग को मंद्र सप्तक के निषाद से आरम्भ किया जाता है (ऩी सा ग म प)। इस राग में षड़ज, मध्यम, पंचम पर न्यास किया जाता है। इसमें प ग स्वरों की संगति विशेष है (नी सा म, प ग, म ग रे सा)। मंद्र तथा मध्य सप्तक में इस राग को गाने में अधिक सौंदर्य बोध होता है। इसका समप्रकृतिक राग धनाश्री है।

स्वयं जांच अभ्यास 1

11.1 भीमपलासी राग का वादी स्वर निम्न में से कौन सा है?

क) म

ख) नि

ग) सा

घ) ग

11.2 भीमपलासी राग का संवादी स्वर निम्न में से कौन सा है?

क) रे

ख) नि

ग) सा

घ) म

11.3 भीमपलासी राग का समय निम्न में से कौन सा है?

क) दिन का प्रथम प्रहर

ख) मध्य रात्रि

ग) दिन का तीसरा प्रहर

घ) दोपहर

11.4 भीमपलासी राग का आविष्कारक किसने किया था?

क) उ. विलायत खां

ख) पं. रवि शंकर

ग) तानसेन

घ) अज्ञात

11.5 भीमपलासी राग में, निम्न में से कौन सा स्वर कोमल होता है?

क) गंधार

ख) षड़ज

ग) मध्यम

घ) ऋषभ

11.6 भीमपलासी राग में किस स्वर को अधिकतर आन्दोलित किया जाता है?

क) नी

ख) प

ग) ध

घ) सा

11.7 भीमपलासी राग का थाट निम्न में से कौन सा है?

क) कल्याण

ख) काफी

ग) मारवा

घ) देस

11.4 आलाप

- सा, ऩी सा ग रे सा, ऩी सा ग म,

  ग म ग रे सा ऩी सा,

- सा रे सा, ऩी ध़ प़ प़,

  म़ प़ ऩी ऩी सा,

- ऩी सा ग म म प, प, म प नी ध प,

  म प नी नी सां सां

- प नी सां गं रें सां, मं गं रें सां,

सां, नी ध प, म प म ग रे सा, सा

- ऩी सा म म, ग म रे सा, सा रे

ऩी सा ग म प, म ग रे सा

स्वयं जांच अभ्यास 2

11.8 क्या भीमपलासी राग में ऩी सा रे सा स्वर संगति हो सकती है?

क) हां

ख) नहीं

11.9 क्या भीमपलासी राग में ध़ ऽ ऩी ध़ प़ गस्वर संगति हो सकती है?

क) हां

ख) नहीं

11.10 भीमपलासी राग के संदर्भ में निम्न में से कौन सी स्वर संगति ठीक है?

क) म ग रे सा

ख) म ग रे सा

ग) ग म रे सा

घ) म ग रे सा

11.5 राग भीमपलासी का बड़ा ख्याल तथा तानें

11.5.1 भीमपलासी बड़ा ख्याल विलम्बित लय एक ताल

स्थायी

								12	
								सासा	
								अब	
13	14	15	16		1	2	3	4	
3					**x**				
सा	रेरेसानी		नीसा	साम		म	-ग	-ग	नीसा
तो	ऽऽऽऽ		ऽऽ	बड़ि		बे	ऽ	ऽ	ऽ
5	6	7	8		9	10	11	12	
2					**0**				
मगप, मप		प	मग		मग	रेसा	ऽऽ	ऽऽ	
ऽऽऽ	ऽऽऽ,		र	भ		ई	ऽऽ	ऽऽ ऽऽ	
13	14	15	16		1	2	3	4	
3					**x**				
रेनी	नीनी	नीसा, साग			रे	सा	नीध	प़	
टे	ऽऽ	ऽऽ,	रत		हूँ	ऽ	मैं	ऽ	

5	6	7	8	9	10	11	12
2				**0**			
नीम़	प़	नीनी,	सानी	सा	-	ऩीसा,	सा
क	र	मऽ,	क	रे	ऽ	ऽऽ,	र
13	14	15	16	1	2	3	4
3				**x**			
सा	रेंरेंसानी	नीसा,	साम	म	-ग-	नी	सा
बा	ऽऽऽऽ	ऽऽ	मांडे	सा	ऽ	ऽ	ऽ
5	6	7	8	9	10	11	12
2				**0**			
मग	प	-,मप	[म]प	मग	मग	रेसा,	सासा
ऽऽ	ऽ	ऽऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ईऽ,	अब

अन्तरा

13	14	15	16	1	2	3	4
3				**x**			
प	प	ग,म	प	नी	सांसां	सा	[प]सां
भँ	वर	जं	ऽ	जा	ऽ	ऽल	में

5	6	7	8	9	10	11	12
2				**0**			
-	(सा)नी(सां)नी,	सांगं	रेंसा	(सां)नी	सां	(नी)ध	प
आ	ऽ	ऽऽ	नफं	सी	ऽ	ऽऽ	हूँऽ
13	14	15	16	1	2	3	4
3				**x**			
(म)पग	म	प	गम	ग	रे	सा	(सा)नी
भ	व	सा	ऽ	ग	र	में	ऽ
5	6	7	8	9	10	11	12
2				**0**			
सानी	- ,	साम	म	-ग-	ऽ	ऽ	ऽ
ग	हे	ऽ,	पक	रो	ऽ	ऽ	ऽ
13	14	15	16	1	2	3	4
3				**x**			
नीसा	मग	प,	मप	प	-	म	ग
ऽऽ	ऽऽ	ऽ	मोरी	बां	ऽ	ऽ	ऽ

5	6	7	8	9	10	11	12
2				**0**			
ग	नीसा	मगप	-,मप	मप	मग	मग	रेसा,
ऽ	ऽऽऽ	ऽऽऽ	ऽऽऽ,	ऽ	ऽऽ	ऽऽ	ईऽ

11.5.2 भीमपलासी राग की तानें

- गम पनी सांगंरेसा नीध पम गरे सा-
  पनी धप सांगं रेसा नीधपम गमपनी
  धपसांनी धप मग मग रेसा
- पनी धप मप गम पनी सांगं मंगंरेसा
  नीध पम गरे सा-
- नीध पनी धप नीध पम पनी सांमं रेसा
  नीध पम गरे सा-सा-
- गम मप पनी धप नीसां गंरें सांमं गंरें
  सांनी धप मग रेसा
- नीसां मग मगरेसा ऩीसा गम पम गम
  पनी धप नीसां गंरें
- सांनी धप मग रेसा ऩीसा गग रेसा नीसा

	गम पप	मप गम	पनी सांसां	नीसां गरे
	सांनीधप	मग रेसा		
	ऩीसागम	पग मप	गम पनी	सांनी रेसा
	गंगं रेंसा	मंगं रेसा	नीध पम	गरे सा-
•	गमपनी	धपमप	मगरेसा	रेसाऩीऽ
	ऽरेसाऩी	ऽऽरेसा	सांनीधप	मगरेसा
	ऩीसामग	रेसाऩीम	गरेसानी	मगरेसा
•	पनी सांगं	रेसा नीसां	पनी धप	मप नीसां
	गंगं रेंसा	नीध पम	पनी धप	साग रेसा
•	पनी धप	मग गम	पनी सां-	गरे सारे
	नीध पध	मप नीसां	गम पनी	सांग रेंसा
	मंगं मंगं	रेंसा गरें	सांनी धप	मप नीसां
•	मप नीध	पनी धप	नीध पम	पनी सांगं
	मंगं रेंसां	पनी सां-		
•	नीसां गग	रेसा नीसां	पनी धप	मप गम
	साग मप	नीसां गरें	सांनीधप	मप नीसां
•	गरें सारें	सांनी धप	गम साग	मप नीसां
	गंगं रेंसां	रेंरें सांनी	धप मप	नीसांनीसां

• नीसां गं-	रेंसा नीसां	रें- सांनी	धपमप
नी- धप	मप गम	पनी सांगं	रेंसा नीसां
• नीसां गरे	सानी धप	मप गम	मप पनी
सां- गंरें	सामं गंरे	सांनी धप	मप नीसां
• ऩीऩीऩीरेसा	गममपम	गममपपमम	पऽमगऽरेसाऽ
ऩीऩीऩीरेसा	ऽप़ऽऩी	साऽऽ	ऽपऽऩी
साऽऽऽ	ऽप़ऩी	साऽऽऽ	
• ऩीऽऩीरेसा	गममपम	मगगरेसा	ऽऩीऽऩी
साऽऽऽ	मगगरेसा	ऽऩीऽऩी	साऽऽऽ
मगगरेसा	ऽऩीऽऩी	साऽऽऽ	

स्वयं जांच अभ्यास 3

11.11 भीमपलासी राग के बड़े ख्याल में सम कौन सी मात्रा पर होता है?

क) 2

ख) 16

ग) 1

घ) 9

11.12 भीमपलासी राग का बड़ा ख्याल मध्य लय में होता है?

क) हां

ख) नहीं

11.13 भीमपलासी राग का बड़ा ख्याल केवल गाते हैं?

क) हां

ख) नहीं

11.14 एक ताल में, 8 मात्रा की तान को किस मात्रा से शुरू करें कि वह सम पर समाप्त हो जाए?

क) 8

ख) 5

ग) 10

घ) 1

11.15 एक ताल में, 16 मात्रा की तान को किस मात्रा से शुरू करें कि वह सम पर समाप्त हो जाए?

क) 11

ख) 3

ग) 9

घ) 12

11.6 सारांश

भीमपलासी राग भारतीय शास्त्रीय संगीत का एक प्रचलित राग है। शास्त्रीय संगीत के गायन के अंतर्गत इस राग को गाया जाता है। भीमपलासी राग का आलाप अनिबद्ध (ताल रहित) होता है। इस राग में बड़ा ख्याल, धीमी लय में गाया जाता है। बड़ा ख्याल में तानों का अपना महत्व है और विभिन्न प्रकार की तानों को इसमें विभिन्न प्रकार की लयकारियों के साथ गाया जाता है।

11.7 शब्दावली

- आलाप: वादन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, अनिबद्ध (ताल रहित) रूप सें राग के स्वरों का विस्तार धीमी लय में करना, आलाप कहलाता है।
- बड़ा ख्याल: गायन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, ऐसी गीत रचना, जो स्वरबद्ध, लयबद्ध व तालबद्ध हो तथा विलंबित लय में गाई जाती हो उसे छोटा ख्याल कहते हैं।
- तान: साधारण रूप से राग के स्वरों का विस्तार जब विभिन्न प्रकार की लयों तथा लयकारियों में बांधकर, गाया जाता है तो उसे तान कहते हैं।

11.8 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

स्वयं जांच अभ्यास 1

11.1 उत्तर:क)

11.2 उत्तर:ग)

11.3 उत्तर:ग)

11.4 उत्तर:घ)

11.5 उत्तर:क)

11.6 उत्तर:क)

11.7 उत्तर:ख)

स्वयं जांच अभ्यास 2

11.8 उत्तर:क)

11.9 उत्तर:ख)

11.10 उत्तर:क)

स्वयं जांच अभ्यास 3

11.11 उत्तर:ग)

11.12 उत्तर:ख)

11.13 उत्तर:क)

11.14 उत्तर:ख)

11.15 उत्तर:ग)

11.9 संदर्भ

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2015). राग परिचय (भाग 1-4), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

भातखंडे, विष्णुनारायण. (1970). क्रमिक पुस्तक मलिका. खंड 1-6, संगीत कार्यालय हाथरस।

झा, पं. रामाश्रय. (2020). अभिनव गीतांजलि (भाग 1-5), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

11.10 अनुशंसित पठन

भातखंडे, विष्णुनारायण. (2017). क्रमिक पुस्तक मलिका. खंड 1-6, संगीत कार्यालय हाथरस।

अत्रे, डॉ. प्रभा. (2007). स्वरंजनी रात्रिकालीन रागों की बंदिशों का संकलन, बी. आर. रिदम्स, दिल्ली।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

झा, पं. रामाश्रय. (2020). अभिनव गीतांजलि (भाग 1-5), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

11.11 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. राग भीमपलासी का परिचय लिखिए।

प्रश्न 2. राग भीमपलासी के तीन आलाप लिखिए।

प्रश्न 3. राग भीमपलासी के बड़े ख्याल को लिखिए।

प्रश्न 4. राग भीमपलासी के बड़े ख्याल की पांच तानों को लिखिए।

इकाई-12
राग भीमपलासी - छोटा ख्याल

इकाई की रूपरेखा

क्रम	विवरण
12.1	भूमिका
12.2	उद्देश्य तथा परिणाम
12.3	भीमपलासी राग का परिचय (गायन के संदर्भ में)
	स्वयं जांच अभ्यास 1
12.4	भीमपलासी राग का आलाप (गायन के संदर्भ में)
	स्वयं जांच अभ्यास 2
12.5	राग भीमपलासी का छोटा ख्याल तथा तानें
	12.5.1 भीमपलासी राग का छोटा ख्याल
	12.5.2 भीमपलासी राग के छोटे ख्याल की तानें
	स्वयं जांच अभ्यास 3
12.6	सारांश
12.7	शब्दावली
12.8	स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
12.9	संदर्भ
12.10	अनुशंसित पठन
12.11	पाठगत प्रश्न

12.1 भूमिका

संगीत (गायन तथा वादन) स्नात्कोत्तर के क्रियात्मक पाठ्यक्रम की इस इकाई में गायन संगीत के संदर्भ में, राग भीमपलासी का परिचय, आलाप, छोटा ख्याल तथा तानों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति के माध्यम से विस्तार पूर्वक प्रस्तुत किया गया है। उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में रागों का प्रस्तुतिकरण विशेष रूप से होता है, जो सुनने में मधुरता से युक्त, कर्णप्रिय, वैचित्रतापूर्ण तथा आनंददायक होता है। आज के समय में शास्त्रीय संगीत के कलाकार रागों को अपने मंच प्रदर्शन के समय प्रस्तुत करते हैं। प्रस्तुत राग का, शास्त्रीय संगीत के अतिरिक्त, सुगम संगीत व फिल्मी संगीत में भी प्रयुक्त होता है, जिसके आधार पर कई मधुर गीतों, भजनों, गजलों इत्यादि का निर्माण हुआ है तथा हो रहा है। इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी राग भीमपलासी के स्वरूप के साथ-साथ उसके आलाप, छोटा ख्याल तथा तानों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति में लिख सकने का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे। साथ ही क्रियात्मक रूप से राग भीमपलासी का आलाप, छोटा ख्याल तथा तानों को गा सकेंगे।

12.2 उद्देश्य तथा परिणाम

सीखने के उद्देश्य

- भीमपलासी राग के स्वरूप की बुनियादी जानकारी प्रदान करना।
- भीमपलासी राग के आलाप, छोटा ख्याल तथा तानों को भातखंडे स्वरलिपि में लिखने की क्षमता विकसित करना।
- भीमपलासी राग के आलाप, छोटा ख्याल तथा तानों को बजाने की क्षमता विकसित करना।
- छात्र को गायन के दौरान सुधार करने का प्रयास करने के लिए प्रोत्साहित करना।

सीखने के परिणाम

- विद्यार्थी वादन के तकनीकी पहलुओं से अच्छी तरह परिचित हो जाएगा
- भीमपलासी राग के स्वरूप की बुनियादी जानकारी प्रदान करना।
- भीमपलासी राग के आलाप, छोटा ख्याल तथा तानों को लिखने की निपुणता प्राप्त करने में सक्षम होंगे।

- भीमपलासी राग के आलाप, छोटा ख्याल तथा तानों को गाने में सक्षम होंगे।
- राग भीमपलासी के विभिन्न रचनात्मक पहलुओं को मंच पर प्रदर्शित करने की क्षमता विकसित होगी और अनुभव भी प्राप्त होगा।

12.3 भीमपलासी राग का परिचय

राग - भीमपलासी

थाट – काफी

जाति – औड़व-संपूर्ण

वादी – मध्यम

संवादी – षड़ज

स्वर - गांधार, निषाद कोमल तथा अन्य स्वर शुद्ध

वर्जित स्वर - आरोह में रिषभ, धैवत

न्यास के स्वर – षड़ज, मध्यम, पंचम

समय - दिन का तीसरा प्रहर

समप्रकृतिक राग – धनाश्री

आरोह:- ऩी सा, ग म प नी सां।

अवरोह:- सां नी ध प, म प, म ग रे सा।

पकड़:- नी सा म, प ग म ग रे सा

मधुर व लोकप्रिय, भीमपलासी राग का थाट काफी है। इस राग की जाति औड़व-संपूर्ण है। भीमपलासी राग का वादी स्वर मध्यम तथा संवादी स्वर षड़ज है। प्रस्तुत राग में कोमल गांधार तथा कोमल निषाद का प्रयोग होता है व अन्य स्वर

शुद्ध हैं। आरोह में रिषभ, धैवत स्वर वर्जित हैं। इस राग का गायन समय दिन का तीसरा प्रहर माना जाता है। इस राग को मंद्र सप्तक के निषाद से आरम्भ किया जाता है (ऩी सा ग म प)। इस राग में षड़ज, मध्यम, पंचम पर न्यास किया जाता है। इसमें प ग स्वरों की संगति विशेष है (नी सा म, प ग, म ग रे सा)। मंद्र तथा मध्य सप्तक में इस राग को गाने में अधिक सौंदर्य बोध होता है। इसका समप्रकृतिक राग धनाश्री है।

स्वयं जांच अभ्यास 1

12.1 भीमपलासी राग का वादी स्वर निम्न में से कौन सा है?

क) म

ख) नि

ग) सा

घ) ग

12.2 भीमपलासी राग का संवादी स्वर निम्न में से कौन सा है?

क) रे

ख) नि

ग) सा

घ) म

12.3 भीमपलासी राग का समय निम्न में से कौन सा है?

क) दिन का प्रथम प्रहर

ख) मध्य रात्रि

ग) दिन का तीसरा प्रहर

घ) दोपहर

12.4 भीमपलासी राग का आविष्कारक किसने किया था?

क) उ. विलायत खां

ख) पं. रवि शंकर

ग) तानसेन

घ) अज्ञात

12.5 भीमपलासी राग में, निम्न में से कौन सा स्वर कोमल होता है?

क) गंधार

ख) षड़ज

ग) मध्यम

घ) ऋषभ

12.6 भीमपलासी राग में किस स्वर को अधिकतर आन्दोलित किया जाता है?

क) नी

ख) प

ग) ध

घ) सा

12.7 भीमपलासी राग का थाट निम्न में से कौन सा है?

क) कल्याण

ख) काफी

ग) मारवा

घ) देस

12.4 आलाप

- सा, ऩी सा ग रे सा, ऩी सा ग म,

  ग म ग रे सा ऩी सा,

- सा रे सा, ऩी ध़ प़ प़,

  म़ प़ ऩी ऩी सा,

- ऩी सा ग म म प, प, म प नी ध प,

  म प नी नी सां सां

- प नी सां गं रें सां, मं गं रें सां,

  सां, नी ध प, म प म ग रे सा, सा

- ऩी सा म म, ग म रे सा, सा रे

  ऩी सा ग म प, म ग रे सा

स्वयं जांच अभ्यास 2

12.8 क्या भीमपलासी राग में ऩी सा रे सा स्वर संगति हो सकती है?

क) हां

ख) नहीं

12.9 क्या भीमपलासी राग में ध़ ऽ ऩी ध़ प़ गस्वर संगति हो सकती है?

क) हां

ख) नहीं

12.10 भीमपलासी राग के संदर्भ में निम्न में से कौन सी स्वर संगति ठीक है?

क) म ग रे सा

ख) म ग रे सा

ग) ग म रे सा

घ) म ग रे सा

12.5 राग भीमपलासी का छोटा ख्याल तथा तानें

12.5.1 भीमपलासी छोटा ख्याल द्रुत लय तीन ताल

x				2				0				3			
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
स्थायी															
														[म]प	-
														जा	ऽ
[म]ग	-	रे	सा	रे	नी	सा	-	[नि]सा	-	[सा]म	म	म	-	[म]नी	प
जा	ऽ	रे	ऽ	अ	प	ने	ऽ	मं	ऽ	दि	र	वा	ऽ	जा	ऽ
[म]ग	[म]ग	रे	सा	रे	नी	सा	-	[नी]सा	-	[सा]म	म	म	-	[म]ग	म
जा	ऽ	रे	ऽ	अ	प	ने	ऽ	मं	ऽ	दि	र	वा	ऽ	सु	न
प[सां]	नी	सां	गं	रें	-	सां	-	रें	नी	सां	प	[म]ग	-	प	-
पा	ऽ	वे	ऽ	गी	ऽ	सा	ऽ	स	न	न	दि	या	ऽ	जा	ऽ

x				2				0				3			
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
अन्तरा															
प	प	प	म	प	-	ग	म	प	प	(सां)नी	(सां)नी	सां	सां	सां	-
सु	न	हो	स	दा	ऽ	रं	ग	तु	म	को	चा	ह	त	है	ऽ
(सां)नी	(सां)नी	सां	गं	रें	रें	सां	-	(सां)नी	नी	सां	सां	प	म	नी	प
क्या	ऽ	तु	म	ह	म	को	ऽ	छ	ग	न	दि	या	ऽ,	जा	ऽ
(म)ग	(म)ग	रे	सा	रे	ऩी	सा	-								
जा	ऽ	रे	ऽ	अ	प	ने	ऽ								

12.5.2 भीमपलासी राग की तानें

- गम पनी धप मप
  मग रेसा रेसा ऩीऽ
  ऽरे साऩी ऽऽ रेसा

- गम पनी सांगं रेसा
  नीध पम गरे सा-
- पनी धप सांगं रेसा नीध
- पम गम पनी धप
  सांनी धप मग रेसा
- पनी धप मप गम
  पनी सांगं मंगं रेसा
  नीध पम गरे सा
- नीध पनी धप नीध
  पम पनी सांमं रेसा
  नीध पम गरे सा-
- गम मप पनी धप
  नीसां गंरे सामं गरे
  सानी धप मग रेसा
- नीसा मग मग रेसा
  नीसा गम पम गम
  पनी धप नीसां गरे
- सांनी धप मग रेसा

•	ऩीसा	गग	रेसा	नीसा
	गम	पप	मप	गम
	पनी	सांसां	नीसां	गरे
	सांनी	धप	मग	रेसा
•	ऩीसा	गम	पग	मप
	गम	पनी	सांनी	रेसा
	गंगं	रेंसा	मंगं	रेसा
	नीध	पम	गरे	सा-
•	सांनी	धप	मग	रेसा
	ऩीसा	मग	रेसा	ऩीम
	गरे	सानी	मग	रेसा
•	पनी	सांगं	रेसा	नीसां
	पनी	धप	मप	नीसां
•	गंगं	रेंसा	नीध	पम
	पनी	धप	साग	रेसा
•	पनी	धप	मग	गम
	पनी	सां -	गंरे	सारे
	नीध	पध	मप	नीसां

- गम पनी सांग रेंसा
  मंगं मंगं रेंसा गरें
  सानी धप मप नीसां

- मप नीध पनी धप
  नीध पम पनी सांगं
  मंग रेसा पनी सां-

- नीसां गग रेसा नीसां
  पनी धप मप गम
  साग मप नीसां गरें
  सांनी धप मप नीसां

- गरे सारे सानी धप
  गम सांग मप नीसां
  गंगं रेंसां रेंरें सांनी
  धप मप नीसां नीसां

- नीसां गं- रेसा नीसां
  रें- सांनी धप मप
  नी- धप मप गम
  पनी सांगं रेंसा नीसां

• नीसां	गरे	सानी	धप
मप	गम	मप	पनी
सां-	गरें	सामं	गरें
सांनी	धप	मप	नीसां

स्वयं जांच अभ्यास 3

12.11 भीमपलासी राग के छोटे ख्याल में सम कौन सी मात्रा पर होता है?

क) 2

ख) 16

ग) 1

घ) 9

12.12 भीमपलासी राग के छोटे ख्याल में सम पर कौन सा अक्षर (शब्द) आता है?

क) सम

ख) प

ग) कोई भी

घ) कोई भी अक्षर नहीं आता

12.13 तीन ताल में, 8 मात्रा की तान को किस मात्रा से शुरू करें कि वह सम पर समाप्त हो जाए?

क) 8

ख) 9

ग) 10

घ) 1

12.14 तीन ताल में, 16 मात्रा की तान को किस मात्रा से शुरू करें कि वह सम पर समाप्त हो जाए?

क) 16

ख) 9

ग) 1

घ) 12

12.6 सारांश

भीमपलासी राग भारतीय शास्त्रीय संगीत का एक प्रचलित राग है। शास्त्रीय संगीत के गायन के अंतर्गत इस राग को गाया जाता है। भीमपलासी राग का आलाप अनिबद्ध (ताल रहित) होता है। इस राग में छोटा ख्याल, तेज लय में गाया जाता है। छोटा ख्याल में तानों का अपना महत्व है और विभिन्न प्रकार की तानों को इसमें विभिन्न प्रकार की लयकारियों के साथ गाया जाता है।

12.7 शब्दावली

- आलाप: वादन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, अनिबद्ध (ताल रहित) रूप सें राग के स्वरों का विस्तार धीमी लय में करना, आलाप कहलाता है।
- छोटा ख्याल: गायन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, ऐसी गीत रचना, जो स्वरबद्ध, लयबद्ध व तालबद्ध हो तथा मध्य या द्रुत लय में गाई जाती हो उसे छोटा ख्याल कहते हैं।
- बड़ा ख्याल: गायन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, ऐसी गीत रचना, जो स्वरबद्ध, लयबद्ध व तालबद्ध हो तथा विलंबित लय में गाई जाती हो उसे छोटा ख्याल कहते हैं।
- तान: साधारण रूप से राग के स्वरों का विस्तार जब विभिन्न प्रकार की लयों तथा लयकारियों में बांधकर, गाया जाता है तो उसे तान कहते हैं।

12.8 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

स्वयं जांच अभ्यास 1

12.1 उत्तर:क)

12.2 उत्तर:ग)

12.3 उत्तर:ग)

12.4 उत्तर:घ)

12.5 उत्तर:क)

12.6 उत्तर:क)

12.7 उत्तर:ख)

स्वयं जांच अभ्यास 2

12.8 उत्तर:क)

12.9 उत्तर:ख)

12.10 उत्तर:क)

स्वयं जांच अभ्यास 3

12.11 उत्तर:ग)

12.12 उत्तर:ग)

12.13 उत्तर:ख)

12.14 उत्तर:ग)

12.9 संदर्भ

डॉ. केशव शर्मा से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त जानकारी, मार्च 2024।

अत्रे, डॉ. प्रभा. (2007). स्वरंजनी रात्रिकालीन रागों की बंदिशों का संकलन, बी. आर. रिदम्स, दिल्ली।

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2010). मधुर स्वरलिपि संग्रह (भाग 1-3), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

भातखंडे, विष्णुनारायण. (1970). क्रमिक पुस्तक मलिका. खंड 1-6, संगीत कार्यालय हाथरस।

12.10 अनुशंसित पठन

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

झा, पं. रामाश्रय. (2020). अभिनव गीतांजलि (भाग 1-5), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

12.11 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. राग भीमपलासी का परिचय लिखिए।

प्रश्न 2. राग भीमपलासी के तीन आलाप लिखिए।

प्रश्न 3. राग भीमपलासी के छोटा ख्याल को लिखिए।

प्रश्न 4. राग भीमपलासी के छोटे ख्याल की पांच तानों को लिखिए।

इकाई-13

लोक गीत - 'शिव कैलासो के वासी'

इकाई की रूपरेखा

क्रम	विवरण
13.1	भूमिका
13.2	उद्देश्य तथा परिणाम
13.3	लोक गीत 'शिव कैलासो के वासी'
13.3.1	लोक गीत 'शिव कैलासो के वासी' का परिचय
13.3.2	लोक गीत 'शिव कैलासो के वासी' के बोल
13.3.3	लोक गीत 'शिव कैलासो के वासी' की स्वरलिपि
	स्वयं जांच अभ्यास 1
13.4	सारांश
13.5	शब्दावली
13.6	स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
13.7	संदर्भ
13.8	अनुशंसित पठन
13.9	पाठगत प्रश्न

13.1 भूमिका

संगीत (वादन तथा वादन) में, स्नातकोत्तर के क्रियात्मक पाठ्यक्रम की इस इकाई में लोक गीत को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति के माध्यम से विस्तार पूर्वक प्रस्तुत किया गया है। लोक संगीत, भारतीय संस्कृति का एक विशेष रूप है। लोक संगीत के अंतर्गत वादन, गायन व नृत्य तीनों आते हैं। लोक गीत, लोक संगीत का एक प्रमुख भाग है। लोकगीतों में लोक संस्कृति से संबंधित सामग्री मिलती है। इसमें भक्ति रस, श्रृंगार, करुण, वीर रस आदि से संबंधित गीत मिलते हैं। इन गीतों के रचयिता का नाम अज्ञात होता है परंतु यह गीत लोक संस्कृति तथा उस क्षेत्र के संबंध में विस्तृत रूप से जानकारी प्रदान करते हैं। इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी लोक गीत को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति में लिख सकने का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे, साथ ही क्रियात्मक रूप से बजा तथा गा सकेंगे।

13.2 उद्देश्य तथा परिणाम

सीखने के उद्देश्य

- लोक गीत के स्वरूप की संक्षिप्त जानकारी प्रदान करना।
- 'शिव कैलाशों के वासी' लोक गीत को भातखंडे स्वरलिपि में लिखने की क्षमता विकसित करना।
- 'शिव कैलाशों के वासी' लोक गीत को बजाने तथा गाने की क्षमता विकसित करना।
- छात्र को गायन के दौरान सुधार करने का प्रयास करने के लिए प्रोत्साहित करना।

सीखने के परिणाम

- विद्यार्थी गायन के तकनीकी पहलुओं से अच्छी तरह परिचित हो जाएगा
- 'शिव कैलाशों के वासी' लोक गीत को लिखने की निपुणता प्राप्त करने में सक्षम होंगे।
- 'शिव कैलाशों के वासी' लोक गीत को गाने में सक्षम होंगे।
- लोक गीत के विभिन्न रचनात्मक पहलुओं को मंच पर प्रदर्शित करने की क्षमता विकसित होगी और अनुभव भी प्राप्त होगा।

13.3 लोक गीत 'शिव कैलाशों के वासी'

13.3.1 लोक गीत का परिचय

प्रस्तुत लोकगीत हिमाचल प्रदेश का एक प्रसिद्ध लोकगीत है। यह यह भक्ति रस से प्रधान गीत है। इस गीत में भगवान शिव की स्तुति की गई है। भगवान शिव को कैलाश का वासी बताया गया है और धौलीधार पर्वत का राजा बताया गया है तथा प्रार्थना की गई है कि वह हमारे संकटों को दूर करें और हमें सुख समृद्धि प्रदान करें। यह गीत चाचर ताल में निबद्ध है जो दीपचंदी के लिए सदृश्य है। यह 14 मात्रा की ताल है। इसे मध्य लय में गाया जाता है।

13.3.2 लोक गीत के बोल

शिव कैलाशों के वासी

स्थाई

शिव कैलाशों के वासी,

धौलीधारों के राजा

शंकर संकट हरणा।

अन्तरा

तेरे कैलाशों का अंत ना पाया,

अंत बेअंत तेरी माया,

ओ भोले बाबा

अंत बेअंत तेरी माया

शिव कैलाशों के वासी, धौलीधारों के राजा

बेल की पत्ती भांग धतूरा

शिवजी के मान को लुभाए

ओ भोले बाबा

शिवजी के मन को लुभाए

शिव कैलाशों के वासी, धौलीधारों के राजा....

एक था डेरा तेरा,चांबे रे चौगाना

दूजा लाई दीता भरमौरा

ओ भोले बाबा

दूजा लाई दीता भरमौरा

शिव कैलाशों के वासी, धौलीधारों के राजा....

दूरा बे दूरां ते जातरू जे आंदे,

करदे जै जै कारा,

ओ भोले बाबा

करदे जय जयकारा

शिव कैलाशों के वासी, धौलीधारों के राजा....

13.3.3 लोक गीत की स्वरलिपि

x			**2**				**0**			**3**			
1	**2**	**3**	**4**	**5**	**6**	**7**	**8**	**9**	**10**	**11**	**12**	**13**	**14**
स्थाई													
										ग	रे	ग	-
										शि	व	कै	ऽ
म	-	-	ग	रे	ग	रे	सा	सा	-	ग	रे	ग	-
ला	ऽ	ऽ	शों	ऽ	ऽ	के	रा	जा	ऽ	धौ	ऽ	ली	ऽ
म	-	-	ग	रे	ग	रे	सा	सा	-	नि	-	-	-
धा	ऽ	ऽ	रों	ऽ	के	ऽ	रा	ऽ	ऽ	जा	ऽ	ऽ	ऽ
प़	-	-	ऩि	-	-	ऩि	सा	-	-	ग	रे	ग	रे
सं	ऽ	ऽ	क	ऽ	ऽ	ट	शं	ऽ	ऽ	क	ऽ	ऽ	र
ऩि	ऩि	ऽ	सा	-	-	-	-	-	-				
ह	र	ऽ	ना	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ				

x			2				0			3			
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14
अन्तरा													
रे	-	-	म	-	म	-	प	-	-	प	-	प	-
ते	ऽ	ऽ	रे	ऽ	कै	ऽ	ला	ऽ	ऽ	शा	ऽ	रा	ऽ
म	-	प	ध	प	ध	प	म	-	-	ग	-	रे	-
अं	ऽ	ऽ	त	ऽ	ऽ	नी	पा	ऽ	ऽ	या	ऽ	ऽ	ऽ
म	म	-	म	-	म	-	ग	-	-	सा	-	रे	-
ल	ग	ऽ	न	ऽ	र	ऽ	हे	ऽ	ऽ	ते	ऽ	रे	ऽ
ऩि	ऩि	ऽ	सा	-	-	रे	रे	म	प	सां	-	सां	-
च	र	ऽ	णा	ऽ	ऽ	हो	मे	रे	ऽ	शं	ऽ	भू	ऽ
प	ध	-	म	-	म	-	ग	-	-	सा	-	रे	-
ल	ग	ऽ	न	ऽ	र	ऽ	हे	ऽ	ऽ	ते	ऽ	रे	ऽ
ऩि	ऩि	ऽ	सा	-	-	-	-	-	-				
च	र	ऽ	णा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ				

स्वयं जांच अभ्यास 1

13.1 दीपचंदी ताल में कितनी मात्राएं होती हैं?

क) 14

ख) 12

ग) 16

घ) 8

13.2 लोक संगीत के अंतर्गत निम्न में से कौन आता है?

क) गायन, नृत्य

ख) गायन, वादन, नृत्य

ग) वादन, नृत्य

घ) गायन, वादन, नृत्य, शास्त्रीय संगीत

13.3 प्रस्तुत लोक गीत किस राज्य का लोक गीत है?

क) हिमाचल प्रदेश

ख) पंजाब

ग) हरियाणा

घ) जम्मू कश्मीर

13.4 सारांश

भगवान शिव के संबंधित यह एक लोकप्रिय तथा मधुर लोकगीत है। जो चाचर ताल, 14 मात्रा की, में गाया जाता है। इसकी लय मध्य है। इस लोकगीत को हिमाचल प्रदेश के पारंपरिक लोक वाद्यों के साथ गाया जाता है

13.5 शब्दावली

- आंदे - आते हैं

- जातरू - तीर्थयात्री
- हरणा - हरण करने वाले
- लय: वादन/आायन में बीत रहे समय की समान गति को 'लय' कहा जाता है।
- द्रुत लय: वादन/गायन के अंतर्गत जब लय बहुत तेज गति मे चलती है तो उसे द्रुत लय कहते हैं।

13.6 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

स्वयं जांच अभ्यास 1

13.1 उत्तर: क)

13.2 उत्तर: ख)

13.3 उत्तर: क)

13.7 संदर्भ

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2008). तंत्रिका विज्ञान, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

13.8 अनुशंसित पठन

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2005). स्वर सरिता, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

झा, पं. रामाश्रय. (2040). अभिनव गीतांजलि (भाग 1-5), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2008). तंत्रिका विज्ञान, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

13.9 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. किसी एक लोकगीत की स्वरलिपि लिखिए।

प्रश्न 2. किसी एक लोक गीत को गाकर सुनाइए।

इकाई-14

लोक धुन - 'शिव कैलाशों के वासी'

इकाई की रूपरेखा

क्रम	विवरण
14.1	भूमिका
14.2	उद्देश्य तथा परिणाम
14.3	लोक गीत 'शिव कैलासो के वासी'
14.3.1	लोक गीत 'शिव कैलासो के वासी' का परिचय
14.3.2	लोक गीत 'शिव कैलासो के वासी' के बोल
14.3.3	लोक धुन 'शिव कैलासो के वासी' की स्वरलिपि
	स्वयं जांच अभ्यास 1
14.4	सारांश
14.5	शब्दावली
14.6	स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
14.7	संदर्भ
14.8	अनुशंसित पठन
14.9	पाठगत प्रश्न

14.1 भूमिका

संगीत (वादन तथा वादन) में, स्नातकोत्तर के क्रियात्मक पाठ्यक्रम की इस इकाई में लोक धुन को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति के माध्यम से विस्तार पूर्वक प्रस्तुत किया गया है। लोक संगीत, भारतीय संस्कृति का एक विशेष रूप है। लोक संगीत के अंतर्गत वादन, गायन व नृत्य तीनों आते हैं। लोक गीत, लोक संगीत का एक प्रमुख भाग है। लोकगीतों में लोक संस्कृति से संबंधित सामग्री मिलती है। इसमें भक्ति रस, श्रृंगार, करुण, वीर रस आदि से संबंधित गीत मिलते हैं। इन गीतों के रचयिता का नाम अज्ञात होता है परंतु यह गीत लोक संस्कृति तथा उस क्षेत्र के संबंध में विस्तृत रूप से जानकारी प्रदान करते हैं। इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी लोक धुन को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति में लिख सकने का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे, साथ ही क्रियात्मक रूप से बजा सकेंगे।

14.2 उद्देश्य तथा परिणाम

सीखने के उद्देश्य

- लोक धुन के स्वरूप की संक्षिप्त जानकारी प्रदान करना।
- 'शिव कैलाशों के वासी' लोक धुन को भातखंडे स्वरलिपि में लिखने की क्षमता विकसित करना।
- 'शिव कैलाशों के वासी' लोक धुन को बजाने तथा गाने की क्षमता विकसित करना।
- छात्र को वादन के दौरान सुधार करने का प्रयास करने के लिए प्रोत्साहित करना।

सीखने के परिणाम

- विद्यार्थी वादन के तकनीकी पहलुओं से अच्छी तरह परिचित हो जाएगा
- 'शिव कैलाशों के वासी' लोक धुन को लिखने की निपुणता प्राप्त करने में सक्षम होंगे।
- 'शिव कैलाशों के वासी' लोक धुन को बजाने में सक्षम होंगे।
- लोक धुन के विभिन्न रचनात्मक पहलुओं को मंच पर प्रदर्शित करने की क्षमता विकसित होगी और अनुभव भी प्राप्त होगा।

14.3 लोक धुन 'शिव कैलाशों के वासी'

14.3.1 लोक धुन का परिचय

प्रस्तुत लोकधुन, हिमाचल प्रदेश के एक प्रसिद्ध लोकगीत 'शिव कैलाशों के वासी' पर आधारित है। यह यह भक्ति रस से प्रधान धुन है। इस गीत में भगवान शिव की स्तुति की गई है। भगवान शिव को कैलाश का वासी बताया गया है और धौलीधार पर्वत का राजा बताया गया है तथा प्रार्थना की गई है कि वह हमारे संकटों को दूर करें और हमें सुख समृद्धि प्रदान करें। यह धुन चाचर ताल में निबद्ध है जो दीपचंदी के लिए सदृश्य है। यह 14 मात्रा की ताल है। इसे मध्य लय में बजाया जाता है।

14.3.2 लोक धुन/गीत के बोल

स्थाई

शिव कैलाशों के वासी,

धौलीधारों के राजा

शंकर संकट हरणा।

अन्तरा

तेरे कैलाशों का अंत ना पाया,

अंत बेअंत तेरी माया,

ओ भोले बाबा

अंत बेअंत तेरी माया

शिव कैलाशों के वासी, धौलीधारों के राजा

बेल की पत्ती भांग धतूरा

शिवजी के मान को लुभाए

ओ भोले बाबा

शिवजी के मन को लुभाए

शिव कैलाशों के वासी, धौलीधारों के राजा....

एक था डेरा तेरा,चांबे रे चौगाना

दूजा लाई दीता भरमौरा

ओ भोले बाबा

दूजा लाई दीता भरमौरा

शिव कैलाशों के वासी, धौलीधारों के राजा....

दूरा बे दूरां ते जातरू जे आंदे,

करदे जै जै कारा,

ओ भोले बाबा

करदे जय जयकारा

शिव कैलाशों के वासी, धौलीधारों के राजा....

14.3.3 लोक धुन 'शिव कैलाशों के वासी'

x			2				0			3			
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14
स्थाई													
										ग	रे	ग	-
										दा	रा	दा	ऽ
म	-	-	ग	रे	ग	रे	सा	सा	-	ग	रे	ग	-
दा	ऽ	ऽ	दा	रा	दा	रा	दा	रा	ऽ	दा	रा	दा	ऽ
म	-	-	ग	रे	ग	रे	सा	सा	-	नि	-	-	-
दा	ऽ	ऽ	दा	रा	दा	रा	दा	रा	ऽ	दा	ऽ	ऽ	ऽ
प़	-	-	ऩि	-	-	ऩि	सा	-	-	ग	रे	ग	रे
दा	ऽ	ऽ	दा	ऽ	ऽ	दा	रा	ऽ	ऽ	दा	रा	दा	रा
ऩि	ऩि	ऽ	सा	-	-	-	-	-	-				
दा	रा	ऽ	रा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ				

x			2				0			3			
1	**2**	**3**	**4**	**5**	**6**	**7**	**8**	**9**	**10**	**11**	**12**	**13**	**14**
										ग	रे	ग	-
										दा	रा	दा	ऽ
म	-	-	ग	रे	ग	रे	सा	सा	-	ग	रे	ग	-
दा	ऽ	ऽ	दा	रा	दा	रा	दा	रा	ऽ	दा	रा	दा	ऽ
म	-	-	ग	रे	ग	रे	सा	सा	-	नि	-	-	-
दा	ऽ	ऽ	दा	रा	दा	रा	दा	रा	ऽ	दा	ऽ	ऽ	ऽ
प़	-	-	ऩि	-	-	ऩि	सा	-	-	ग	रे	ग	रे
दा	ऽ	ऽ	दा	ऽ	ऽ	दा	रा	ऽ	ऽ	दा	रा	दा	रा
ऩि	ऩि	ऽ	सा	-	-	-	-	-	-				
दा	रा	ऽ	रा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ				

x			2				0			3			
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14
अन्तरा													
रे	रे	-	म	-	म	-	प	-	-	प	-	प	-
दा	रा	ऽ	दा	ऽ	रा	ऽ	दा	ऽ	ऽ	दा	ऽ	रा	ऽ
म	-	प	ध	प	ध	प	म	-	-	ग	-	रे	-
दा	ऽ	दा	रा	दा	रा	दा	रा	ऽ	ऽ	दा	ऽ	रा	ऽ
म	म	-	म	-	म	-	ग	-	-	सा	-	रे	-
दा	रा	ऽ	दा	ऽ	रा	ऽ	दा	ऽ	ऽ	दा	ऽ	रा	ऽ

x			2				0			3			
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14
ऩि	ऩि	ऽ	सा	-	-	रे	रे	म	प	सां	-	सां	-
दा	रा	ऽ	दा	ऽ	ऽ	दा	रा	दा	रा	दा	ऽ	रा	ऽ
प	ध	-	म	-	म	-	ग	-	-	सा	-	रे	-
दा	रा	ऽ	दा	ऽ	रा	ऽ	दा	ऽ	ऽ	दा	ऽ	रा	ऽ

x			2				0			3			
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14
ऩि	ऩि	ऽ	सा	-	-	-	-	-	-				
दा	रा	ऽ	दा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ				
										दा	रा	दा	ऽ
म	-	-	ग	रे	ग	रे	सा	सा	-	ग	रे	ग	-
दा	ऽ	ऽ	दा	रा	दा	रा	दा	रा	ऽ	दा	रा	दा	ऽ
म	-	-	ग	रे	ग	रे	सा	सा	-	नि	-	-	-
दा	ऽ	ऽ	दा	रा	दा	रा	दा	रा	ऽ	दा	ऽ	ऽ	ऽ
प़	-	-	ऩि	-	-	ऩि	सा	-	-	ग	रे	ग	रे
दा	ऽ	ऽ	दा	ऽ	ऽ	दा	रा	ऽ	ऽ	दा	रा	दा	रा
ऩि	ऩि	ऽ	सा	-	-	-	-	-	-				
दा	रा	ऽ	रा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ				

स्वयं जांच अभ्यास 1

14.1 दीपचंदी ताल में कितनी मात्राएं होती हैं?

क) 14

ख) 12

ग) 16

घ) 8

14.2 लोक संगीत के अंतर्गत निम्न में से कौन आता है?

क) गायन, नृत्य

ख) गायन, वादन, नृत्य

ग) वादन, नृत्य

घ) गायन, वादन, नृत्य, शास्त्रीय संगीत

14.3 प्रस्तुत लोक गीत किस राज्य का लोक गीत है?

क) हिमाचल प्रदेश

ख) पंजाब

ग) हरियाणा

घ) जम्मू कश्मीर

14.4 सारांश

भगवान शिव के संबंधित यह एक लोकप्रिय तथा मधुर लोकगीत है जो चाचर ताल, 14 मात्रा की, में बजाया जाता है। इसकी लय मध्य है। इस लोकगीत को हिमाचल प्रदेश के पारंपरिक लोक वाद्यों के साथ बजाया जाता है

14.5 शब्दावली

- आंदे - आते हैं
- जातरू - तीर्थयात्री
- हरणा - हरण करने वाले
- लय: वादन/आायन में बीत रहे समय की समान गति को ‘लय’ कहा जाता है।
- द्रुत लय: वादन/गायन के अंतर्गत जब लय बहुत तेज गति मे चलती है तो उसे द्रुत लय कहते हैं।

14.6 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

स्वयं जांच अभ्यास 1

14.1 उत्तर: क)

14.2 उत्तर: ख)

14.3 उत्तर: क)

14.7 संदर्भ

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2008). तंत्रिका विज्ञान, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

14.8 अनुशंसित पठन

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2005). स्वर सरिता, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

झा, पं. रामाश्रय. (2040). अभिनव गीतांजलि (भाग 1-5), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2008). तंत्रिका विज्ञान, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

14.9 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. किसी एक लोक धुन की स्वरलिपि लिखिए।

प्रश्न 2. किसी एक लोक धुन को बजाकर सुनाइए।

इकाई-15
लोक गीत 'प्यारी भोटलिए' व 'कपडेयां धोंआ'

इकाई की रूपरेखा

क्रम	विवरण
15.1	भूमिका
15.2	उद्देश्य तथा परिणाम
15.3	लोक गीत 'प्यारी भोटलिए' व 'कपडेयां धोंआ'
15.3.1	लोक गीत 'प्यारी भोटलिए' का परिचय
15.3.2	लोक गीत 'प्यारी भोटलिए' के बोल
15.3.3	लोक गीत 'प्यारी भोटलिए' की स्वरलिपि
15.3.4	लोक गीत कपडेयां धोंआ' का परिचय
15.3.5	लोक गीत 'कपडेयां धोंआ' के बोल
15.3.6	लोक गीत 'कपडेयां धोंआ' की स्वरलिपि
	स्वयं जांच अभ्यास 1
15.4	सारांश
15.5	शब्दावली
15.6	स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
15.7	संदर्भ
15.8	अनुशंसित पठन
15.9	पाठगत प्रश्न

15.1 भूमिका

संगीत (वादन तथा वादन) में, स्नात्कोत्तर के क्रियात्मक पाठ्यक्रम की इस इकाई में लोक गीत को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति के माध्यम से विस्तार पूर्वक प्रस्तुत किया गया है। लोक संगीत साधारण शब्दों में वह संगीत है जो किसी विशेष स्थान से सम्बन्ध रखता है। हिमाचल प्रदेश में विभिन्न भाषाएं, बोलियाँ बोली जाती हैं। इन्हीं बोलियों में जो गीत प्रचलित होते हैं उन्हें लोक गीत कहते हैं। लोक संगीत मानव मन की भावनाओं का प्रतिनिधित्व करता है। लोक रूचि के अनुसार इसमें समय-समय पर सृजन-विघटन की प्रक्रिया चलती रहती है। लोक जीवन में लोक संगीत की अनवरत धारा आदिकाल से ही प्रवाह मान है। मनुष्य अपने आरंभिक समय से ही समुहों में जीवन यापन करता आ रहा है। इस समुह में किसी एक व्यक्ति द्धारा प्राकृतिक दृश्यों, सुन्दर वस्तुओं, और छवियों को गुन-गुना कर लोक संगीत का सृजन होता है अन्य लोगों द्धारा इस लोक संगीत को पुनरावृति की संज्ञा मिलती है फिर ये संगीत सामाजिक रूप से लोक संगीत का रूप प्राप्त करता है। लोक-संगीत समय और स्थान की सीमाओं को लाँघकर अनादि परंपराओ को वर्तमान में जीवित बनाये रखने में अपनी अहम भूमिका निभाता है। बदलते समय-प्रवाह से लोक-संगीत का स्वरूप अवश्य बदलता है। हिमाचल प्रदेश का जिला चम्बा देव-भूमि वाला जनपद है। यहां पर स्थानीय कलाकारों के द्वारा विभिन्न प्रकार के पारम्परिक लोक गीत गाये-बजाये जाते हैं। विशेष बात यह है कि इन लोक गीतों में नृत्य और वादन का अंग भी साथ देखा-सुना जा सकता है। चम्बा जनपद की गौरवमयी लोक संस्कृति को ऊँचा उठाने में चम्बयाली कलाकारों ने अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। आज भी इस क्षेत्र में चम्बयाली लोक संगीत अपनी चर्म सीमा पर विराजित है। इस क्षेत्र में विभिन्न अनुष्ठानों, विवाह, प्रणय (प्रेम) विरह, एतिहासिक वीर गाथाओं से सम्बन्धित, धार्मिक अनुष्ठानों से सम्बन्धित विभिन्न प्रकार के लोक गीत गाये-बजाये जाते हैं। यहां तक कि फसल बुआई व कटाई के समय के भी लोक गीत गाये जाते हैं। इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी 'प्यारी भोटलिए' व 'कपडेयां धोंआ' लोक गीतों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति में लिख सकने का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे, साथ ही क्रियात्मक रूप से गा सकेंगे।

15.2 उद्देश्य तथा परिणाम

सीखने के उद्देश्य

- 'प्यारी भोटलिए' व 'कपडेयां धोंआ' लोक गीत के स्वरूप की संक्षिप्त जानकारी प्रदान करना।

- 'प्यारी भोटलिए' व 'कपडेयां धोंआ' लोक गीत को भातखंडे स्वरलिपि में लिखने की क्षमता विकसित करना।
- 'प्यारी भोटलिए' व 'कपडेयां धोंआ' लोक गीत को गाने की क्षमता विकसित करना।
- छात्र को गायन के दौरान सुधार करने का प्रयास करने के लिए प्रोत्साहित करना।

सीखने के परिणाम

- विद्यार्थी लोक गीत के गायन के तकनीकी पहलुओं से अच्छी तरह परिचित हो जाएगा
- 'प्यारी भोटलिए' व 'कपडेयां धोंआ' लोक गीत को लिखने की निपुणता प्राप्त करने में सक्षम होंगे।
- 'प्यारी भोटलिए' व 'कपडेयां धोंआ' लोक गीत को बजाने/गाने में सक्षम होंगे।
- लोक गीत के विभिन्न रचनात्मक पहलुओं को मंच पर प्रदर्शित करने की क्षमता विकसित होगी और अनुभव भी प्राप्त होगा।

15.3 'कपडेयां धोंआ' लोक गीत

15.3.1 लोक गीत 'कपडेयां धोंआ' का परिचय

प्रस्तुत लोकगीत हिमाचल प्रदेश के चंबा का एक प्रसिद्ध लोक गीत है। इस गीत में नायक-नायिका के विरह की गाथा का वर्णन किया गया है। नायिका अपने नायक के कपड़े धोती हुई बटण को देख कर रोती है। नायक कहता है कि तुम बटण की चिन्ता मत करना चम्बे में चाँदी बहुत है। नायक कहता है कि तेरे साथ मिलना है पर तुम्हारी निशानी क्या है। नायिका उत्तर में पीपल का पेड़ निशानी बताती है। इस पर नायिका चिन्ता व्यक्त करती है और कहती है कि रात को मिलने मत आना दुश्मनों ने बन्दूकें रखी है। नायक कहता है कि चंचलों दुश्मनों का गम मत करना मेरी बाजुओं में बड़ा जोर है। नायक व्यंग्यात्मक ढंग से कहता है कि लोग काली-काली कहते है लेकिन तू मरूये (एक प्रकार का फूल का पेड़) की डाली है। इस गीत के स्वर राग भीम पलासी की ओर संकेत करते हैं। यह राग काफी थाट जन्य राग है। इस गीत में ताल दीपचन्दी (चाचर) का प्रयोग, मध्य लय के साथ प्रयुक्त हुआ है।

15.3.2 लोक गीत 'कपडेयां धोंआ' के बोल

कपडेयां धोंआ छम-छम रोआं कुन्जुआ

बिच बटण निशानी हो मेरिये जिन्दे

बटणा रा गम न तू करयां चंचलों

चम्बे चाँदी बतेरी हो.....

तिजो कने मिलणा जरूरी चंचलो

तेरी क्या वो निशाणी हो.....

चम्बे रे चौगाने मेरा डेरा कुन्जुआ

बुटा पीपल़ निशानी हो

राती-ओ-बराती मत ओंदा कुन्जुआ

बैरि भरियां बन्दूकां हो मेरीये जिन्दे

बैरियां दा गम मत करैं चंचलो

बाईं जोर बतेरा हो मेरिये जिन्दे.....

लोक ता गलादें काली-काली चंचलो

तू ता मरुये दी डाली हो मेरिये जिन्दे.....।

कपडेयां धोंआ छम-छम रोआं कुन्जुआ

बिच बटण निशानी हो मेरिये जिन्दे

15.3.3 लोक गीत 'कपडेयां धोंआ' की स्वरलिपि

ताल: दीपचंदी **लय: मध्य**

स्थाई

X			2				0			3			
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14
सा	सा	सारे	गरे	सऩी	ऩी	ऩी	सग	मप	पम	म	पम	ग	सा
क	प	डेऽ	यां	धोआं	छम	ऽऽ	रोआं	कुंऽ	जुऽ	आ	ऽऽ	ऽ	ऽ
प	पम	गस	ग	ग	मप	मग	मग	ग	ग	सग	मप	पम	म
बि	चऽ	बट	ण	नि	शाऽ	निऽ	ऽऽ	हो	ऽ	मेरि	येऽ	जिंऽ	दे
प	पम	गस	ग	ग	मप	मग	म	ग	ग	ग	ग	ग	सा
बि	चऽ	बट	ण	नि	शाऽ	निऽ	ऽऽ	हो	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
सा	सा	सारे	गरे	सऩी	ऩी	ऩी	सग	मप	पम	म	पम	ग	सा
क	प	डेऽ	यां	धोआं	छम	ऽऽ	रोआं	कुंऽ	जुऽ	आ	ऽऽ	ऽ	ऽ
प	पम	गस	ग	ग	मप	मग	मग	ग	ग	सग	मप	पम	म

बि	चऽ	बट	ण	नि	शाऽ	निऽ	ऽऽ	हो	ऽ	मेरि	येऽ	जिंऽ	दे
प	पम	गस	ग	ग	मप	मग	म	ग	ग	ग	ग	ग	सा
बि	चऽ	बट	ण	नि	शाऽ	निऽ	ऽऽ	हो	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ

अन्तरा

X			2				0			3			
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14
नि	नि	नि	नि	ध	सनी	धप	प	म	प	ग	प	म	म
ब	ट	णा	रा	ग	मऽ	नऽ	तू	क	रेयां	चं	च	लो	ऽ
प	पम	गस	ग	ग	मप	मग	मग	ग	ग	मग	मग	पम	म
च	म्बे	चांऽ	दी	ब	थेऽ	राऽ	ऽऽ	हो	ऽ	मेरि	येऽ	जिंऽ	दे
प़	पम	गस	ग	ग	मप	मग	मग	ग	ग	ग	ग	ग	सा
च	म्बे	चाँऽ	दी	ब	बेऽ	वाऽ	ऽऽ	हो	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ

सा	सा	सारे	गरे	सऩी	ऩी	ऩी	सग	मप	पम	म	पम	ग	सा
क	प	डेऽ	यां	धोआं	छम	ऽऽ	रोआं	कुंऽ	जुऽ	आ	ऽऽ	ऽ	ऽ
प	पम	गस	ग	ग	मप	मग	मग	ग	ग	सग	मप	पम	म
बि	चऽ	बट	ण	नि	शाऽ	निऽ	ऽऽ	हो	ऽ	मेरि	येऽ	जिंऽ	दे
प	पम	गस	ग	ग	मप	मग	म	ग	ग	ग	ग	ग	सा
बि	चऽ	बट	ण	नि	शाऽ	निऽ	ऽऽ	हो	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ

शेष अंतरे भी इसी धुन में गाए जाएँगें।

15.3.4 लोक गीत 'प्यारी भोटलिए' का परिचय

प्रस्तुत लोकगीत हिमाचल प्रदेश के चंबा का एक प्रसिद्ध लोक गीत है। प्रस्तुत प्रणय लोक गीत में प्रेमी व प्रेयसी की वार्ता का वर्णन दिया है। नायक भोटली नामक प्रेयसी से कहता है कि तेरे बिना ये (मुलख) दुनियाँ कुछ भी नहीं है। इस पर भोटली अपने रघु नामक नायक से कहती है कि तू परदेश चला जाएगा। फिर रघु नामक नायक से पहाड़ पर बंगला बनाने की बात कही है। उत्तर में रघु बंगले को शीशे लगाने की बात करता है। नायिका कहती है कि मैं नंगे पैर पहाड़ कैसे चढ़ूं। रघु कहता है कि मैं तुझे नई चप्पल ले दूंगा। अंत में नायिका कहती है कि मैंने तेरे (रघु) प्यार में अपने माता-पिता भी छोड़ दिये है। रघु नायक कहता है कि तेरे बिना यह दुनियाँ कुछ भी नहीं है। इस गीत में चौदह मात्रा की दीपचन्दी ताल (चाचर) का प्रयोग हुआ है। इसमें मध्य लय प्रयुक्त हुई है।

15.3.5 लोक गीत 'प्यारी भोटलिए' के बोल

प्यारी भोटलिए तुद बिन मुलख नमाणा हो

रघु गाडा हो चली जाणा दूर परदेशा हो

प्यारी भोटलिए . . . . .

रघु गाडा हो जोता पुर बंगलु पुआणा हो

प्यारी भोटलिए बंगलु जो शीशे लुआणे हो

रघु गाडा हो नंगे पैरे जोत कियां लाणा

प्यारी भोटलिए तिजो नोई चपली लेई देला हो

रघु गाडा हो तेरे पीछे छडे अम्मा बापु हो

प्यारी भोटलिए तुद बिन मुलख नमाणा हो।

15.3.6 लोक गीत 'प्यारी भोटलिए' की स्वरलिपि

ताल: दीपचन्दी **लय: मध्य**

X			2				0			3			
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14
												ग	गरे
												प्या	ऽरी
सध़	ध	रे	रे	स	ग	रेग	गग	रे	गरे	सेध़	सरे	गे	रेग
भोऽ	ट	लि	ये	ऽ	ऽ	ऽऽ	तुद	वि	नऽ	मुल	सू	न	माऽ
रे	स	रे											
बाऽ	हो	ऽ											
												ग	गरे
												प्या	ऽरी
सध़	ध	रे	रे	स	ग	रेग	गग	रे	गरे	सेध़	सरे	गे	रेग
भोऽ	ट	लि	ये	ऽ	ऽ	ऽऽ	तुद	वि	नऽ	मुल	सू	न	माऽ
रे	स	रे											
बाऽ	हो	ऽ											

अन्तरा

X			2				0			3			
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14
प	पम	ग	ग	ग	मे	प	रे	रे	ग	रे	ग	रे	-
र	घुऽ	गा	ऽ	डा	ऽ	हो	चलि	वो	जाऽ	णाऽ	प	र	देऽ
गरे	सा	सा											
साऽ	हो	ऽ											
प	पम	ग	ग	ग	मे	प	रे	रे	ग	रे	ग	रे	-
र	घुऽ	गा	ऽ	डा	ऽ	हो	चलि	वो	जाऽ	णाऽ	प	र	देऽ
गरे	सा	सा											
साऽ	हो	ऽ											
												ग	गरे
												प्या	ऽरी
सध़	ध	रे	रे	स	ग	रेग	गग	रे	गरे	सेध़	सरे	गे	रेग
भोऽ	ट	लि	ये	ऽ	ऽ	ऽऽ	तुद	वि	नऽ	मुल	सू	न	माऽ
रे	स	रे											
बाऽ	हो	ऽ											

शेष अन्तरे इसी धुन में गाए जाएंगे।

स्वयं जांच अभ्यास 1

15.1 दीपचंदी ताल में कितनी मात्राएं होती हैं?

क) 14

ख) 12

ग) 6

घ) 10

15.2 लोक संगीत के अंतर्गत निम्न में से कौन आता है?

क) गायन, नृत्य

ख) गायन, वादन, नृत्य

ग) वादन, नृत्य

घ) गायन, वादन, नृत्य, शास्त्रीय संगीत

15.3 'कपडेयां धोंआ' लोक गीत किस राज्य का लोक गीत है?

क) हरियाणा

ख) पंजाब

ग) हिमाचल प्रदेश

घ) जम्मू कश्मीर

15.4 'प्यारी भोटलिए' लोक गीत किस देवता से संबंधित है?

क) राम

ख) कृष्ण

ग) सीता

घ) किसी से नहीं

15.5 'कपडेयां धोंआ' लोक गीत किस रस का गीत है?

क) करूण

ख) शांत

ग) चंचल

घ) वीर

15.6 'कपडेयां धोंआ' लोक गीत किस राग पर आधारित प्रतीत होता है।

क) यमन

ख) भीमपलासी

ग) पहाड़ी

घ) काफी

15.4 सारांश

'कपडेयां धोंआ' लोकगीत हिमाचल प्रदेश के चंबा का एक प्रसिद्ध लोक गीत है। इस गीत में नायक-नायिका के विरह की गाथा का वर्णन किया गया है। इस गीत के स्वर राग भीमपलासी के हैं। इस गीत में ताल दीपचन्दी (चाचर) का प्रयोग, मध्य लय के साथ प्रयुक्त हुआ है। 'प्यारी भोटलिए' प्रणय लोक गीत में प्रेमी व प्रेयसी की वार्ता का वर्णन दिया है। नायक भोटली नामक प्रेयसी से कहता है कि तेरे बिना ये (मुलख) दुनियाँ कुछ भी नहीं है। इस पर भोटली अपने रघु नामक नायक से कहती है कि तू परदेश चला जाएगा। इस गीत में चौदह मात्रा की दीपचन्दी ताल (चाचर) का प्रयोग हुआ है। इसमें मध्य लय प्रयुक्त हुई है। आज बदलते परिवेश में संगीत जगत में आधुनिक संगीत का प्रवेश बड़ी तेजी से हुआ है, बाबजूद इसके चम्बा का पारम्परिक संगीत ज्यों का त्यों अपनी प्राचीन प्रकाष्ठा के साथ बना हुआ है। आज भी इस क्षेत्र में चम्बयाली लोक संगीत अपनी चर्म सीमा पर विराजित है। इस क्षेत्र में विभिन्न अनुष्ठानों, विवाह, प्रणय (प्रेम) विरह, एतिहासिक वीर गाथाओं से सम्बन्धित, धार्मिक अनुष्ठानों से सम्बन्धित विभिन्न प्रकार के लोक गीत गाये-बजाये जाते हैं। यहां तक कि फसल बुआई व कटाई के समय के भी लोक गीत गाये जाते हैं। इस लोकगीतों को पारंपरिक लोक वाद्यों ढोल, नगाड़ा आदि के साथ गाया बजाया जाता है।

15.5 शब्दावली

- कुन्जुआ - कुंजू (नायक का नाम)
- चंचलो - नायिका का नाम
- बिच - बीच में
- बटण - बटन
- करयां - करना
- कने - कैसे

- चौगाने - चंबा के प्रसिद्ध मैदान का नाम
- भोटली - नायिका का नाम
- मुलख - दुनियाँ
- लय: वादन/गायन में बीत रहे समय की समान गति को 'लय' कहा जाता है।
- द्रुत लय: वादन/गायन के अंतर्गत जब लय बहुत तेज गति मे चलती है तो उसे द्रुत लय कहते हैं।

15.6 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

स्वयं जांच अभ्यास 1

15.1 उत्तर:क)

15.2 उत्तर:ख)

15.3 उत्तर:ग)

15.4 उत्तर:घ)

15.5 उत्तर:क)

15.6 उत्तर:ख)

15.7 संदर्भ

सुभाष सिंह, गागल, भरमौर, चम्बा से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त।

डॉ. विनय कुमार, चम्बा से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त।

अजीत भट्ट, धड़ोग, चम्बा से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2009). तंत्रिका विज्ञान, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

15.8 अनुशंसित पठन

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2005). स्वर सरिता, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2008). तंत्रिका विज्ञान, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

15.9 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. किसी एक लोकगीत की स्वरलिपि लिखिए।

प्रश्न 2. किसी एक लोक गीत को गाकर सुनाइए।

प्रश्न 3. किसी एक लोक गीत की लोक धुन को बजाकर सुनाइए।

प्रश्न 4. किसी एक लोक गीत की लोकधुन की स्वरलिपि लिखिए।

इकाई-16
लोक धुन 'कुंजु' तथा 'भोटलिए'

इकाई की रूपरेखा

क्रम	विवरण
16.1	भूमिका
16.2	उद्देश्य तथा परिणाम
16.3	लोक धुन 'कुंजु' तथा 'भोटलिए'
16.3.1	लोक गीत 'भोटलिए' का परिचय
16.3.2	लोक धुन 'भोटलिए' की स्वरलिपि
16.3.3	लोक गीत 'कुंजु' का परिचय
16.3.4	लोक धुन 'कुंजु' की स्वरलिपि
	स्वयं जांच अभ्यास 1
16.4	सारांश
16.5	शब्दावली
16.6	स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
16.7	संदर्भ
16.8	अनुशंसित पठन
16.9	पाठगत प्रश्न

16.1 भूमिका

संगीत (वादन तथा वादन) में, स्नात्कोत्तर के क्रियात्मक पाठ्यक्रम की इस इकाई में लोक धुन को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति के माध्यम से विस्तार पूर्वक प्रस्तुत किया गया है। लोक संगीत साधारण शब्दों में वह संगीत है जो किसी विशेष स्थान से सम्बन्ध रखता है। हिमाचल प्रदेश में विभिन्न भाषाएं, बोलियाँ बोली जाती हैं। इन्हीं बोलियों में जो गीत प्रचलित होते हैं उन्हें लोक गीत कहते हैं। लोक संगीत मानव मन की भावनाओं का प्रतिनिधित्व करता है। लोक रूचि के अनुसार इसमें समय-समय पर सृजन-विघटन की प्रक्रिया चलती रहती है। लोक जीवन में लोक संगीत की अनवरत धारा आदिकाल से ही प्रवाह मान है। मनुष्य अपने आरंभिक समय से ही समुहों में जीवन यापन करता आ रहा है। इस समुह में किसी एक व्यक्ति द्धारा प्राकृतिक दृश्यों, सुन्दर वस्तुओं, और छवियों को गुन-गुना कर लोक संगीत का सृजन होता है अन्य लोगों द्धारा इस लोक संगीत को पुनरावृति की संज्ञा मिलती है फिर ये संगीत सामाजिक रूप से लोक संगीत का रूप प्राप्त करता है। लोक-संगीत समय और स्थान की सीमाओं को लाँघकर अनादि परंपराओ को वर्तमान में जीवित बनाये रखने में अपनी अहम भूमिका निभाता है। बदलते समय-प्रवाह से लोक-संगीत का स्वरूप अवश्य बदलता है। हिमाचल प्रदेश का जिला चम्बा देव-भूमि वाला जनपद है। यहां पर स्थानीय कलाकारों के द्वारा विभिन्न प्रकार के पारम्परिक लोक गीत गाये-बजाये जाते हैं। विशेष बात यह है कि इन लोक गीतों में नृत्य और वादन का अंग भी साथ देखा-सुना जा सकता है। आज भी इस क्षेत्र में चम्बयाली लोक संगीत अपनी चर्म सीमा पर विराजित है। इस क्षेत्र में विभिन्न अनुष्ठानों, विवाह, प्रणय (प्रेम) विरह, एतिहासिक वीर गाथाओं से सम्बन्धित, धार्मिक अनुष्ठानों से सम्बन्धित विभिन्न प्रकार के लोक गीत गाये-बजाये जाते हैं। यहां तक कि फसल बुआई व कटाई के समय के भी लोक गीत गाये जाते हैं। इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी 'भोटलिए' व 'कुंजु' लोक धुनों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति में लिख सकने का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे, साथ ही क्रियात्मक रूप से बजा सकेंगे।

16.2 उद्देश्य तथा परिणाम

सीखने के उद्देश्य

- 'भोटलिए' व 'कुंजु' लोक धुन के स्वरूप की संक्षिप्त जानकारी प्रदान करना।
- 'भोटलिए' व 'कुंजु' लोक धुन को भातखंडे स्वरलिपि में लिखने की क्षमता विकसित करना।

- ‘भोटलिए’ व ‘कुंजु’ लोक धुन को बजाने की क्षमता विकसित करना।
- छात्र को वादन के दौरान सुधार करने का प्रयास करने के लिए प्रोत्साहित करना।

सीखने के परिणाम

- विद्यार्थी /लोक धुन के वादन के तकनीकी पहलुओं से अच्छी तरह परिचित हो जाएगा
- ‘भोटलिए’ व ‘कुंजु’ लोक धुन को लिखने की निपुणता प्राप्त करने में सक्षम होंगे।
- ‘भोटलिए’ व ‘कुंजु’ लोक धुन को बजाने में सक्षम होंगे।
- लोक धुन के विभिन्न रचनात्मक पहलुओं को मंच पर प्रदर्शित करने की क्षमता विकसित होगी और अनुभव भी प्राप्त होगा।

16.3 ‘भोटलिए’ व ‘कुंजु’ लोक धुन

16.3.1 लोक गीत ‘कुंजु’ का परिचय

प्रस्तुत लोकगीत हिमाचल प्रदेश के चंबा का एक प्रसिद्ध लोक गीत है। इस गीत में नायक-नायिका के विरह की गाथा का वर्णन किया गया है। नायिका अपने नायक के कपड़े धोती हुई बटण को देख कर रोती है। नायक कहता है कि तुम बटण की चिन्ता मत करना चम्बे में चाँदी बहुत है। नायक कहता है कि तेरे साथ मिलना है पर तुम्हारी निशानी क्या है। नायिका उत्तर में पीपल का पेड़ निशानी बताती है। इस पर नायिका चिन्ता व्यक्त करती है और कहती है कि रात को मिलने मत आना दुश्मनों ने बन्दूकें रखी है। नायक कहता है कि चंचलों दुश्मनों का गम मत करना मेरी बाज़ुओं में बड़ा जोर है। नायक व्यंग्यात्मक ढंग से कहता है कि लोग काली-काली कहते है लेकिन तू मरूये (एक प्रकार का फूल का पेड़) की डाली है। इस गीत के स्वर राग भीम पलासी की ओर संकेत करते हैं। यह राग काफी थाट जन्य राग है। इस गीत में ताल दीपचन्दी (चाचर) का प्रयोग, मध्य लय के साथ प्रयुक्त हुआ है।

16.3.2 लोक गीत ‘कुंजु’ के बोल

कपडेयां धोंआ छम-छम रोआं कुन्जुआ

बिच बटण निशानी हो मेरिये जिन्दे

बटणा रा गम न तू करयां चंचलों

चम्बे चाँदी बतेरी हो.....

तिजो कने मिलणा जरूरी चंचलो

तेरी क्या वो निशाणी हो.....

चम्बे रे चौगाने मेरा डेरा कुन्जुआ

बुटा पीपल़ निशानी हो

राती-ओ-बराती मत ओंदा कुन्जुआ

बैरि भरियां बन्दूकां हो मेरीये जिन्दे

बैरियां दा गम मत करैं चंचलो

बाईं जोर बतेरा हो मेरिये जिन्दे.....

लोक ता गलादें काली-काली चंचलो

तू ता मरुये दी डाली हो मेरिये जिन्दे.....।

16.3.3 लोक धुन 'कुंजु' की स्वरलिपि

ताल: दीपचंदी **लय: मध्य**

स्थाई

X			2				0			3			
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14
सा	सा	सारे	गरे	सऩी	ऩी	ऩी	सग	मप	पम	म	पम	ग	सा
दा	रा	दिर	दिर	दिर	दा	रा	दिर	दिर	दिर	दा	दिर	दा	रा
प	पम	गस	ग	ग	मप	मग	मग	ग	ग	सग	मप	पम	म
दा	दिर	दिर	दा	रा	दिर	दिर	दिर	दा	रा	दिर	दिर	दिर	दा
प	पम	गस	ग	ग	मप	मग	म	ग	ग	ग	ग	ग	सा
दा	दिर	दिर	दा	रा	दिर	दिर	दा	रा	दा	रा	दा	रा	दा
सा	सा	सारे	गरे	सऩी	ऩी	ऩी	सग	मप	पम	म	पम	ग	सा
दा	रा	दिर	दिर	दिर	दा	रा	दिर	दिर	दिर	दा	दिर	दा	रा
प	पम	गस	ग	ग	मप	मग	मग	ग	ग	सग	मप	पम	म
दा	दिर	दिर	दा	रा	दिर	दिर	दिर	दा	रा	दिर	दिर	दिर	दा
प	पम	गस	ग	ग	मप	मग	म	ग	ग	ग	ग	ग	सा
दा	दिर	दिर	दा	रा	दिर	दिर	दा	रा	दा	रा	दा	रा	दा

अन्तरा

X			2				0			3			
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14
नि	नि	नि	नि	ध	सनी	धप	प	म	प	ग	प	म	म
दा	रा	दा	रा	दा	दिर	दिर	दा	रा	दा	रा	दा	रा	दा
प	पम	गस	ग	ग	मप	मग	मग	ग	ग	मग	मग	पम	म
दा	दिर	दिर	दा	रा	दिर	दिर	दिर	दा	रा	दिर	दिर	दिर	दा
प़	पम	गस	ग	ग	मप	मग	मग	ग	ग	ग	ग	ग	सा
दा	दिर	दिर	दा	रा	दिर	दिर	दिर	दा	रा	दा	रा	दा	रा
सा	सा	सारे	गरे	सऩी	ऩी	ऩी	सग	मप	पम	म	पम	ग	सा
दा	रा	दिर	दिर	दिर	दा	रा	दिर	दिर	दिर	दा	दिर	दा	रा
प	पम	गस	ग	ग	मप	मग	मग	ग	ग	सग	मप	पम	म
दा	दिर	दिर	दा	रा	दिर	दिर	दिर	दा	रा	दिर	दिर	दिर	दा
प	पम	गस	ग	ग	मप	मग	म	ग	ग	ग	ग	ग	सा
दा	दिर	दिर	दा	रा	दिर	दिर	दा	रा	दा	रा	दा	रा	दा

शेष अंतरे भी इसी धुन में बजाए जाएँगें।

16.3.4 लोक गीत 'भोटलिए' का परिचय

प्रस्तुत लोकगीत हिमाचल प्रदेश के चंबा का एक प्रसिद्ध लोक गीत है। प्रस्तुत प्रणय लोक गीत में प्रेमी व प्रेयसी की वार्ता का वर्णन दिया है। नायक भोटली नामक प्रेयसी से कहता है कि तेरे बिना ये (मुलख) दुनियाँ कुछ भी नहीं है। इस पर भोटली अपने रघु नामक नायक से कहती है कि तू परदेश चला जाएगा। फिर रघु नामक नायक से पहाड़ पर बंगला बनाने की बात कही है। उत्तर में रघु बंगले को शीशे लगाने की बात करता है। नायिका कहती है कि मैं नंगे पैर पहाड़ कैसे चढ़ूं। रघु कहता है कि मैं तुझे नई चप्पल ले दूंगा। अंत में नायिका कहती है कि मैंने तेरे (रघु) प्यार में अपने माता-पिता भी छोड़ दिये है। रघु नायक कहता है कि तेरे बिना यह दुनियाँ कुछ भी नहीं है। इस गीत में चौदह मात्रा की दीपचन्दी ताल (चाचर) का प्रयोग हुआ है। इसमें मध्य लय प्रयुक्त हुई है।

16.3.5 लोक गीत 'भोटलिए' के बोल

प्यारी भोटलिए तुद बिन मुलख नमाणा हो

रघु गाडा हो चली जाणा दूर परदेशा हो

प्यारी भोटलिए . . . . .

रघु गाडा हो जोता पुर बंगलु पुआणा हो

प्यारी भोटलिए बंगलु जो शीशे लुआणे हो

रघु गाडा हो नंगे पैरे जोत कियां लाणा

प्यारी भोटलिए तिजो नोई चपली लेई देला हो

रघु गाडा हो तेरे पीछे छडे अम्मा बापु हो

प्यारी भोटलिए तुद बिन मुलख नमाणा हो।

16.3.6 लोक धुन 'भोटलिए' की स्वरलिपि

ताल: दीपचन्दी **लय: मध्य**

वाद्य: सितार

X			2				0			3			
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14
												ग	गरे
												दा	दिर
सध़्र	ध	रे	रे	स	ग	रेग	गग	रे	गरे	साध़्र	सरे	गे	रेग
दिर	दा	रा	दा	रा	दा	दिर	दिर	दा	दिर	दिर	दिर	दा	दिर
रे	स	रे											
दा	रा	दा											
												ग	गरे
												दा	दिर
सध़्र	ध	रे	रे	स	ग	रेग	गग	रे	गरे	सेध़्र	सरे	गे	रेग
दिर	दा	रा	दा	रा	दा	दिर	दिर	दा	दिर	दिर	दिर	दा	दिर
रे	स	रे											
दा	रा	दा											

अंतरा

X			2				0			3			
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14
प	पम	ग	ग	ग	मे	प	रे	रे	ग	रे	ग	रे	-
दा	दिर	दा	रा	दा	रा	दा	रा	दा	रा	दा	रा	दा	ऽ
गरे	सा	सा											
दिर	दा	रा											
												ग	गरे
												दा	दिर
सध़	ध	रे	रे	स	ग	रेग	गग	रे	गरे	साध़	सरे	गे	रेग
दिर	दा	रा	दा	रा	दा	दिर	दिर	दा	दिर	दिर	दिर	दा	दिर
रे	स	रे											
दा	रा	दा											

शेष अन्तरे इसी धुन में बजाए जाएंगे।

स्वयं जांच अभ्यास 1

16.1 दीपचंदी ताल में कितनी मात्राएं होती हैं?

क) 14

ख) 12

ग) 6

घ) 10

16.2 लोक संगीत के अंतर्गत निम्न में से कौन आता है?

क) गायन, नृत्य

ख) गायन, वादन, नृत्य

ग) वादन, नृत्य

घ) गायन, वादन, नृत्य, शास्त्रीय संगीत

16.3 'कुंजु' लोक गीत किस राज्य का लोक गीत है?

क) हरियाणा

ख) पंजाब

ग) हिमाचल प्रदेश

घ) जम्मू कश्मीर

16.4 'भोटलिए' लोक गीत किस देवता से संबंधित है?

क) राम

ख) कृष्ण

ग) सीता

घ) किसी से नहीं

16.5 'कुंजु' लोक गीत किस रस का गीत है?

क) करूण

ख) शांत

ग) चंचल

घ) वीर

16.6 'कुंजु' लोक गीत किस राग पर आधारित प्रतीत होता है।

क) यमन

ख) भीमपलासी

ग) पहाड़ी

घ) काफी

16.4 सारांश

'कुंजु' लोकगीत हिमाचल प्रदेश के चंबा का एक प्रसिद्ध लोक गीत है। इस गीत में नायक-नायिका के विरह की गाथा का वर्णन किया गया है। इस गीत के स्वर राग भीमपलासी के हैं। इस गीत में ताल दीपचन्दी (चाचर) का प्रयोग, मध्य लय के साथ प्रयुक्त हुआ है। 'भोटलिए' प्रणय लोक गीत में प्रेमी व प्रेयसी की वार्ता का वर्णन दिया है। नायक भोटली नामक प्रेयसी से कहता है कि तेरे बिना ये (मुलख) दुनियाँ कुछ भी नहीं है। इस पर भोटली अपने रघु नामक नायक से कहती है कि तू परदेश चला जाएगा। इस गीत में चौदह मात्रा की दीपचन्दी ताल (चाचर) का प्रयोग हुआ है। इसमें मध्य लय प्रयुक्त हुई है। आज बदलते परिवेश में संगीत जगत में आधुनिक संगीत का प्रवेश बड़ी तेजी से हुआ है, बाबजूद इसके चम्बा का पारम्परिक संगीत ज्यों का त्यों अपनी प्राचीन प्रकाष्ठा के साथ बना हुआ है। आज भी इस क्षेत्र में चम्बयाली लोक संगीत अपनी चर्म सीमा पर विराजित है। इस क्षेत्र में विभिन्न अनुष्ठानों, विवाह, प्रणय (प्रेम) विरह, एतिहासिक वीर गाथाओं से सम्बन्धित, धार्मिक अनुष्ठानों से सम्बन्धित विभिन्न प्रकार के लोक गीत गाये-बजाये जाते हैं। यहां तक कि फसल बुआई व कटाई के समय के भी लोक गीत गाये जाते हैं। इस लोकगीतों को पारंपरिक लोक वाद्यों ढोल, नगाड़ा आदि के साथ गाया बजाया जाता है।

16.5 शब्दावली

- कुन्जुआ - कुंजू (नायक का नाम)
- चंचलो - नायिका का नाम
- बिच - बीच में
- बटण - बटन
- करयां - करना
- कने - कैसे

- चौगाने - चंबा के प्रसिद्ध मैदान का नाम
- भोटली - नायिका का नाम
- मुलख - दुनियाँ
- लय: वादन/गायन में बीत रहे समय की समान गति को 'लय' कहा जाता है।
- द्रुत लय: वादन/गायन के अंतर्गत जब लय बहुत तेज गति मे चलती है तो उसे द्रुत लय कहते हैं।

16.6 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

स्वयं जांच अभ्यास 1

16.1 उत्तर:क)

16.2 उत्तर:ख)

16.3 उत्तर:ग)

16.4 उत्तर:घ)

16.5 उत्तर:क)

16.6 उत्तर:ख)

16.7 संदर्भ

सुभाष सिंह, गागल, भरमौर, चम्बा से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त।

डॉ. विनय कुमार, चम्बा से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त।

अजीत भट्ट, धड़ोग, चम्बा से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2009). तंत्रिका विज्ञान, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

16.8 अनुशंसित पठन

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2005). स्वर सरिता, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2008). तंत्रिका विज्ञान, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

16.9 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. किसी एक लोकगीत की स्वरलिपि लिखिए।

प्रश्न 2. किसी एक लोक गीत को गाकर सुनाइए।

प्रश्न 3. किसी एक लोक धुन को बजाकर सुनाइए।

प्रश्न 4. किसी एक लोकधुन की स्वरलिपि लिखिए।

महत्वपूर्ण प्रश्न - कार्यभार

प्रश्न 1. राग पूरिया कल्याण का परिचय तथा आलाप लिखिए। (गायन तथा वादन के लिए)

प्रश्न 2. राग पूरिया कल्याण में विलम्बित ख्याल तथा द्रुत ख्याल को तानों सहित लिखिए। (गायन के लिए)

प्रश्न 3. राग पूरिया कल्याण में विलम्बित गत तथा द्रुत गत को तोड़ों सहित लिखिए। (वादन के लिए)

प्रश्न 4. राग अहीर भैरव का परिचय तथा आलाप लिखिए। (गायन तथा वादन के लिए)

प्रश्न 5. राग अहीर भैरव में विलम्बित ख्याल तथा द्रुत ख्याल को तानों सहित लिखिए। (गायन के लिए)

प्रश्न 6. राग अहीर भैरव में विलम्बित गत तथा द्रुत गत को तोड़ों सहित लिखिए। (वादन के लिए)

प्रश्न 7. राग भीमपलासी का परिचय तथा आलाप लिखिए। (गायन तथा वादन के लिए)

प्रश्न 8. राग भीमपलासी में विलम्बित ख्याल तथा द्रुत ख्याल को तानों सहित लिखिए। (गायन के लिए)

प्रश्न 9. राग भीमपलासी में विलम्बित गत तथा द्रुत गत को तोड़ों सहित लिखिए। (वादन के लिए)

प्रश्न 10. किसी एक लोक गीत की स्वरलिपि लिखिए। (गायन के लिए)

प्रश्न 11. किसी एक लोक धुन की स्वरलिपि लिखिए। (वादन के लिए)